।।श्री राधासर्वेश्वरो विजयते।।  ।।श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः।।

शोधपूर्ण धार्मिक मासिक पत्र 'श्रीसर्वेश्वर' का विशेषाङ्क

व्रजविहार - अंक

(श्री नारायणस्वामीजी की वाणी)

सखियों से संसेवित नित्यनिकुञ्जबिहारी श्रीश्यामाश्याम

सम्पादक :
जयकिशोरशरण

प्रकाशक :
श्री 'श्रीजी' की बड़ी कुञ्ज
रेतिया बाजार, श्रीधाम वृन्दावन (मथुरा)

व्यवस्थापक :
गोवर्धनशरण

।। श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ।।



• श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः •

शोधपूर्ण धार्मिक मासिक पत्र 'श्रीसर्वेश्वर' का विशेषाङ्क—

व्रजविहार-अंक

(श्रीनारायणस्वामीजी की वाणी)



सम्पादक :

जयकिशोरशरण

प्रकाशक :

श्री 'श्रीजी' की बड़ी कुञ्ज

रेतिया बाजार, श्रीवृन्दावन

प्रेरक :
अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज
अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद (राज०)

❀

प्रकाशक :
गोवर्धनशरण
प्रबन्धक **श्री 'श्रीजी' की बड़ी कुञ्ज**
रेतिया बाजार, वृन्दावन (मथुरा)

❀

प्रकाशन तिथि :
श्रीनिम्बार्क जयन्ती, वि. सं. २०७१
७ नवम्बर, २०१४

❀

द्वितीय संस्करण :
१००० प्रतियाँ

❀

न्यौछावर :
७५ रुपया मात्र

❀

पुस्तक प्राप्तिस्थान :
श्री 'श्रीजी' की बड़ी कुञ्ज
रेतिया बाजार, वृन्दावन

❀

मुद्रक :
श्रीराम बेरीवाला
श्रीसर्वेश्वर प्रेस
श्री 'श्रीजी' की बड़ी कुञ्ज
रेतिया बाजार, श्रीधाम वृन्दावन

सम्पादकीय

धनि वृन्दावन धाम है, धनि वृन्दावन नाम ।
धनि वृन्दावन रसिकजन, सुमिरे राधेश्याम ॥

(श्रीनारायणस्वामी)

आकाश में पक्षी स्वच्छंद विचरण जब तक करता है, तब तक कि वह बाज के ससर्ग से दूर है । ऐसे ही यह मानवरूपी पक्षी जगत् में जब तक भ्रमण करता रहेगा, तब तक कि वह प्रेमरूपी बाज के वशीभूत न हो जाय । श्रीसर्वेश्वर प्रभु के प्रेम-पाश में आबद्ध होते ही प्राणी के सकल भ्रम-भ्रमण त्वरित समाप्त हो जाते हैं । श्रीहरि-सत्गुरु कृपा से जिस महाभागी को प्रेम-रस-महोदधि श्रीव्रज-वृन्दावन धाम एवं धामी श्रीश्यामाश्याम के दिव्य प्रेम-रस का स्वल्प-सा भी आस्वादन हो गया, उसी क्षण वह कृत-कृत्य हो जाता है । उसका अहं भाव समाप्त हो जाता है और वह प्राणी श्रीप्रियालाल का परम प्रेमी बन जाता है । ऐसे ही श्रीराधाकृष्ण के परम प्रेम-रसप्रवाह में प्रवाहित होने वाले रसिक अनन्य श्रीनारायणस्वामीजी थे । आपने योग-ध्यान, नाम-रूप मिथ्या, निर्गुण-निराकार, ज्योति तथा अपने से अभिन्न ब्रह्म-तत्त्व का पूर्ण ज्ञान-अनुभव प्राप्त किया । श्रीराधाकृष्ण की कृपा से आप रावलपिंडी से श्रीवृन्दावन धाम पधारे और श्रीयुगल के प्रेमरस-रूपमाधुर्य में ऐसे निमग्न हुए कि आपका पूर्वानुभव-ब्रह्मज्ञान सब कुछ श्रीप्रियालाल के प्रेमप्रवाह में प्रवाहित हो गया । श्यामघन-स्वरूप श्रीकृष्ण के दर्शनानन्द से आपका मन-मयूर मत्त होकर नृत्य करने लगा और प्रेमरस से परिपूरित आपकी मधुर वाणी निजानुभूति को अभिव्यक्त करने के लिये मुखरित हो उठी—

चाहे योग करि भ्रकुटी के मध्य ध्यान धरि,
चाहे नाम रूप मिथ्या जानिके निहारलै ।
निर्गुण निर्भय निराकार ज्योति व्याप रह्यौ,
ऐसो तत्वज्ञान निज मनमें तू धारलै ॥

'नारायण' अपने को आपही बखान करि,
मोते वह भिन्न नहीं याविधि पुकारलै।
जौलों तोहि नन्दको कुमार नहीं दृष्टि परै,
तौलौं तू भले बैठि ब्रह्म को बिचारलै ॥

(श्रीनारायणस्वामी, सि. ११)

वि० स० १८१६ में आपने गृह का परित्याग कर ३२-३३ वर्ष की अवस्था में आप श्रीवृन्दावन धाम आ गये। श्रीयुगल-प्रेम-बाण से बिंधे श्रीस्वामीजी यहाँ नित्य श्रीभगवत्-स्वरूपों के दर्शन तथा रात्रि में रासलीला का दर्शनानन्द लेते और अपने निवास स्थान पर लौटकर लीला सम्बन्धी सरस पदों की रचना भी करते। रासमण्डलियों में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। रास-मण्डलियों में आपके द्वारा रचित लीलाओं का अनुकरण भी आपके निर्देशन में होने लगा था। एक बार आप श्रीगोवर्द्धन दर्शनार्थ गये, वहाँ कुसुम-सरोवर पर आपको श्रीश्यामा-श्याम का दर्शन प्राप्त हुआ। साक्षात्कार के पश्चात् फिर आप कुसुम-सरोवर पर ही निवास करने लगे। वहीं पर उद्धव-कुण्ड के पास स्थित आपकी समाधी आज भी इस बात का साक्ष्य दे रही है।

आपकी वाणी प्रेम-भाव से पूरित है। भाषा और भावों की दुरुहता का कहीं भी लेशाभास भी नहीं है। सामान्य हिन्दी का ज्ञान रखने वाले पाठक भी इसका सुख अपनी भावना और सहृदयता के अनुसार भली प्रकार ले सकते हैं। व्रज की विशाल और रहस्यपूर्ण वाणी साहित्य में प्रवेश पाने के लिये यह वाणी-ग्रन्थ श्रेष्ठतम माध्यम है।

वि० सं० २०२७, मार्च १९७१ में श्रीस्वामीजी की वाणी 'श्रीसर्वेश्वर' मासिक पत्र के विशेषाङ्क के रूप में प्रकाशित हुई थी। पाठकों के अत्यधिक आग्रह पर इसका पुनर्मुद्रण किया गया है। इसके अनुशीलन से सभी प्रेमी पाठक बन्धु लाभान्वित होंगे। श्री 'श्रीजी' की बड़ी कुञ्ज द्वारा प्रकाशित श्रीनारायणस्वामीजी की वाणी का यह द्वितीय संस्करण श्रीराधाकृष्ण-चरणानुरागी रसिक प्रेमीभक्तों के आस्वादन हेतु सादर समर्पित है।

सम्पादक : 'श्रीसर्वेश्वर' मासिक पत्र
'श्रीजी' की बड़ी कुञ्ज, वृन्दावन

श्रीयुगलचरणरजकांक्षी
जयकिशोरशरण

भूमिका

अखिलैश्वर्य-माधुर्य-सौन्दर्य-रसामृत-सिन्धु श्रीश्यामाश्याम के अनन्य रसिक श्रीनारायणस्वामी कृत 'व्रजविहार' भगवद्भक्तों के लिये विशेष उपयोगी और निरन्तर मनन एवं गान करने योग्य वस्तु है। इसके पदों एवं अन्याऽन्य छन्दों में मधुरता, सरसता और भावों की गम्भीरता सभी अनुपम है। जो व्यक्ति इन्हें एक बार पढ़ लेता है उसका चित्त फिर इनमें से इधर उधर नहीं जाना चाहता। भगवान की कई—एक ऐसी अद्भुत लीलायें आपने लिखी हैं जो स्वयं की अनुभूति ही कही जा सकती है। उनका उल्लेख आपसे पहले किसी ने नहीं किया है, न किसी आर्ष ग्रन्थ में उनका उल्लेख मिल रहा है।

व्रजविहार में लीलापुरुषोत्तम भगवान श्रीनन्दनन्दन की लीलाओं का चित्रण है। अनुराग रस में आपके सर्वजनोपयोगी उपदेश हैं।

प्रकाशन :—ब्रजविहार का प्रकाशन कई बार हो चुका है। सर्वप्रथम श्रीनारायणस्वामी की विद्यमानता में वि. सं. १९४० में श्रीगणेशीलाल साहूकार लोहागढ़वाले ने छपवा कर अमूल्य वितरण किया था।

उस संस्करण की समालोचना भारतेन्दु के सम्पादक गोस्वामी श्रीराधाचरणजी ने इस प्रकार की थी—

"व्रजविहार" परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रील श्रीयुक्त महानुभाव श्रीनारायणस्वामीजी की वाणी है। स्वामीजी महाराज इस समय बृन्दावन में महात्माओं की श्रेणी में अग्रगण्य है। आपने जो कुछ समय-२ पर लीलारस अनुभव किया है वही पदों द्वारा रसिक भक्तोंकी तृप्तिके लिये पुस्तक-पयोद के द्वारा बरसाया है। यह पद कुछ हमारी प्रशंसा के आश्रित नहीं, इनमें कुछ ऐसा चमत्कार है कि सैकड़ों पुस्तक लिखकर और हजारों पुस्तक छपकर भारतवर्ष के इस छोर से उस छोर तक प्रसिद्ध हुईं पर प्रेमीजनों की तृष्णा उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है। इससे अधिक रासधारियों की मंडलियों में तो इनका राज्य है। जब तक आपके पद नहीं गाये जाते दर्शनीक चित्र-लिखित ही नहीं होते, फिर आपके पदों का भाव विलक्षण, राग सद्योमनोहर और अक्षर तो जादू का बाण है। कैसा ही कुटिक कल्मषी क्यों न हो एक बार तो मोहित हो ही जाता है। इसी से आज स्वामीजी

की वाणी प्राणीमात्र को प्यारी लगती है। इसी बाण के बेधे अनेक अनुरागी घर-बार छोड़कर व्रजमण्डल में फिरते हैं। अब आपकी सरस रचना पर हमें कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। आपने पञ्जाबी होकर भी व्रजभाषा की जो उपासना की है वह सराहनीय और स्तुत्य है।

(यह अंश पं० नन्दलालजी की सहायता से व्रजमाधुरी सार से उद्धृत करके वि० सं० १९९५ में श्रीवेंकटेश्वर प्रेस बम्बई से प्रकाशित छठे संस्करण के आरम्भ में प्रकाशित किया गया था)

उसी में श्रीनारायणस्वामीजी की जीवनी के सम्बन्ध में लिखा गया है—श्रीनारायणस्वामीजी का जन्म लगभग संवत् वैक्रमीय १८८५ रावलपिण्डी (पंजाब) जिले में हुआ, यह सारस्वत ब्राह्मण थे। स० १९९६ के लगभग श्रीवृन्दावन में आकर आपने श्रीलालाबाबू के मन्दिर में दफ्तर की नौकरी करली, दिन में नौकरी बजाते और रात्रिके समय में रास-विलास देखते तथा सत्सङ्ग में लगे रहते। उस समय गृहस्थ आश्रम में थे, परन्तु साथ में स्त्री पुत्र नहीं रखते थे। सबसे पहले आपने गजलों की एक पुस्तक छपाई थी। रेखता और पद भी जब कभी रच लिया करते थे। महारानी टिकारी के मन्दिर में जो मण्डली रास करती थी उसके द्वारा ये अपने पदों का अभिनय कराते थे। प्रेम रङ्ग कुछ ऐसा चढ़ गया कि आपने नौकरी छोड़कर संन्यास ग्रहण कर लिया, इधर आपके पदों की ओर रसिक प्रेमियों का प्रेम दिन दिन बढ़ने लगा। स्वामीजी नीरस अद्वैतवासी संन्यासी नहीं थे, आपने दण्ड आदि भी कभी धारण नहीं किया। आप केशीघाट पर खपाटिया के घेरे में यमुना तट पर छत्री में निवास करते थे। स्वभाव बड़ा सरल और दयालु था। परोपकार पर सदैव दृष्टि रखते थे, हृदय में यह भाव सदा जागता रहता था कि किसी तरह से जीव लालजी की ओर लगे, जिससे उसका कल्याण हो। आपकी वाणी बड़ी मधुर थी, जिससे जो उनके पास पहुंचता वह प्रभावित हो जाता था। पदों के लालित्य का वर्णन गोस्वामी श्रीराधाचरणजी ने अपने नव भक्तमाल में इस प्रकार किया है।

छप्पय—अक्षर अर्थ अनूप अलंकारन सु अलंकृत।

भाव हृदय गम्भीर अनुप्रासन गुन गुम्फित ॥

राग नवीन नवीन प्रवीनन को मन मोहै।
नृत्य करत गति भरत रासमण्डल अति सोहै ।।
देश विदेश प्रचार श्री वृन्दावन विश्राम।
श्रीनरायणस्वामी नवल (पद) रचना ललित ललाम ।।

आप यही उपदेश देते थे कि—चाहे जिस स्थितिमें रहो, खूब हरिनाम जपते रहो। गुरुदेव की महिमा सुनाते जुगल सरकार के प्रेम में सदा मग्न रहते, आँसुओं का तार बँध जाता, घण्टों तक प्रेमानन्द समुद्र में निमग्न हो जाते थे। आप कभी धातु स्पर्श नहीं करते थे, कामिनी-कंचन से बहुत बचा करते थे। वृन्दावन से बाहर कहीं नहीं जाते थे। वर्षा में भतरोड की ओर और गर्मियों में यमुना पार शौच जाते थे।

वि. सम्वत् १९५५ में आपने गोवर्धन की यात्रा की, बड़ी प्रसन्नता हुई। वहाँ कुछ दिन निवास किया। एक दिन कुसुम सरोवर पर उनको प्रिया-प्रियातम के दर्शन हुए। आप उनके पीछे-पीछे दौड़े, किन्तु हाथ नहीं आये। हारकर इमली के नीचे बैठ गये। तब से कुसुम-सरोवर के पास उद्धव-कुण्ड पर एक चौबारे में रहने लगे, और उसी स्थान पर वि. स. १९५७ की फाल्गुन कृष्णा ११ को भौतिक शरीर को त्याग करके आप प्रिया-प्रियतम की सन्निधि में जा पहुंचे। आपके सेवक ठाकुर महाचन्द्रजी ने उसी स्थान के पास आपकी समाधी (छत्री) बनवा दी है।

इस प्रकाद की जीवनी सम्भवतः ब्रजमाधुरी सार के आधार पर लिखी गई है। ब्रजमाधुरी सार के लेखक बाहर रहनेवाले महानुभाव हैं, जैसा उनको पता चला वैसा ही अङ्कित कर दिया। श्रीनारायणस्वामी के जन्म सम्वत् और वृन्दावन आगमन के सम्बन्ध में जो लगभग शब्द का प्रयोग किया है इससे भी यह धारणा बलवती हो जाती है। सम्भव है इसी कारण से उन्होंने नारायणस्वामी के गुरुदेव, सम्प्रदाय आदि के सम्बन्ध में कुछ भी चर्चा नहीं की है। निम्बार्क-माधुरीकार वृन्दावन का रहने वाला था, अतः उनका अनुसन्धान विशिष्ट महत्वपूर्ण होना चाहिये। निम्बार्क माधुरीकार ने लिखा है कि—श्रीनारायणस्वामी निम्बार्क-सम्प्रदाय के अनुयायी थे, किन्तु यह नहीं लिखा कि उन्होंने निम्बार्क-सम्प्रदाय के कौन से महानुभाव से दीक्षा ली थी।

कुछ सज्जन श्रीनिम्बार्क-माधुरीकार की बातों में इसलिये सन्देह कर बैठते है कि वे श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय के अनुयायी थे। अतः उन्होंने स्वसम्प्रदाय की अभिवृद्धि के लिये नारायणस्वामी को निम्बार्कीय लिख डाला होगा। किन्तु उनकी यह भावना ठीक नहीं। कारण......गोस्वामी यमुनावल्लभजी निम्बार्कीय नहीं थे। उन्होंने स्वरचित भक्तमाल में जिन जिन श्रीनिम्बार्कीय महानुभावों का उल्लेख किया है, उनमें किसी पर भी कोई सज्जन सन्देह नहीं कर सकता, ऐसी स्थिति में श्रीनारायणस्वामी पर भी सन्देह नहीं होना चाहिये। श्रीयमुनावल्लभजी ने जो छप्पय लिखा है वह इस प्रकार है—

निर्गुण तज वृन्दाविपिन, नारायण सेये सगुण।
श्रीनिम्बार्क कृपालु पाद रज आश्रय लीयौ।
ताके फल में सरस कृष्ण कविता रस पीयौ॥
'ब्रजविहार' हिय हार ग्रन्थ निज रच्यौ विचक्षण।
तामैं रस अनुराग भर्‌यौ अत्यन्त विलक्षण॥
श्रीरासविहारी की कृपा पायौ रस सर्वस वरण!

यद्यपि गोस्वामीजी ने श्रीनारायणस्वामीजी के गुरुदेव के नाम का उल्लेख नहीं किया तथापि वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई से प्रकाशित छठे संस्करण के ख्यमु पृष्ठ पर ही 'श्रीयुत महाराज मुकुन्द स्वामीजी के चरणकमल सेवी' ऐसा विशेषण श्रीनारायणस्वामीजी के नाम के पूर्व अंकित है। इससे यह ज्ञात होता है कि उनके गुरुदेव का नाम मुकुन्द स्वामी या मुकुन्ददेव था। आज से ३० वर्ष पूर्व श्रीनारायणस्वामी के एक कृपापात्र शिष्य मास्टर मिट्ठनलालजी जो पहले श्रीगिरधारीजी के मन्दिर में रहा करते थे, बाद में उन्होंने श्रीराधारमण के घेरे में कोई मकान किराये पर लेकर निवास किया। यद्यपि उस समय श्रीनारायणस्वामीजी के संबंध में मैं अनुसन्धान नहीं करता था तथापि प्रसङ्गवश उक्त मास्टर साहब ने हमें यह बतलाया था कि हम निम्बार्कीय है, हमारे गुरुदेव श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय में दीक्षित थे, हमें उन्होंने ही महावाणी के अनुशीलन का आदेश दिया था, तदनुसार हम निरन्तर महावाणी का पाठ और मनन करते हैं। पूज्य पं. श्रीअमोलकराम शास्त्रीजी उस समय उनके साथ ही

यहाँ कुन्ज में पधारे थे, उन्होंने मास्टरजी की प्रशंसा करते हुए कहा देखो, इन्होंने महावाणी के आरम्भिक गुरु-परम्परा वन्दना के श्लोकों का कैसा सुन्दर पद्यानुवाद किया है। मैंने भी उनके वे ३६ कवित्त सवैया पढ़े। इससे ज्ञात होता है कि श्रीनारायणस्वामी निश्चित रूपसे श्रीनिम्बार्कीय थे।

हमने लालाबाबू मन्दिर के दफ्तर का रिकार्ड देखने का भी प्रयत्न किया, किन्तु वर्तमान इंचार्ज पुलिनबाबू से पता चला कि अब जमीदारी समाप्त होने के कारण पुराना रिकार्ड अस्तव्यस्त हो गया है।

श्रीभट्टदेवाचार्यजी से लेकर श्रीशुकसुधी तक बहुत से निम्बार्कीय महानुभावों की जन्मस्थली मथुरापुरी रही है। गौड़ द्विजों के कई घराने अब भी विद्यमान हैं। मण्डी रामदास मथुरा में श्रीराधा-गोपालजी का एक सुन्दर सुप्रतिष्ठित मन्दिर है, उस मन्दिर के दर्शन और उसके अर्चक वयोवृद्ध पंडित श्रीसुधाधरजी से मिलने का सुअवसर इसी वर्ष प्राप्त हुआ। डॉ. श्रीनारारायणदत्तजी शर्मा ने उनसे हमें मिलाया, तब पता चला कि इस घराने में अच्छे-अच्छे विद्वान् हो चुके है। लाहौर, अमृतसर, रावल-पिण्डी आदि जिलों में इस मन्दिर के बहुत शिष्य-सेवक हैं। पं० श्रीउदय प्रकाशजी जो स्वामी श्रीदयानन्दजी के सहपाठी थे, वे पञ्जाब जाते थे। उनके दो पुत्र थे, बड़े श्रीनन्दकिशोरजी और छोटे श्रीमुकुन्ददेवजी। ये संस्कृत के विशिष्ट विद्वान् और कवि थे। उन्होंने ४२ सुन्दर श्लोकों में अपनी गुरुपरम्परा लिखी है। जो इसी सन्दर्भ में आगे दी जायेगी। सुधाधरजी की आयु उस समय ८० वर्ष से अधिक थी। उन्ही श्रीमुकुन्द-देवजी से श्रीनारायण स्वामी ने दीक्षाग्रहण की हो, अनुराग-रस के आरम्भ में उन्होंने सर्वप्रथम—

श्रीगुरु चरण सरोज रज, वन्दौं बारम्बार।
'नारायण' भवसिंधु हित, जे नवका सुखसार॥

गुरु-वन्दना करके इष्टदेव की वन्दना इस प्रकार की है :—

श्रीराधा गोपाल पद, कर प्रणाम उर धार।
'नारायण' अनुराग रस कहूं बुद्धि अनुसार॥

मथुरास्थ श्रीमुकुन्ददेवजी के यहाँ जो भगवत्प्रतिमा है—उनका नाम श्रीराधागोपालजी ही है। स्वामीजी ने गुरुदेव का स्पष्ट नामोल्लेख

सम्भव है—धर्म शास्त्रीय नियम के अनुसार न किया हो जैसा कि धर्म-शास्त्र का आदेश है :—

आत्म-नाम गुरोर्नाम नामातिकृपणस्य च ।
श्रेयस्कामो न गृह्णीयात् जेष्ठापत्यकलत्रयोः ।।

यह निश्चित है कि श्रीनारायणस्वामी वास्तव में एक संस्कारी भगवद्भक्त थे । बाल्यकाल से ही उनका भगवान में अनुराग था । श्रीउदयप्रकाशजी मथुरा से प्रतिवर्ष रावलपिण्डी में जाते थे । उनसे सम्पर्क होने पर उन्होंने वृन्दावन वास की अनुमति दी, तदनुसार स्वामीजी यहां आये और वृन्दावन वास करने लगे ।

संभव है श्रीउदयप्रकाशजी से नामोपदेश मिला हो, फिर श्रीवृन्दावन आने और स्थायी निवास का विचार होने पर श्रीमुकुन्ददेवजी से दीक्षा ली हो । श्रीमुकुन्ददेवजी का जन्म वि० सं० १८१० कार्तिक शुक्ला १० गुरुवार को हुआ था । श्रीनारायण स्वामी जब वि० १८१६ में वृन्दावन आये तब उनकी आयु ३२ वर्ष के लगभग थी और मुकुन्ददेवजी ६ वर्ष के ही थे । जब १५-२० वर्ष बाद श्रीनारायणस्वामी ने लालाबाबू मन्दिर की नौकरी छोड़कर पृथक् निवास करने का निश्चय किया तब मुकुन्ददेवजी से शरणागति ग्रहण की हो । गुरुदेव की बाल्यावस्था और शिष्य वयोवृद्ध" ऐसे अनेकों उदाहरण मिलते है ।

मुकुन्द शब्द का तात्पर्य है—मुकं—मुक्ति, ददाति इति मुकुन्दः इस भाव को नारायणस्वामी ने व्रजविहार के आरम्भिक मंगलाचरण रूप पद में व्यक्त किया है :—

वन्दौं श्रीगुरु चरण कमल वर ।
जिनको नाम सकल मंगल निधि ध्यान धरत अघ रहत न पलभर ।।
परम उदार सार निगमागम भक्ति ज्ञान की खान मनोहर ।
'नारायण' मोहि दीन जानि के वास दियो वृन्दावन गहि कर ।।

श्रीनारायणस्वामी के घराना का यही मुकुन्ददेवजी का घराना गुरु-घराना रहा है, अतः उदयप्रकाशजी उन्हें हाथ पकड़ कर वृन्दावन लाये, बाद में श्रीमुकुन्ददेवजी से मन्त्रोपदेश मिला ।

श्रीनारायणस्वामी के पदों को देखने से ज्ञात होता है कि उन पर

श्रीभट्टदेव, श्रीहरिव्यासदेव आदि निम्बार्क-सम्प्रदाय के आचार्यों और उनकी रचनाओं का स्पष्ट प्रभाव है :—युगलशतक महावाणी की भाँति पदों की ही स्वामीजी ने रचना की है।

इस प्रकार श्रीनारायणस्वामीजी के सम्प्रदाय और गुरुदेव का जो परिचय प्राप्त होता है, वही युक्तियुक्त और समीचीन प्रतीत होता है। श्रीनारायणस्वामी की गुरुपरम्परा जो श्रीमुकुन्ददेवजी ने उन्हें बनाकर दी थी वह इस प्रकार है :—

श्रीवादिशान्त पदाब्ज रेणवो वेणवो मम।
केणवो यत्पुरो देवा न देवा मक्तुमुद्यता ॥१॥

युगलस्वरूप रुचिरेण परम्पराणां तत्त्वं बभाण परमं सनकादिकेभ्यः।
भक्तस्य तापहननाय विवेचनाश्च हंसं वदन्ति मुनयस्तमहं प्रपद्ये ॥१॥
वशीकृतौ येन निजप्रभावाद्ब्रह्मेश चन्द्रेन्द्रमुखः प्रपञ्चः।
कुत्सायते सोऽपि बलेन यस्य मारः कुमारं तमहं नमामि ॥२॥
नारं तमोद्यति हि यस्स्वजनाऽनुकम्पी नारं च ज्ञानमखिलं प्रददाति भूरि।
नारं प्रपन्नहृदयं प्रददौ दयालुस्तं नारदं गुरुवरं शरणं प्रपद्ये ॥३॥
संसाररोग शमने खलु निम्बवद्यो हार्द्दान्धकारहरणेऽर्क वदेव यश्च।
श्रीकृष्णपादपरिचारक तुष्टचेता निम्बार्कदेशिकवरस्तमहं प्रपद्ये ॥४॥
यो ब्रह्मेशमहेन्द्रपूज्यचरणः श्रीश्रीनिवासाभिधः।
कारुण्यादियशोवतीर्य ह्यवनावालङ्घयत्तोयधिम् ॥
वेदार्थश्च निरूप्य भाष्यममृतं चापाययत्स्वाश्रितान्।
सन्तत्याख्यश्रियं स्ववक्षसि दधत्तं चाश्रये सद्गुरुम् ॥५॥
विश्वं विष्णुमयं चराचरमिदं योपश्यदत्युत्तमो,
विश्वाचार्यगुरुं नमामि तमहं भक्त्यार्द्र चित्तं प्रभुम् ॥६॥
सर्वास्वेव पुरीषु यः स्वपिति भूमा यत्पुरुषेष्वपि,
मुख्यत्वात्पुरषोत्तमो जगति तं वन्दे गुरुं प्रेमतः।
विलासितं येन जगत्समग्रं स्वशिक्षया ज्ञानविरागभक्त्या।
सम्प्रापयामास हरिं स्वकीयाँस्तं श्रीविलासार्यमहं व्रजामि ॥७॥
स्वरूपमास्थाय हरेर्महात्मा निरूपयामास परात्सतत्वम्।
प्रदर्शयामास स्वकान् स्वरूपं स्वरूपमार्यं शरणं व्रजामि ॥८॥

मातोधवो येन गुरूपदेशाच्छास्त्रादिमानैर्भगवान् रमेशः ।
आदेशयामास तमेव जन्तूँस्तं माधवाचार्य महं प्रपद्ये ॥९॥
बलेन भद्रं वितनोति पुंसां भक्त्या कृतार्थो कृतभूतसर्गः ।
तन्नामधेयं शरणं प्रपद्ये कारुण्यवात्सल्यदयादिसिन्धुम् ॥१०॥
पद्मायत यो हि निजाश्रिते जने पद्मागुणैर्वत्सलतादयादिभिः ।
आचार्यविज्ञानविरागभक्तिकं पद्माभिधं तं प्रणतोऽस्मि देशिकम् ॥११॥
श्यामं पश्यति हृत्सरोज इति तं कृष्णं सदा शिक्षयन् ।
स्वीयास्तं कमलाभिलालितपदं सौन्दर्य्यरत्नाकरम् ।
ब्रह्मेशेन्द्रमहर्षिवन्दितपदं वेदान्तवेद्यंञ्च य,
स्तं श्यामेति समाच्ययया हिविदितं चाचार्यमीडे मुदा ॥१२॥
गोपायिता योहि निजाश्रितानां गवां गणस्यामितक्षोभ (कोप) कर्तुः॥१३॥
दीनाऽनुकम्पी भगवान् मुकुन्दो विलोक्य संसारदवाग्निदग्धान् ।
कृपावशाद्दैशिकरूपधारी कृपाभिधं श्रीगुरुमानतोऽस्मि ॥१४॥
विनिर्जिता येन दिशः समग्रा निराकृताः शास्त्रविरुद्धतर्काः ।
विद्योतयामास रमेशभक्तिं श्रीदेवमाचार्यपरं नमस्ये ॥१५॥
भटत्यसौ सुन्दरमत्युदारं रूपं वरेण्यं परमस्य पुंसः ।
तं सुन्दरं भट्टमदभ्रसौहृदं (सारं) व्रजामि नित्यं प्रणतार्तिहारम् ॥१६॥
पद्मनाभाभिधं भट्टं पद्मनाभगुणान्वितम् ।
दयार्णवमहं वन्दे ज्ञानवैराग्यदं गुरुम् ॥१७॥
उपेन्द्रं विक्रमं भट्टमुपेन्द्राख्यं कृपार्णवम् ।
समाश्रये महात्मानं मोक्षस्वाराज्यदं नृणाम् ॥१८॥
रामचंद्राभिधं भट्टं रामचंद्रगुणं गुरुम् ।
समाश्रये सदाभक्त्या (बुद्ध्या) दयापीयूषतोयदम् ॥१९॥
भट्टं श्रीवामनं वन्दे दयाज्ञानादिसागरम् ।
वैद्यं संसाररोगस्य क्लेशकर्मादि वामनान् ॥२०॥
श्रीकृष्णं कृष्णकर्माणं भट्टं वन्दे दयार्णवम् ।
प्रपन्नजनतानन्दं पदं मृत्योर्विमोचकम् ॥२१॥
पद्मा हि ब्रह्मविद्याख्या नित्यं यस्य करे स्थिता (शुभा) ।
तं पद्माकरभट्टाख्यं नतोऽस्मि गुरुमीश्वरम् ॥२२॥

श्रुत्वात्मतत्त्वं ह्यनुभूय नित्यं, संश्रावयामास निजप्रपन्नान् ।
विमोचयामास तमोऽर्गलाद्यस्तमाश्रयं श्रीश्रवणेश भट्टम् ।।२३।।

भटत्यसौ भूरिमहानुभावः, श्रुत्यन्ततत्त्वं विषयं निजेभ्यः ।
भजाम्यनन्तस्य पदस्य दाता, यो भूरिभट्टो गुरुमीश्वरं तम् ।।२४।।

श्रीमाधवं भटति सर्वजगन्निदानं वेदान्तवेद्यचरणं शरण निजानाम् ।
यस्तंगुरुं परमतत्त्वप्रदं महान्तं श्रीमाधवञ्च सततं प्रणतोऽस्मि भट्टम् ।।२५

श्यामं हिरण्यपरिधिं सततं भटन्तं, गोविन्दमादिपुरुषं श्रुतिसारगम्यम् ।
श्यामं हि भट्टमनिशं गुरुमीशमीडे, मोक्षप्रदं स्वदयया चरणानुगानाम् ।।२६

गोप्ता श्रुतीनां परतत्त्ववेत्ता (वक्ता) त्राताऽश्रितानाञ्च भवार्णवाद्यः ।
गोपालभट्टं तमहं प्रपद्ये विज्ञानवैराग्यदयादिसिन्धुम् ।।२७।।

वामादिरूपो बलवान् प्रलम्ब-पदाश्रितानां निहतश्च येन [पूर्णम्] ।
तं देवमीडे बलभद्रभट्टं क्षमादयाज्ञानविरागयुक्तम् ।।२८।।

गोपीनाथं भटति सततं शास्त्रमानेन यो वैः
श्रीगोविन्दं परमपुरुषं दर्शयामास शिष्यान् ।

गोपीनाथं परमसुखदं भट्टमीडे विभुं तम्,
प्रेमानन्दं मृदुलहृदयं ब्रह्मविज्ञानमूर्तिम् ।।२९।।

श्रीकेशवं व्रजपतिं द्रुहिणादिवन्द्यं, कृष्णं भटन्तमनिशं श्रुतिसारगम्यम् ।
भक्तस्य तापशमनाय निबद्धकक्षं, भट्टञ्च केशवमहं शरणं प्रपद्ये ।।३०।।

गंगास्पदं चरणपंकजमीश्वरस्य, वज्रांकुशध्वजसरोरुहलाञ्छनाढ्यम् ।
यो लाति आश्रितजनाय कृपाभियोगं तं गांगलञ्च प्रणतोऽस्मिगुरुंहिभट्टम् ३१

यो वैजघान यवनं मुचुकुन्ददृष्ट्या, श्रीकेशवो यदुपतिश्रवणीयलीलः ।
भूयः स एव मुनिरूपधरश्च भट्टो भक्ताविता तमनिशं शरणं व्रजामि ।।३२

व्रजेशप्रेमाख्यश्रियाऽभिषिक्तं भटन्तमीशं पुरुषं वरेण्यम् ।
श्रीभट्टदेवं परमं भजेऽहं विज्ञानवैराग्यदयासुधाब्धिम् ।।३३।।

तं श्रीगुरुं मुनिवरं करुणादिसिन्धुं, विद्याविरागपरभक्तिदयादिपूर्णम् ।
श्रीव्यासदेवमनिशं हरिणाऽभिषिक्तं विज्ञानवारिदमहं शरणं व्रजामि ।।३४।।

ज्ञानं वाणनिभं कृत्वा विद्यां कृत्वा महद्धनुः ।
महिष्मत्यामविद्यायां क्लेशा हैहय वंशजाः ।।३५।।

भगवन्नामनादेन कुठारेणोपमर्दिताः,
वन्दे परशुरामं तं भक्तगो यो ऽभिरक्षकः ।।३६।।

तद्भ्रातृजं गोकुलचन्द्रसंज्ञं नैदेशिकं तत्सुतमात्मरामम् ।
गेहाश्रमस्थं व्रजराजदेवं तदात्मजं वामनदेवमीड्यम् ।।३७।।

श्रीवल्लभं तत्तनयं महेशं तज्जं हृषीकेशमहानुभावम् ।
तज्जं रमेशं मथुरेशदेवं तदात्मजं माधवदेवमीडे ।।३८।।
श्रीरुक्मिणीवल्लभमेव तज्जं दामोदरं चक्रधरश्च तज्जम् ।
जनार्दनं प्रेमनिधिं गरिष्ठं तत्सूनुमीडे मखसूदनाख्यम् ।।३९।।
कृष्णप्रसादं झटिति प्रसादं तदात्मजं श्रील मनोरथाख्यम् ।
तत्सूनुमर्यञ्च विहारिलाल्यं नैदेशिकं देवमहं नमामि ।।४०।।
तदात्मजं योगविदां वरिष्ठं गोविन्ददेवं गुरुमार्यमीड्यम् ।
संन्यस्य [सन्यस्त] सर्वं सितधामकक्षं गोविन्दकल्पं तमहं नमामि ।।४१।।
तदासनं तत्कृतपुण्यपुञ्जः संप्रार्थितो भक्तगणैरजस्रम् ।
यो वूभुषत् कौशिक एकधीरो देवं हि तं नौम्युदयप्रकाशम् ।।४२।।
तदात्मजौ नन्दकिशोरदेवं मुकुन्ददेवं सततं नमामि ।
तदं गजौ श्रीलगदाधरञ्च सुधाधरं देवमहं नमामि ।।४३।।

विषय-सूची

श्रीनारायणस्वामी के गुरु श्रीमुकुन्ददेवजी की वंश परम्परा

श्रीपरशुराम देवाचार्यजी के भाई के पुत्र—

श्रीगोकुलचन्द्रजी
|
आत्माराम
|
ब्रजराजदेव
|
वामनदेव
|
महेश
|
हृषीकेश

रमेश — मथुरेश

मथुरेश
|
माधवदेव

माधवदेव → चक्रधर, दामोदर

चक्रधर
|
जनार्दन
|
मखसूदन
|
कृष्णप्रसाद
|
मनोरथ
|
विहारीलाल
|
गोविन्ददेव
|
उदयप्रकाश (जन्म सं० १८८४ वि०
परमधाम १९४५ वि०)

उदयप्रकाश → नन्दकिशोर, मुकुन्ददेव

नन्दकिशोर (जन्म सं० १९०७
फाल्गुन कृ० ७
परमधाम १९८३
आषाढ़ कृ० १ शनि०)

मुकुन्ददेव (जन्म सं० १९१० का०
शु० १० गुरुवार
परमधाम १९८४ वै०
कृ० १२)

नन्दकिशोर → गदाधर, सुधाधर

ले०—गोलोकवासी श्रीब्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य, पञ्चतीर्थ

एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञ एषोऽन्तर्यम्येष योनिः सर्वस्य प्रभवाप्ययौ हि भूतानाम् (मा. उ. ५)



निकुञ्जेषु सौरीप्रतीरे सुशोभं रतं रासलीलारसाब्धौ रसेशम् ।
सखी रङ्गदेवी सदोपासनीयं परं ब्रह्म सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

वर्ष १६) श्रीधाम वृन्दावन, चैत्र वि. सं. २०२७, मार्च १९७१, श्रीनिम्बार्काब्द ५०६६ अंक (१,

जुगल-चरण अनुराग

करु मन जुगल-चरण अनुराग ।
बहुत दिवस तोहिं सोवत बीते, जाग रे मूरख जाग ।।
बेमुखियन की संगति सों तू, जैसे बनै त्यों भाग ।
उनको साथ सदा दुखदाई, जिमि ढिग कारे नाग ।।
है बैरी पुनि मीत ह्वै मारै, मृग को बरुवा राग ।
या विधि तोहिं विषै दुख देंगे, चेत रे मंद अभाग ।।
बस वृन्दावन भज राधावर, भूलिके अन्त न लाग ।
'नारायण' बनि जायगी तेरी, अब तू भ्रमना त्याग ।।

—श्रीनारायण स्वामीजी

❀ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ❀



❀ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ❀

अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ़ राज०

शुभाशीर्वादात्मक मङ्गलमयी अभिकामना

श्रीनारायण स्वामी रावलपिंडी (पञ्जाब) से श्रीधाम वृन्दावन में निवास किया। आप का अतीव पावन जीवन था, रासविहारी श्रीराधाकृष्ण भगवान् के अनन्य उपासक थे और इनमें विलक्षण कवित्व शक्ति थी। श्रीधाम वृन्दावन किंवा कुसुमसरोवर (गोवर्धन) जाकर अपने परमाराध्य श्रीश्यामाश्याम नित्यनवकिशोर निकुञ्जविहारी श्रीराधाकृष्ण भगवान् के रसमयी ललित लीला चिन्तन में सतत अभिरत रहते थे। ये अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की आचार्य-परम्परा के अनुगामी श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय के प्रख्यात महानुभाव थे। इनके द्वारा प्रणीत "श्रीव्रजविहार" ग्रन्थ सुप्रसिद्ध है।

अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य जी महाराज जो हमारे स्वयं के श्रीगुरुवर्य थे। आपश्री से जब भी श्रीनारायण स्वामी की चर्चा होती तो यह कहते जब हम श्रीवृन्दावन निवास करते, तब इनसे तीन-चार बार मिलना हुआ। इनसे चर्चा प्रसङ्ग में ये अपने को निम्बार्क-सम्प्रदाय अनुयायी ही

निर्देश करते थे। वस्तुतः उनकी श्रीयुगलकिशोर श्रीराधाकृष्ण भगवान् में अनन्य अनुरक्ति थी।

वस्तुतः इस प्रकार श्रीनारायण स्वामी एकान्त में व्रज कुञ्ज-लताओं के मध्य अवस्थित होकर श्रीयुगल-प्रियालाल के चिन्तन अभिरत रहते।

अतीव प्रसन्नता है कि "श्रीव्रजविहार" ग्रन्थ का पुनर्मुद्रण हो रहा है, जो रासलीला रसिक भगवज्जनों के लिए परम हितप्रद होगा। इसके प्रकाशन में श्रीजयकिशोरशरण जी का प्रयास अतीव अनुकरणीय है।

मिति पौष शुक्लपक्ष, एकादशी, गुरुवार, वि० सं० २०७१
श्रीधाम वृन्दावन




श्रीयुगल सरकार अष्टसखी सेवित

❀ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ❀

श्रीनारायणस्वामीजीकृत—

❀ अनुरागरस ❀



❀ श्रीगुरु वन्दना ❀

दोहा—श्रीगुरुचरण सरोजरज, वन्दौं बारम्बार ।
नारायण भवसिन्धु हित, जे नवका सुखसार ।।१।।
कृपा करो मो दीन पै, हरौ तिमिर अज्ञान ।
नारायण अनुरागरस, निजमति करूं बखान ।।२।।

❀ श्रीराधागोपाल वन्दना ❀

श्रीराधा गोपाल पद, कर प्रणाम उरधार ।
नारायण अनुरागरस, कहूँ बुद्धि अनुसार ।।३।।
दयासिन्धु अति सुखसदन, सदा रहो अनुकूल ।
नारायण जिन उर धरो, मो पामर की भूल ।।४।।

❀ श्रीवृन्दावन वन्दना ❀

धनि वृन्दावन धाम है, धनि वृन्दावन नाम ।
धनि वृन्दावन रसिक जन, सुमिरे राधे श्याम ।।५।।
वृन्दावन जे वास कर, शाक पात नित खायँ ।
तिनके भागिन को निरख, ब्रह्मादिक ललचायँ ।।६।।
हम न भये व्रज में प्रगट, यही रही मन आस ।
नितप्रति निरखत युगल छबि, कर वृन्दावनवास ।।७।।

नारायण व्रज भूमिकूँ, सुरपति नावें माथ ।
जहां आय गोपी भये, श्रीगोपेश्वर नाथ ।।८।।

❀ चेतावनी पुनि गुणदोष लक्षण ❀

बहुत गई थोरी रही, नारायण अब चेत ।
काल चिरैया चुग रही, निशिदिन आयू खेत ।।९।।
नारायण सुख भोग में, तू लम्पट दिन रैन ।
अंतसमय आयो निकट, देख खोलके नैन ।।१०।।
धन यौवन यों जायगो, जा विधि उड़त कपूर ।
नारायण गोपाल भजि, क्यों चाटे जग धूर ।।११।।
रम्भक शुम्भ निशुम्भ अरु, त्रिपुर आदि लै शूर ।
नारायण या कालने, किये सकल भट चूर ।।१२।।
हिरण्याक्ष जगमें विदित, हिरण्यकशिपु बलवान ।
नारायण क्षणमें भये, यह सब राख मसान ।।१३।।
सगर नहूष ययाति षट, और अनेक महीप ।
नारायण अब वह कहां, भुजबल जीते द्वीप ।।१४।।
कुम्भकरण दशकण्ठसे, नारायण रणधीर ।
भये सकल भट कालवश, जिनके कुलिश शरीर ।।१५।।
दुर्योधन जग में प्रगट, जरासन्ध शिशुपाल ।
नारायण सो अब कहां, अभिमानी भूपाल ।।१६।।
नारायण संसार में, भूपति भये अनेक ।
मैं मेरी करते रहे, लै न गये तृण एक ।।१७।।
भुजबल जीते लोक सब, निरभय सुख धनधाम ।
नारायण तिन नृपनको, लिख्यो रहगयो नाम ।।१८।।
हाथ जोरि ठाढ़ो रह्यो, जिनके सनमुख काल ।
नारायण सोऊ बचो, परे काल के गाल ।।१९।।

नारायण नवखण्ड में, निरभय जिनको राज ।
ऐसे विदितमहीप जग, ग्रसे काल महाराज ।।२०।।
गज तुरंग रथ सेन अति, निशि दिन जिनके द्वार ।
नारायण सो अब कहां, देखौ आँख पसार ।।२१।।
नारायण निज हाथ पै, जे नर धरत सुमेर ।
सोउ वीर या भूमि पै, भये राखके ढेर ।।२२।।
जिनके सहजहि पग धरत, रज सम होत पषान ।
नारायण तिनको कहूँ, रह्यो न नाम निशान ।।२३।।
नारायण जिनके भवन, विधि सम भोग विलास ।
अन्त समय सब छाँडि के, भये काल के ग्रास ।।२४।।
जिनको रूप निहार के, रवि शशि रथ ठहरात ।
नारायण ते स्वप्न सम, भये मनोहर गात ।।२५।।
रे मन क्यों भटकत फिरत, भज श्रीनन्दकुमार ।
नारायण अबहूँ समझ, भयो न कछू बिगार ।।२६।।
नारायण तू भजन कर, कहा करेंगे कूर ।
स्तुति अरु निन्दा जगत की, दोउन के शिर धूर ।।२७।।
नारायण शुभकाज ते, या विधि आवै लाज ।
जो ऐसे अघ सों करे, फिर क्यों होय अकाज ।।२८।।
चार दिनन की चांदनी, यह सम्पति संसार ।
नारायण हरि भजन करि, जासों होय उबार ।।२९।।
उर भीतर अति चाहना, बाहर राखत त्याग ।
नारायण वा त्याग पै, परो भार की आग ।।३०।।
मान बड़ाई ईरषा, मन में भरीं अनेक ।
नारायण साधू बने, देखो अचरज एक ।।३१।।
तेरे भावे कछु करौ, भलो बुरो संसार ।
नारायण तू बैठि के, अपनो भवन बुहार ।।३२।।

बात बनावै ज्ञान की, भोगन को ललचात ।
नारायण कलिकाल के, कौतुक कहे न जात ॥३३॥
नारायण सत्संग कर, सीख भजन की रीति ।
काम क्रोध मद लोभ में, गई आयुबल बीति ॥३४॥
तनक बड़ाई पाय के, मन में अधिक गरूर ।
नारायण जिन बैठ मग, साहब को घर दूर ॥३५॥
यह शोभा संसार की, ज्यों टेसू के फूल ।
नारायण फल आश तजि, ललित देख जिन भूल ॥३६॥
धन विद्या गुण और बल, यह न बड़प्पन देत ।
नारायण सोई बड़ो, जाको हरिसों हेत ॥३७॥
सो दुख भोगत आपही, जो दुख अपनी टांट ।
नारायण भवरोग को, को लेवैगो बांट ॥३८॥
निज स्वारथ के मित्र सब, यही जगत को चाल ।
नारायण बिन स्वारथी, हितू नन्द को लाल ॥३९॥
तात मात त्रिय भ्रात सुत, और सकल परिवार ।
नारायण अपनो वही, जाको हरिसों प्यार ॥४०॥
नारायण हरि भजन में, तू जिन देर लगाय ।
का जाने या देर में, स्वास रहै के जाय ॥४१॥
नारायण बिन बोध के, पण्डित पशू समान ।
तासों अति मूरख भलो, जो सुमिरै भगवान ॥४२॥
ज्ञान कथा सीखो घनी, प्रश्न करत अति गूढ़ ।
नारायण बिन धारणा, वृथा बकत है मूढ़ ॥४३॥
पुण्य पाठ पूजा प्रगट, करत सहित हंकार ।
नारायण रीझै नहीं, चतुरन को सरदार ॥४४॥
नारायण जाकी विभौ, तन धन धरा निकेत ।
तेहिं हित कौड़ी देत में, कर भरकर जल लेत ॥४५॥

भाव भक्ति सत्संग की, स्वप्नेहू नहिं सार ।
नारायण समझें बड़ी, सुत दारा की लार ।।४६।।
दृग सों नाव निहार के, पुनि गज होय अरूढ़ ।
भोगन ते तरिबो चहै, नारायण मति मूढ़ ।।४७।।
चटक मटक नित छैल बन, तकत चलत चहुँ ओर ।
नारायण यह सुधि नहीं, आज मरैं कै भोर ।।४८।।
नारायण जब अंत में, यम पकरेंगे बाँह ।
तिनहू सों कहियो हमें अभी सोफतो नाँह ।।४९।।
कोऊ नहीं अपनो सगो, बिन राधा गोपाल ।
नारायण तू वृथा मति, परै जगत के जाल ।।५०।।
मन लाग्यो सुख भोग में, तरन चहै संसार ।
नारायण कैसे बने, दिवस रैन को प्यार ।।५१।।
काम क्रोध मद लोभ की, लगी हियेमें आग ।
नारायण वैराग भट, सहित ज्ञान गये भाग ।।५२।।
विद्यावंत स्वरूप गुण, सुत दारा सुख भोग ।
नारायण हरि भक्ति बिन, यह सबही हैं रोग ।।५३।।
नारायण निज हिये में, अपने दोष विचार ।
ता पीछे तू और के, औगुण भलें निहार ।।५४।।
संत सभा झांको नहीं, कियो न हरिगुण गान ।
नारायण फिर कौन विधि, तू चाहत कल्यान ।।५५।।
जिन संतनके दरश सों, नारायण अघ जात ।
तिनें कहत ये फिरत हैं, घर घर टुकड़े खात ।।५६।।
बहु विधि पूजा दान व्रत, करत गरबके साथ ।
नारायण बिन दीनता, द्रवै न दीनानाथ ।।५७।।
नारायण मैं सत्य कहुँ, भुज उठायके आज ।
जो जिय बने गरीब तू, मिलें गरीबनिवाज ।।५८।।

विद्या पढ़ करतौ फिरै, औरन को अपमान ।
नारायण विद्या नहीं, ताहि अविद्या जान ।।५९।।
कथा सुनत गइ आयुबल, भयो न मन अनुराग ।
नारायण तिन श्रवणसों, भवन भले हैं नाग ।।६०।।
कथनी कथि केते गये, कर्म उपासना ज्ञान ।
नारायण चारों जुगन, करनी है परमान ।।६१।।
भीतरसों मैलो हियो, बाहर रूप अनेक ।
नारायण तासों भलो, कौआ तन मन एक ।।६२।।
नारायण ऐसे घने, बकैं अनाप सनाप ।
दोष लगावें सन्त को, आप पापके बाप ।।६३।।
अपनो साखी आप तू, निज मनमाहिं विचार ।
नारायण जो खोट है, ताकूँ तुरत निकार ।।६४।।
जिनको मन निज वश भयो, तजकर विषै विलास ।
नारायण ते घर रहैं, चहें करैं वनवास ।।६५।।
नारायण सुख भोग में, मस्त सभी संसार ।
कोऊ मस्त वा मौज में, देख्यो आंख पसार ।।६६।।
छबि निहार गोपाल की, जिहि न होय आनंद ।
नारायण तिहिं जानिये, यही चौथ को चंद ।।६७।।
नारायण ते धन्य नर, जिन वश कीये पांच ।
साहिब सों मुख ऊजरे, जग की लगी न आंच ।।६८।।
एक नारि औगुण भरी, एक तिया गुणवंत ।
नारायण सोई भली, जापै रीझत कंत ।।६९।।
रूप रंग सुन्दर घनो, चतुर कुलवती नार ।
नारायण तौ का भयो, प्रीतम करत न प्यार ।।७०।।
चंद्रबदन मृग सम नयन, गति गयंद मृदुबोल ।
नारायण हरिभक्ति बिन, यह कौड़ी के मोल ।।७१।।

नारायण तौ का भयो, पाये नैन विशाल ।
नैन वही जिन में बसें, श्रीराधा गोपाल ।।७२।।
लखी न जिन छबि श्यामकी, कियो न पलभर ध्यान ।
नारायण ते जगत में, प्रगट निपट पाषान ।।७३।।
नारायण या जगत में, यह दो वस्तू सार ।
सब सों मीठो बोलिबो, करिबौ पर उपकार ।।७४।।
नारायण परलोक में, यह दो आवत काम ।
देना मुष्टी अन्न की, लेना भगवत नाम ।।७५।।
बांट खाय हरि को भजे, तजे सकल अभिमान ।
नारायण ता पुरुष को, उभय लोक कल्यान ।।७६।।
कियो न मानत और को, परहित करत न आप ।
नारायण ता पुरुष को, मुख देखे सों पाप ।।७७।।
रक्षा करी न जीव की, दियो न आदर दान ।
नारायण ता पुरुष सों, रूख भलो फलवान ।।७८।।
देत फूल फल पात दल, तनक नीर तरु पाय ।
नारायण तासों गयो, खीर खाँड़ नित खाय ।।७९।।
नारायण दो बात को, दीजे सदा बिसार ।
करी बुराई और ने, आप कियो उपकार ।।८०।।
दो बातन को भूलि मति, जो चाहत कल्यान ।
नारायण इक मौतकूँ, दूजे श्रीभगवान ।।८१।।
वशीकरण के मंत्र हैं, नारायण यह चार ।
रूप राग आधीनता, सेवा भली प्रकार ।।८२।।
नारायण कीजै सदा, दुष्ट संग को त्याग ।
जिमि लुहारके ढिग परें, बदन चिंगारी आग ।।८३।।
फूली लता करीलकी, खिले मनोहर फूल ।
नारायण ताके निकट, भ्रमर न बैठत भूल ।।८४।।

नारायण ढिग सन्त के, गये न होत बिगार ।
ज्यों बिन मोल सुगन्धिता, मिलै समीप अतार ॥८५॥

❀ सन्त लक्षण ❀

तजि पर औगुण नीरको, क्षीर गुणनसों प्रीति ।
हंस सन्तकी सर्वदा, नारायण यह रीति ॥८६॥
तनक मान मनमें नहीं, सब सों राखत प्यार ।
नारायण ता सन्त पै, बार बार बलिहार ॥८७॥
अति कृपालु संतोषवृति, युगल चरण में प्रीति ।
नारायणते सन्त बर, कोमल वचन विनीति ॥८८॥
उदासीन जगसों रहै, यथा मान अपमान ।
नारायण ते सन्तजन, निपुण भावना ध्यान ॥८९॥
मगन रहैं नित भजन में, चलत न चाल कुचाल ।
नारायणते जानिये, यह लालन के लाल ॥९०॥
परहित प्रीति उदार चित, विगत दंभ मद रोष ।
नारायण दुखमें लखे, निज कर्मन को दोष ॥९१॥
भक्ति कल्पतरु पात गुण, कथा फूल बहु रंग ।
नारायण हरिप्रेम फल, चाहत सन्त विहंग ॥९२॥
सन्त जगतमें सो सुखी, मैं मेरी को त्याग ।
नारायण गोविन्द पद, दृढ़ राखत अनुराग ॥९३॥
जिनको पूरण भक्ति है, ते सब सों आधीन ।
नारायण तजि मान मद, ध्यान सलिलके मीन ॥९४॥
नारायण हरि भक्ति की, प्रथम यही पहचाँन ।
आप अमानो ह्वै रहै, देत और को मान ॥९५॥
कपट गाँठि मनमें नहीं, सबसों सरल सुभाव ।
नारायण ता भक्तकी, लगी किनारे नाँव ॥९६॥

जिनको मन हरिपद कमल, निशिदिन भ्रमर समान ।
नारायण तिनसों मिले, कबूँ न होवै हान ॥९७॥
नारायण जो कृपा करि, सन्त पधारें धाम ।
आगे ते उठि प्रीति सौं, कीजै दण्ड-प्रणाम ॥९८॥
सन्त दरशकी लालसा, नारायण जो होय ।
रीते कर नहिं जाइये, फूल पत्र फल तोय ॥९९॥
अजापुत्र मैं मैं कहत, दिये आपने प्रान ।
नारायण मैंना भली, खाय मलीदा सान ॥१००॥
नारायण दुख सुख उभै, भ्रमत यथा दिन रात ।
बिन बुलाय ज्यों आ रहैं, बिना कहें त्यों जात ॥१०१॥
नारायण हरिकृपाकी, तकत रहै नित बाट ।
जानहार जिमि पार को, निरखत नौका घाट ॥१०२॥

❀ कृपानिधान की शोभा ❀

रतिपतिछबिनिन्दितवदन, नीलजलज समश्याम ।
नवयौवन मृदु हास वर, रूपराशि सुखधाम ॥१०३॥
ऋतु अनुसार सुहावने, अद्भुत पहरे चीर ।
जो निज छबिसों हरत हैं, धीरजहू को धीर ॥१०४॥
मोरमुकुटकी निरखि छबि, लाजत मदन करोर ।
चन्द्रवदन सुख सदन पै, भावक नैन चकोर ॥१०५॥
जिन मोरन के पंख हरि, राखत अपने शीश ।
तिनके भागिन को सखी, कौन कर सके रीस ॥१०६॥
घुँघरारी अलकावली, मुख पै देत बहार ।
रसिक मीन मनके लिये, कांटे अति अनियार ॥१०७॥
मकराकृत कुण्डल श्रवण, झाँई परत कपोल ।
रूपसरोवर माहिं ढँ, मछरी करत कलोल ॥१०८॥

शुक लजात लखि नासिका, अद्भुत छबिकी सार ।
तामें इक मोती परच्यो, अजब सुराही दार ।।१०९।।
दशन पाँति मुतियन लरी, अधर ललाई पान ।
ताहू पै हँसि हेरबो, को लखि बचै सुजान ।।११०।।
मृदुमुसिक्यान निहारिके, धीर धरत है कौन ।
नारायण कै तन तजै, कै बौरा कै मौन ।।१११।।
अधरामृत सम अधर रस, जानत बंशी सार ।
सप्त सुरन सों सप्त कर, कहत पुकार पुकार ।।११२।।
रतनन की कण्ठी गरें, मुक्तमाल वनमाल ।
त्रिविध ताप तीनों हरें, जो निरखत नँदलाल ।।११३।।
हस्त कमल पैं मणीमय, जगमगात कर फूल ।
जिनकी छबिलखि शम्भुरिपु, गयो सकल सुधिभूल ।।११४।।
उदर माँहि त्रिवली सुभग, नाभि रुचिर गंभीर ।
छबि समुद्र के निकट अति, भई त्रिवेणी भीर ।।११५।।
गजमुक्ता की लरी द्वै, अति अमोल छबिकन्द ।
सो अद्भुत कटि कोंधनी, पहिर रह्यो ब्रजचन्द ।।११६।।
गोल गुलफ पै सजि रहे, नूपुर शोभा ऐन ।
जिनकी धुनि सुनि जगत सों, मिटै लैन अरु दैन ।।११७।।
युगल चरण दश अँगुरियां, दशधा भक्ति सुहाय ।
नखनज्योतिलखि चन्द्रमा, गयो अकाश उडाय ।।११८।।
तरुवनकी लखि अरुणता, कविजन मन सकुचात ।
इनकी उपमा का कहैं, पटतर नाँहि दिखात ।।११९।।
ब्रजवीथिन जब साँवरो, चलत सुचाल मतंग ।
पग पगमें छबिकी झरी, होत चलै इक संग ।।१२०।।
जे रसिकन उर नित बसें, निगमागम को सार ।
नारायण तिन चरणकी, बार बार बलिहार ।।१२१।।

नन्दलाल कीरति कुमरि, कहिबेकूँ यह दोय ।
ज्यों तनकी छाया प्रगट, तनसों बिलग न होय ॥१२२॥
याविधि सों जो रसिकजन, धरत दिवसनिशि ध्यान ।
नारायण ताकूँ सदा, गावत वेद पुरान ॥१२३॥
चलत फिरत बैठत उठत, लगी रहै यह आस ।
श्याम राधिका निरखिबो, वृन्दाविपिन निवास ॥१२४॥
नारायण होवै भलें, जो कुछ होवनहार ।
हरिसों प्रीति लगायके, अब कहा सोचविचार ॥१२५॥
नारायण अति कठिन है, हरि मिलिबेकी बाट ।
या मारग तब पग धरै, प्रथम शीश दे काट ॥१२६॥

❀ अथ प्रेमलक्षण ❀

नारायण मन में बसी, लोकलाज कुलकान ।
आशक होना श्याम को, हाँसी-खेल न जान ॥१२७॥
नेहडगर में पग धरै, फेर विचारै लाज ।
नारायण नेही नहीं, बातन को महाराज ॥१२८॥
चौंसर बिछी सनेहकी, लगे शीशके दाँव ।
नारायण आशक़ बिना, को खेलै चितचाव ॥१२९॥
गढ़ि गढ़ि कें बातें कहे, मन में तनक न प्रीति ।
नारायण कैसे मिले, साहब सांचे मीत ॥१३०॥
जो शिर सांटे हरि मिले, तो पुनि लीजै दौर ।
नारायण ऐसे न हो, गाहक आवे और ॥१३१॥
सो क्यों सेवे बाग बन, गुलमलता तरु मूल ।
नारायण जाके हृदय, फूल रह्यो वह फूल ॥१३२॥
नारायण प्रीतम निकट, सोई पहुँचनहार ।
गेंद बनावे शीश को, खेले बीच बजार ॥१३३॥

लगन लगन सबही कहें, लगन कहावे सोय ।
नारायण जा लगनमें, तन मन दीजे खोय ॥१३४॥
नर संसारी लगनमें, दुख सुख सहैं करोर ।
नारायण हरि प्रीति में, जो होवै सो थोर ॥१३५॥
नारायण हरि लगन में, यह पांचों न सुहात ।
विषय भोग निद्रा हँसी, जगत प्रीति बहुबात ॥१३६॥
नारायण घाटी कठिन, जहां नेह को धाम ।
बिकल मूर्च्छा सिसकिबौ, यह मगमें विश्राम ॥१३७॥
नारायण या डगर में, कोउ चलत है बीर ।
पग पग में बरछी लगै, श्वास श्वासमें तीर ॥१३८॥
लगन लगी गोपालकी, भूली तन की सार ।
नारायण मछरी भयो, श्यामरूप जलधार ॥१३९॥
वर्णाश्रम उरझें कोऊ, विधि निषेध व्रत नेम ।
नारायण बिरले लखें, जिन मिलि उपजे प्रेम ॥१४०॥
प्रेम नगर प्रीतम बसै, पै नारायण नेत ।
जानहार या गाम को, कोउ दिखाई देत ॥१४१॥
प्रेमी छुट या प्रेम को, और न जानत सार ।
नारायण बिन जौहरी, जैसे लाल बजार ॥१४२॥
तौलौं यह फांसी गरे, वर्णाश्रम व्रत नेम ।
नारायण जौलौं नहीं, मुँह दिखरायो प्रेम ॥१४३॥
प्रेम सहित अँसुवन भरें, धरे युगलको ध्यान ।
नारायण ता भक्त को, जग में दुर्लभ जान ॥१४४॥
नारायण जाके हिये, उपजत प्रेम प्रधान ।
प्रथम हिया की हरत है, लोकलाज कुलकान ॥१४५॥
नारायण या प्रेम को, नद उमड़त जा ठौर ।

पलमें लाज म्रजादके, तट काटत है दौर ॥१४६॥

विधि निषेध श्रुति वेदकी, मेंड़ देत सब मेट ।
नारायण जाके बदन, लागत प्रेम चपेट ।।१४७।।

नारायण ज्ञाता अगम, सबकी सम्मति येह ।
बिना प्रेम कर्मादि विधि, ज्यों ऊसर में मेह ।।१४८।।

नारायण जप योग तप, सबसों प्रेम प्रवीन ।
प्रेम हरीकूँ करत है, प्रेमी के आधीन ।।१४९।।

नारायण यह प्रेम सुख, मुखसों कह्यो न जाय ।
ज्यों गूँगौ गुड़ खात है, सैनन स्वाद लखाय ।।१५०।।

प्रेम खेल सबसों कठिन, खेलत कोउ सुजान ।
नारायण बिन प्रेम के, कहा प्रेम पहचान ।।१५१।।

जिनें प्रेम प्यालो पियो, झूमत तिनके नैन ।
नारायण वा रूप मद, छके रहैं दिन रैन ।।१५२।।

नारायण जाके हिये, लगी प्रेमकी रौर ।
ताही को जीवन सुफल, दिन काटै सब और ।।१५३।।

नेक धर्म धीरज समझ, सोच विचार अनेक ।
नारायण प्रेमी निकट, इनमें रहै न एक ।।१५४।।

रूप छके झूमत रहैं, तन को तनक न ज्ञान ।
नारायण दृग जल भरे, यही प्रेम पहचान ।।१५५।।

है न्यारो सब पन्थ ते, प्रेम पन्थ अभिराम ।
नारायण यामें चलत, वेगि मिलै पिय धाम ।।१५६।।

मन में लागी चटपटी, कब निरखूँ घनश्याम ।
नारायण भूल्यो सभी, खान पान विश्राम ।।१५७।।

सुनत न काहू की कही, कहै न अपनी बात ।
नारायण वा रूप में, मगन रहें दिन रात ।।१५८।।

देह गेह की सुधि नहीं, टूटि गई जग प्रीत ।
नारायण गावत फिरैं, प्रेम भरे रसगीत ॥१५९॥

धरत कहूँ पग परत कित, सुरति नहीं इकठौर ।
नारायण प्रीतम बिना, दीखत नहिं कछु और ॥१६०॥

भयो बावरो प्रेम में, डोलत गलियन माहिं ।
नारायण हरिलगन में, यह कछु अचरज नाहिं ॥१६१॥

लतन तरें ठाड़ो कबूं, कबहूँ यमुना तीर ।
नारायण नैनन बसी, मूरति श्याम शरीर ॥१६२॥

प्रेम सहित गदगद गिरा, कढ़त न मुखसों बात ।
नारायण महबूब बिन, और न कछू सुहात ॥१६३॥

कह्यौ चहै कछु कहत कछु, नयन नीर सुरभंग ।
नारायण बौरा भयो, लग्यो प्रेमको रंग ॥१६४॥

कबूँ हँसै रोवै कबूँ, नाचत करि गुण गान ।
नारायण सुधि तन नहीं, लग्यो प्रमको बान ॥१६५॥

सुरति लगी वा ध्यानमें, सुनत और की बात ।
नारायण उत्तर दियो, मृदुल मनोहर गात ॥१६६॥

जाके मन यह छबि बसी, सोवतहू बररात ।
नारायण कुण्डल निकट, अद्भुत अकल सुहात ॥१६७॥

नारायण जाके दृगन, सुन्दर श्याम समाय ।
फूल पात फल डार में, ताकूँ वही दिखाय ॥१६८॥

ब्रह्मादिक के भोग सुख, विष सम लागत ताहि ।
नारायण ब्रजचन्दकी, लगन लगी है जाहि ॥१६९॥

नारायण हरि प्रीतिमें, जाको तन मन चूर ।
ताहि न ममता औरसों, निकट रहो वा दूर ॥१७०॥

गुण गावै गोपालके, भरि लावै दृग नीर ।
नारायण नहिं कल परै, बिन देखे बलबीर ॥१७१॥

जाके मन में बसि रही, मोहन की मुसिक्यान ।
नारायण ताके हिये, और न लागत ज्ञान ॥१७२॥

जो घायल हरि दृगनके, परे प्रेमके खेत ।
नारायण सुनि श्याम गुण, एक संग रो देत ॥१७३॥

नारायण जाको हियो, बिंध्यो, श्याम दृग बान ।
जगके भावें जीवतो, है वह मृतक समान ॥१७४॥

सुख सम्पति धन धामकी, ताहि न मनमें आस ।
नारायण जाके हिये, निशिदिन प्रेम प्रकास ॥१७५॥

नारायण जिनके हृदय, प्रीति लगी घनश्याम ।
जाति पांति कुल सों गये, रहे न काहू काम ॥१७६॥

नारायण तब जानिये, लगन लगी या काल ।
जित तित में दृष्टी परै, दीखैं मोहनलाल ॥१७७॥

नारायण व्रजचन्द्र के, रूप पयोनिधि माहिं ।
डूबत बहुतै एक जन, उछरत एकौ नाहिं ॥१७८॥

परा भक्ति अरु ज्ञान में, नेक नहीं कछु भेद ।
नारायण सुख प्रेम है, कहैं सन्त अरु वेद ॥१७९॥

परा भक्ति याको कहैं. जित तित श्याम दिखात ।
नारायण सो ज्ञान है, पूरण ब्रह्म लखात ॥१८०॥

नन्दलाल दशरथ सुवन, उभय एक सरकार ।
नारायण जो दो कहैं, ते नर विना बिचार ॥१८१॥

नारायण सब एक हैं, रंग रूप तिल रेख ।
उनके दृग गम्भीर हैं, इनके चपल विशेष ॥१८२॥

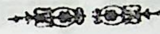
नारायण दो बात सों, अधिक और नहिं बात ।
रसिकनको सत्संग नित, युगलध्यान दिनरात ।।१८३।।
गुण मन्दिर सुन्दर युगल, मंगल मोदनिधान ।
नारायण निज चरण रति, यह दीजै वरदान ।।१८४।।

इति श्रीवृन्दावननिवासी श्रीनारायणस्वामाजी कृत—
श्रीअनुरागरस सम्पूर्ण



❀ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ❀

अथ श्रीगोपालाष्टक प्रारम्भः



विहरत स्वच्छन्दं आनन्दकन्दं श्रीब्रजचन्द ब्रह्मपरम् ।
पूरणशशिवदनं शोभासदनं जितछविमदनं रूपवरम् ॥
हलधरवरवीरं श्यामशरीरं गुणगम्भीरं धीरधरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचनरसालं तापहरम् ॥१॥

राजत वनमाला रूपविशाला चालमराला सुरतहरम् ।
कुण्डलधृतकरणं गिरवरधरणं निज जन शरणं कृपाकरम् ॥
गोपन कृतसंगं ललित त्रिभंगं लजित अनंगं निरिख परम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचनरसालं तापहरम् ॥२॥

जलधर वर श्यामं पूरण कामं अतिसुखधामं दुःखहरम् ।
वृन्दावन क्रीड़ित असुरनपीड़ित ब्रजतियव्रीड़ित रसिकवरम् ॥
नूपुर ध्वनि चरणं मुनिमनहरणं तारण तरणं तुष्टतरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचनरसालं तापहरम् ॥३॥

राधा उर हारं रूप अपारं नीर विहारं चीर हरम् ।
कुंचित वरकेशं मुकुट विशेषं गोपसवेषं निगम वरम् ॥
कोमल अति चरणं वेदविवरणं जगदुद्धरणं मृदुलतरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं बचनरसालं तापहरम् ॥४॥

अलकन मुखराजत मन्मथलाजत किंकिणि बाजत मधुरस्वरम् ।
वंशीकृत नादं हरत विषादं युगवर पादं तिमिर हरम् ॥
भक्तन आधीनं चरित नवीनं परम प्रवीणं प्रेम परम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचन रसालं तापहरम् ॥५॥

अति नृत्यप्रवीरे धीरसमीरे यमुना तीरे रास करम् ।
कल गान अनूपं श्यामस्वरूपं त्रिभुवन भूपं मोद भरम् ।।
राधागुणगायक व्रजसुखदायक सुरवर नायक वेणु धरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचन रसालं ताप हरम् ।।६।।

सुन्दर मृदुहासं विपिन विलासं कुञ्ज निवासं केलिकरम् ।
युवतीदृगअञ्जन जनमनरञ्जन केशीभञ्जन भारहरम् ।।
भूषणनिजभवनं गजगतिगमनं कालिय दमनं नृत्य करम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचन रसालं ताप हरम् ।।७।।

गोरजमुख शोभित सुरनरलोभित मन्मथ क्षोभित दृश्य परम् ।
गोपनसहभुञ्जे विपिननिकुञ्जे वत्सनपुंजे दुहिण हरम् ।।
यह छबितारायण लखिनारायण भयेपरायण अखिल नरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचन रसालं ताप हरम् ।।८।।

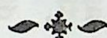
इति श्रीनारायण स्वामीजी विरचितं
श्रीगोपालाष्टकं सम्पूर्णम्



❀ श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ❀

* अथ श्रीब्रजविहार *

श्रीनारायण स्वामीजी कृत—



❀ अथ पदसिद्धान्त ❀

राग शहानो

वन्दौं श्रीगुरु चरण कमलवर ।।
जिनको नाम सकलमंगलनिधि, ध्यान धरत अघ रहत न पलभर ।।
परम उदार सार निगमागम, भक्ति ज्ञान की खान मनोहर ।।
नारायण मोहिं दीन जानिके, वास दियो वृन्दावन गहि कर ।।१।।

राग शहानो

धनि धनि श्रीवृन्दावन धाम ।।
जाकी महिमा बेद बखानत, सब विधि पूरण काम ।।
आश करत हैं जाकी रज की, ब्रह्मादिक सुर ग्राम ।।
लाडिलीलाल जहाँ नित विहरत, रतिपति छबि अभिराम ।।
रसिकनको जीवन धन कहियत, मंगल आठों याम ।।
नारायण बिन कृपा जुगलवर, छिन न मिलै विश्राम ।।२।।

राग शहानो

वन्दौं श्रीराधा ब्रजचन्द ।।
जिनके गुणगण अति अपार हैं, गावत वेद भेद बहु छन्द ।।
करत अनेक भांति सों लीला, भक्तजनन मन देत अनंद ।।
एक वदन सों कहँ लगि वरनें, नारायण मो सम मतिमन्द ।।३।।

भजन कालिगड़ा

करु मन जुगलचरण अनुराग ॥
बहुत दिवस तोहिं सोवत बीते, जाग रे मूरख जाग ॥
बेमुखियन की संगति सों तू, जैसे बनैं त्यों भाग ॥
उनको साथ सदा दुखदाई, जिमि ढिग कारे नाग ॥
है बैरी पुनि मीत ह्वै मारै, मृगको बरुवा राग ॥
या विधि तोहिं विष दुख देंगे, चेत रे मन्द अभाग ॥
बस वृन्दावन भज राधावर, भूलिके अन्त न लाग ॥
नारायण बनि जायगी तेरी, अब तू भ्रमना त्याग ॥४॥

राग काफी

मन चेतु नहीं पछितावैगो ॥
भजिलै रे श्रीनंदनँदनको, जो तोहि पार लगावैगो ॥
झूठ साँचके ब्यौहारन सों, कहँ लगि द्रव्य कमावैगो ॥
निशि बासर याही चिंतामें, रो रोके मरि जावैगो ॥
जिनके काज अनीति करत तू, काउ काम नहिं आवैगो ॥
जब यमदूत तोहि पकरेंगे, तब न कछू बस्यावैगो ॥
नारायण तेरी - मेरी में, योंहीं उमरि गमावैगो ॥
अन्त समय ढिग आय गयो अब, फिरि कब हरिगुण गावैगो ॥५॥

राग कालिगड़ा

मूरख छाँड़ु वृथा अभिमान ॥
औसर बीति चल्यो है तेरो, द्वै दिन को मेहमान ॥
भूप अनेक भये पृथ्वी पै, रूप - तेज - बलवान ॥
कौन बचे या काल ब्याल तें, मिटि गये नाम निशान ॥
धवल धाम धन गज रथ सेना, नारी चंद्र समान ॥
अंत समय सबही को तजिकै, जाय बसे शमशान ॥

तजि सतसंग भ्रमत विषयनमें, जाविधि मरकट श्वान ।।
छिनि भरि बैठि न सुमिरन कीनो, जासों होय कल्यान ।।
रे मन मूढ़ अन्त जिन भटकैं, मेरो कह्यो अब मान ।।
नारायण ब्रजराजकुँवर सों, बेगि करहु पहचाँन ।।६।।

राग सोरठा धीमाताल

टेर सुनो ब्रजराज दुलारे ।।
दीन मलीन हीन शुभ गुण सों, आय परद्यो हूँ द्वार तिहारे ।।
काम क्रोध अति कपट लोभ मद, सोइ माने निज प्रीतम प्यारे ।।
भ्रमत रह्यो इन सँग विषयन में, तो पदकमल न मैं उर धारे ।।
कौन कुकर्म किये नहिं मैंने, जो गये भूलि सो लिये उधारे ।।
यहाँ लों खेप भरी रचिपचि के, चकित रहें लखिकें बनजारे ।।
अब तौ एकबेर कहौ हँसि कें, आजही सों तुम भये हमारे ।।
याही कृपाते नारायण की, वेगि लगेगी नाव किनारे ।।७।।

राग कालिंगड़ा धीमाताल

गोविन्द गोविन्द गोविन्द भज रे ।।
आदि अनन्त सार निगमागम, जाहि नवत सुरनर मुनि अज रे ।।
दंभ कपट कामादि मान मद, इन बैरिनको तुरतहि तज रे ।।
नारायण मन करु सतसंगति, काल ब्यालते निर्भय गज रे ।।८।।

राग बिहाग धीमाताल

करु मन नन्दनँदन को ध्यान ।।
यह अवसर तोहि फिरि न मिलैगो, मेरो कह्यो अब मान ।।
घूँघरवारी अलकें मुखपर, कुण्डल झलकत कान ।।
नारायण अलसाने नैना, झूमत रूपनिधान ।।९।।

राग कालिंगड़ा तीनताल

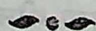
भज मन श्रीराधा गोपाल ।।
गोल कपोल अधर बिंबाफल, लोचन परम विशाल ।।

शुक नासा भौं दूज चन्द्र सम, अति सुन्दर हैं भाल ॥
मुकुट चन्द्रिका शीश लसत है, घुँघरारे बर बाल ॥
रतन जटित कुण्डल कर कंकण, गल मुतियनकी माल ॥
पग नूपुर मणिखचित बजत जब, चलत हँसगति चाल ॥
गौर श्याम तन बसन अमोलिक, कर महँदी सों लाल ॥
मृदु मुसिक्यान मनोहर चितवन, बोलन अधिक रसाल ॥
कुंज भवनमें बैठे दोऊ जन, गावत अद्भुत ख्याल ॥
नारायण या छबिको निरखत, पुनि पुनि होत निहाल ॥१०॥

कवित्त

चाहे योग करि भृकुटी के मध्य ध्यान धरि,
चाहे नाम रूप मिथ्या जानिके निहारलै ॥
निर्गुण निर्भय निराकार ज्योति व्याप रह्यो,
ऐसो तत्त्वज्ञान निज मनमें तू धारलै ॥
नारायण अपने को आपही बखान करि,
मोते वह भिन्न नहीं याविधि पुकारलै ॥
जौलौं तोहि नन्दको कुमार नहिं दृष्टि परै,
तौलौं तू भले बैठि ब्रह्मको विचारलै ॥११॥

इति श्रीपदसिद्धान्त समाप्त



अथ बधाई के भजन

ध्रुपद सारङ्ग

आजतो बधाई माई भवन बाजि रहो,
महाराज दशरथ गृह प्रगटे सुखधाम ॥
रनवासे अति आनन्द, निरखि बदन अवधचन्द,
पुनि पुनि उर लावत, सुख पावत सब बाम ॥

पुरजन मन अति उमंग, जहां तहां ह्वै रागरंग,
देत ना प्रतीत बीत जात अष्टयाम ।।
विप्र करत वेदगान, पावत सनमान दान,
नारायण लोगन के पूरन भये काम ।।१।।

जँगले का जिला

आज अवधपुरी आनन्द छायो ।।
घर घर मंगलाचार बधाई, कौशल्या रानी सुत जायो ।।
शुभ नक्षत्र पुनर्वसु नौमी, चैत्रमास सब भाँति सुहायो ।।
भौमवार बर मध्य दिवसके, श्रीरघुवीर जनम तब पायो ।।
निगमागम जाको महिमाको, गावत गावत पार न पायो ।।
सो महाराज काज भक्तनके, नृप दशरथको कुँवर कहायो ।।
जाके दरशन को सुर तरसें, ताहि धाय लै कण्ठ लगायो ।।
नारायण अपनो भक्ती को, जगमें प्रगट प्रभाव दिखायो ।।२।।

बधाई जँगले का जिला

आज महरि घर देउ री बधाई ।।
शुभ लक्षण सुन्दर सुत जायो, बड़ भागिनि है यशुमति माई ।।
वृद्ध वधू सब जुरि मिलि आईं, यथायोग्य कुलरीति कराई ।।
दान मान विप्रन को दीनो, मणि मुक्ता पट भूषणताई ।।
मृगनयनी कल कोकिलबयनी, करि शृङ्गार बैठीं अँगनाई ।।
लै लै नाम नन्द यशुमति को, गावत गारी परम सुहाई ।।
ध्वज पताक तोरण मणिमाला, द्वारन बन्दनवार बँधाई ।।
नारायण ब्रज आनन्द छायो, प्रगट भये जहाँ कुँवर कन्हाई ।।३।।

बधाई राग ध्रुपद

धन्य धन्य तू है रानी कियो उपकार घनो,
ऐसो सुत जायो जासों जगतहू तरैगो ।।

जाको मुख निरखत ही दूर होत कालरोग,
कौतुक करि गिरिवर निज कर पै लै धरैंगो ।।
पूतना प्रलम्ब तृणावर्त केशि कंस आदि,
महावीर असुरन के प्राणन (लै) हरैंगो ।।
नारायण ऐसे कछु परे हैं नक्षत्र याके,
सुरपति को गर्व छिन में दूरि सब करैंगो ।।४।।

बधाई राग शहानो

देखि चरित मोहि अचरज आवै ।।
जो कर्त्ता जगपालक हर्त्ता, सो अब नंदको लाल कहावै ।।
बिन कर चरण श्रवण नासा दृग, नेति नेति जाको श्रुति गावै ।।
ताकूँ पकरि महरि अँगुरी तें, आँगन में चलिबो सिखरावै ।।
ब्रह्म अनादि अलक्ष अगोचर, ज्योति अजन्म अनंत कहावै ।।
सो शशिबदन सदन शोभा को, नँदरानी निज गोद खिलावै ।।
जाके डर डोलत नभ धरनी, काल कराल सदा भय पावै ।।
सो व्रजराज आज जननी की, भौंह चढ़ी को निरख डरावै ।।
जाके सुमिरन ते जीवन को, भवबंधन छिन में छुटि जावै ।।
सोई आज बंध्यो उखल ते, निरखन को सिगरो ब्रज धावै ।।
पूरणकाम क्षीरसागर पति, माँगि माँगि दधि माखन खावै ।।
भक्ताधीन सदा नारायण, प्रेम की महिमा प्रगट दिखावै ।।

इति श्रीबधाई के भजन सम्पूर्ण

❀ अथ स्तुति यमलार्जुन की ❀

गीतिका छंद—

पारब्रह्म परमेश्वर अवगति, भवन चतुर्दश नाथ हरी ।।
जब जब भीर परी संतन पै, प्रगट होय प्रतिपाल करी ।।

आदि अन्त सब के तुम स्वामी, ब्रह्मादिक अनुगामी ।
कृष्ण नमामि नमामि नमामी, दयासिंधु अन्तर यामी ।।
जाको ध्यान धरत योगी जन, शेष पती नित नाम नये ।
सो भवतारन दुष्टनिवारण, संतन कारण प्रगट भये ।।
जिनको नाम सुनत यम डरपत, थरथर काँपत काल हियो ।
तिनको पकरि नन्द की रानी, ऊखलसों लै बाँधि दियो ।।
जै दुखमोचन पंकजलोचन, उपमा जाय न कहत बनी ।
जै सुखसागर सब गुणआगर, शोभा अंग अनंग घनी ।।
नारदको हम अति गुण मानें, शाप नहीं वरदान दियो ।।
जा कारण ते प्रभु आपने, दर्शन दियो सनाथ कियो ।।
जो हरहू के ध्यान न आवत, अपर अमर हैं किहि लेखे ।।
सो हरि प्रगट नन्दके आँगन, ऊखल संग बँधे देखे ।।
जिनकी पदरज को सुर तरसें, अगम अगोचर दनुजारी ।।
त्राहि त्राहि प्रणतारत भंजन, जन मन रंजन सुखकारी ।।
तुमरी माया जीव भुलानो, किहि बिधि नाथ तुमें जानें ।।
तुमही कृपा करौ जब स्वामी, तबही तुमको पहिचानें ।।
हे मुकुन्द मधुसूदन श्रीपति, कृपानिवास कृपा कीजै ।।
इन चरणन में सदा रहै मन, यह वरदान हमें दीजै ।।
जै केशव जैं अधम उधारण, दयासिन्धु हरि नित्य मगन ।।
जै सुन्दर व्रजराज शशीमुख, सदा बसो मम हृदय गगन ।।
रसना नित तुम्हरे गुण गावै, श्रवण कथा सुनि मोद भरैं ।।
कर नित करैं तुम्हारी सेवा, नैंन सन्त जन दरश करैं ।।
नेम धर्म व्रत जप तप संयम, योग यज्ञ आचार करैं ।।
नारायण बिन भक्ति न रीझौ, वेद संत सब साख भरैं ।।१३।।

इति श्रीयमलार्जुन की स्तुति समाप्त

अथ माखनचोर-लीला प्रारम्भ

(समाजी वचन)

दोहा—नारायण इक व्रजवधू, चली न्हायबे प्रात ।
ढिग की सखी बुलायके, कही तासु यह बात ।।१।।
बीर यहां पैं तनक तू, बैठि चौकसी काज ।
मेरे घर आवे नहीं, चोरन को शिरताज ।।२।।

राग कालिगड़ा

यमुना न्हान चली व्रजगोरी ।।
सजनी एक चौकसी कारन, बैठारी निज घर की पौरी ।।
ताके भवन धँसे मनमोहन, कियो चहत माखनकी चोरी ।।
रूप ठगौरी डारि सखीपै, आप गये जहाँ धरी कमोरी ।।
कछु खायो कछु भूमि गिरायो, आंगन माँहि मटुकिया फोरी ।।
नारायण या बिधि कुचाल करि, भाजि गये निधिवनकी खोरी ।।३।।
दोहा—जब द्वारे आई सखी, छींक भई ततकाल ।
पुनि आँगनमें जायके, देखी अधिक कुचाल ।।४।।

❀ सखी वचन सखी प्रति परस्पर ❀

राग कालिगड़ा

किन मेरो माखन बिखरायो ।।
फूटो परी मटुकिया आँगन, कहा भयो भीतर को आयो ।।
मैं निज हितू जानिकें तोकों, रखवारी करिबे बैठायौ ।।
अरी भटू तुमहूँ रही सोवत, भलो चोरते भवन रखायो ।।
आवत छींक भई मो सन्मुख, उन अपनो फल प्रगट दिखायो ।।
नारायण तैं प्रेमिनि बनिके, मेरो घर सबरो लुटवायो ।।५।।

❀ सखी को उत्तर ❀

राग आसावरी

बाकी चौकसी कैसे करूँ मैं, ना जानूं कितसों वह आवै ।।
अचक अचक पग धरत द्वार पै, नूपुर की धुनि होन न पावै ।।
उझकि उझकि इत उतमें झाँकिके, फिर सैनन निज सखा बुलावै ।।
छींके धरी कमोरी माखन, अँगुरीसों पुनि तिन्हें बतावै ।।
वस्तु चोर हो ताकूँ पकरे, चाहै जितौ बलवान कहावै ।।
नारायण वा चितके चोरसों, काहू की न कछू बसियावै ।।६।।

❀ पुनि सखी वचन ❀

दोहा—तोहि चतुर जानूँ जबी, चोर न जावे भाज ।
हाथ पकरि पुनि लैचलें, यशुमतिके ढिंग आज ।।७।।

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—कुलदेवी पूजन चलीं, इतनी कहि व्रजनार ।
पुनि ताके घरमें गये, चोरन के सरदार ।।८।।
झट किवार की ओटते, निकसि नवेली बाल ।
लपकि झपकि निज अंक भरि, पकरि लिये गोपाल ।।९।।

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग भैरव

मोहन अब कित भाजिके जैहौ ।।
बहुत अनीति करौ तुम व्रजमें, आज सबी फल पैहौ ।।
राखूँगी तोहि पकरि भवनमें, कौन सहाय बुलैहौ ।।
चंचल चपल चोर चूड़ामणि, पुनि माखन न चुरैहौ ।।
नाच गाय कछु करौ वीनती, गहरी भेंट चढ़ैहौ ।।
नारायण जबही छूटौगे, फिर नहिं देहे बतरैहौ ।।१०।।

❀ लालजी वचन सखी प्रति ❀

राग कालिगड़ा

सखी मोहि चोर चोर मति भाख ।।
तुही कहै मेरौ दधि नीकौ, तनक श्याम लै चाख ।।
निशि दिन मेरे नन्द बबा घर, तोसी आवत लाख ।।
मैं चोरीको नाम न जानूँ, बूझि ले मेरी साख ।।
मोहि कहा तेरे गोरस सों, चाहे गैलमें नाख ।।
नारायण जो हमें देय तू, सो अपने घर राख ।।११।।

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग नट

अब तुम कहां जावौगे भाज ।।
चोरी करत फिरत नित घर घर, तनक न आवत लाज ।।
बांधूंगी मैं हाथ तिहारे, भले मिले हौ आज ।।
नारायण निज भवन होयगो, नन्दरायको राज ।।१२।।

वार्त्तिक

यों कहके सखी श्रीलालजीके हाथ बांधबे लगी, तब लालजी बोले–अरी ! तोहि हाथ बांधबौऊ नहिं आवै, देख हम तोहि सिखावें ।।१३।।

दोहा—छल छली छल कपटसों, बाँधि सखीके हाथ ।
माखन ताहि दिखायके, जेंवत ग्वालन साथ ।।१४।।

गिरितनया कूँ पूजिके, घर आई ब्रजनार ।
मगन भई निज हीय मे, कौतुक नयो निहार ।।१५।।

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग कालिंगड़ा

आज यहां कैसे तुम आये ।।
सूने भवन धँसत नहिं डरपत, ऐसे निडर कौन के जाये ।।
छींके सो मटुकी उतारते, नेक नहीं मनमें सकुचाये ।।
भले सपूत भये निज कुलमें, लाज शरम के खोज मिटाये ।।
काहेकों यह ग्वाल बाल सब, ओर पास तुमने बैठाये ।।
नारायण याही विधि घर घर, जेंवत हो नित माल पराये ।।१६।।

❀ लालजी वचन ❀

राग खम्माच

मैं कहा कहूँ कछु कही न जावै ।।
ऐसो समौ कबू नहिं देख्यो, कीजै भलौ बुराई आवै ।।
तो छींके इक चढ़ी बिलैया, माखन मटकी भूमि गिरावै ।।
ताहि बिडारि करूं रखवारी, याहूपै मोहि दोष लगावै ।।
यही समझकै सखा बुलाये, मति कहुँ ग्वालिन फैल मचावै ।।
नारायण यह साख भरेंगे, घर बुलायके चोर बनावै ।।१७।।

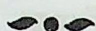
वार्त्तिक

यह वचन रसीले सुनिके सखी मुसक्याय गई, अरु शोभाधामकी शोभा निरखिके बोली, बलिहार या चतुराई पै, तब आप बोले अरी सखी! घबरावै क्यों है अभी तौ कई बेर बलिहार होयगी ।।१८।।

दोहा—नारायण मैं सत्य कहुँ, बिना कपट छलछंद ।
ये लीला जो नित पढ़ै, पावै परमानन्द ।।१९।।

इति श्रीमाखनचोर लीला श्रीनारायण स्वामीजीकृत समाप्त ।।१।।

अथ उराहनो लीला प्रारम्भ



❀ समाजी वचन ❀

दोहा—विधू वदन शोभा घनी, मृगनैंनी वरबाम ।
सहजहिं नन्द भवन गई, देखन सुन्दरश्याम ।।१।।
निरखि रूप अति मुदित मन, घर आई व्रजनारि ।
अपर सखी बूझन लगी, याकी दशा निहारि ।।२।।
अरी सखी तू प्रातसों, नहिं भाषत मुख बैन ।
कियो न कछु शृङ्गार तन, दियो न काजर नैंन ।।३।।

❀ उत्तर सखी को सखी प्रति ❀

राग सिन्दूरा

एरी मैं तो सहज सुभाव गई नन्दजू के, तहां देख्यो सुख और ।।
इकले श्याम नई सज-धज सों, ठाड़े भवन को पौर ।।
रतन शृङ्गार बहार हँसन की, माथे केशर खौर ।।
नारायण सो छबि दृग छाई, रही न काजर ठौर ।।४।।

वार्त्तिक

यह सुनिके सखी आपस में कहन लगीं ।।५।।

राग परज

अब नन्दभवन में चलौ री बीर ।।
सांवरे कन्हाई बिन कल न परत,
घरी पल छिन मन न धरत है धीर ।।
दृग अति अकुलावें, नहिं पलक लगावें,
पुनि उतही को धावें परी इनपै भीर ।।
तन सुरत बिसारी, लगी चटपटी भारी,
नारायण हमारी, को जानत पीर ।।७।।

दोहा—जुरि मिलकें पुनि सब गईं, नवगोरी व्रजबाल ।
मिस उराहनो करि सुघर, निरखत मोहनलाल ॥७॥

❀ सखी वचन यशोदा प्रति ❀

राग खम्माच का जिला

हमारी पुकार सुनो नन्दरानी ॥
तेरो छैल गैल नित रोकैं, नयो भयौ दधि दानी ॥
और कुचाल करत जो हमसों, सो हम कहत लजानी ॥
नारायण ताकूँ तुम बरजो, बोलत अटपटि बानी ॥८॥

❀ अपर सखी वचन यशोदा प्रति ❀

राग जोगिया आसावरी

हमारो न्याव करौ महतारी ॥
या व्रजमें प्रगट्यो उतपाती, तेरो छैल विहारी ॥
बिना बात हमसों नित अटकै, ढीठ बड़ो है भारी ॥
अचरा झटकि पटकि शिर गागरि, पुनि ठाढ़ो दे गारी ॥
तुम वाको घरमें नहिं बरजति, कुलकी रीति बिगारी ॥
नारायण कछु जान परत है, एक सलाह तिहारी ॥९॥

❀ अपर सखी वचन यशोदा प्रति ❀

ब्रज में कैसे बसें री माई ॥
जहाँ नित प्रति उत्पात करत है, तेरो कुँवर कन्हाई ॥
भोर ही मैं सोवत अँगना में, अचकहि आय जगाई ॥
उठ री सखी तोहि द्वारे पै, टेरत कोउ लुगाई ॥
मैं तो द्वार पै देखिबे निकसी, कोहै कहाँ ते आई ॥
पीछे ते इन घर भीतर सों, सांकर तुरत लगाई ॥

मैं बाहर ये भवनमाहिं मन,—मानत धूम मचाई ॥
बासन फोरि तोरि सब छींके, दधि गोरस ढरकाई ॥
यह कौतुक सुनिके व्रजवनिता, निरखन को सब धाई ॥
हँसि हँसि के मिलि बूझत मोसों, कहा लीला फैलाई ॥
भाँति भाँति की बोली बोलत, जो जाके मन भाई ॥
मैं अपने मन कहूँ नारायण, यह कहा कुमति कमाई ॥१०॥

❀ यशोदा वचन ❀

राग टोड़ी जौनपुरी

ग्वालिन झूँठ उराहनो लाई ॥
कब तेरे घर गयो साँवरो, कब गोरस ढरकाई ॥
याही मिस मेरे मोहन को, तू अब देखन आई ॥
नारायण तेरे मन की मैं, जानि गई चतुराई ॥११॥

❀ सखी वचन यशोदा प्रति ❀

राग बिलावल

यशुमति तेरी भली बनि आई ॥
पूत सपूत प्रगट भयो जाको, नित उठ करत कमाई ॥
भूषण चीर चुराय हमारे, मानत अधिक बड़ाई ॥
घर में लाय तोहि पहरावत, भलौ कुँवर सुखदाई ॥
घाट बाट नित माँगत डोलै, निज कुल रीति मिटाई ॥
नारायण सोई करै कौतुक, जो तैं पट्टी पढ़ाई ॥१२॥

❀ यशोदा वचन सखी प्रति ❀

राग टोड़ी जौनपुरी

ग्वालिन रूप के मद इतरावै ॥

तू अति तरुण मेरो सुत बालक, नाहक दोष लगावै ॥

तुही नई भई जोबनवारी, नेक लाज नहिं आवै ।।
नारायण अब जा घर अपने, क्यों तू बात बनावै ।।१३।।

❀ सखी वचन यशोदा प्रति ❀

राग कालिंगड़ा

ब्रजरानी तैंने भलौ सुत जायो ।।
घर बाहर नित अटकत हमसों, करत जो जिय में भायो ।।
मेरे भवनमें आय अचानक, निज पट आप दुरायो ।।
द्वार निकसि कहि याही चोरटी, मेरो वसन चुरायो ।।
पार परोसिन देखि हँसें सब, मो मन अति सकुचायो ।।
नारायण तुमहीं रहौ ब्रजमें, हम बसिबो भरि पायो ।।१४।।

❀ यशोदा वचन सखी प्रति ❀

राग खम्माचका जिला

मेरे सुत पोछे क्यों परीं ब्रजनारियां ।।
कोऊ तो नचावै, कोऊ चोर लै बनावै,
नित झूंठ ही लगावैं, दोष देवें मिल गारियां ।।
दौरी दौरी आवो, नहिं नेक सकुचावो,
तुम रूप गरबीली, बड़े गोपकी कुमारियां ।।
कहां मेरो लाल, कहां तुम नारायण,
अचरज आवै बातें सुनिके तिहारियां ।।१५।।

❀ सखी वचन ❀

दोहा—नँदरानी तू धन्य है, धन्य तिहारो लाल ।
हमहूँ ब्रज में धन्य हैं, जो नित सहें कुचाल ।।१६।।

वार्तिक

भलौ न्याव कियो ।

❀ नन्दरानी को वचन लालजी प्रति ❀

राग खम्माच

मोहन तू इतनो कहो मान ॥
बाहर मति उरझै काहू सों, मेरे जीवनप्रान ॥
ब्रजवनिता तेरे गुन मोसों, नितप्रति करत बखान ॥
मेरो कह्यो तू सांच न माने, सुनि लै अपने कान ॥
इन बातन सों निंदा उपजे, ठकुरायत में हान ॥
नारायण सुत बड़े बापके, तजि दै ऐसी बान ॥१७॥

❀ लालजी वचन मैया प्रति ❀

राग झंझोटी तीनताल

जननी तू इनकी मति माने ॥
जाविध तू होवै रिस मोपै, सो यह कौतुक ठाने ॥
धोखे सों मोहि निकट बोलके, उर लगाय लियो याने ॥
जबही अचक आय पीछेतें, मुख चूमन कियो वाने ॥
खंजन दृग चंचल चपला सी, अजहुँ कुटिल भौं ताने ॥
नारायण जैसी वे आप हैं, तैसो और को जाने ॥१८॥

❀ यशोदा वचन लालजी प्रति ❀

दोहा—लाल कुचाल न तजत तू, समझायो बहुबार ।
चोर कहावे आपको, ह्वै कै राजकुमार ॥१९॥

❀ लालजी वचन मैया प्रति ❀

राग झंझोटी तीनताल

मैया यह झूठही दोष लगावै ॥
बूझलै मेरे सखा संगके, जो तोहि सांच न आवै ॥

भवन रहूँ तौ तुही कहैगी, गौ चारन नहिं जावै ॥
जो जाऊं तौ यह मग छेड़ें, फेर उराहनौ लावै ॥
त्रिया चरित्र रचै ढिग तेरे, तोरके हार दिखावै ॥
तू जननी मेरी अति भोरी, याके कहे पतिआवै ॥
कित गजराज कहां मृग छौना, अनगढ़ मेल मिलावै ॥
नारायण मोहन मुख बातें, सुनि यशुमति मुसिक्यावै ॥२०॥

❀ यशोदाजी वचन सखी प्रति ❀

राग मल्हार

देत उराहनो लाज न आई ॥
मेरो लाल ब्रज भरमें भोरो, नेक नहीं जानत चतुराई ॥
सुनि यशुमतिके वचन हँसीं सब, निज निज भवन चलीं हरषाई ॥
नारायण लखि चरित श्याम के, ब्रह्मादिक की मति बौराई ॥२१॥
दोहा—नारायण जो प्रीति सों, यह लीला सुनि लेत ।
ताको सुन्दर सांवरो, धाम आपनो देत ॥२२॥

इति श्रीउराहनो लीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत समाप्त ॥२॥

अथ आँखमिचौनी-लीला प्रारम्भ

❀ लालजी को वचन ❀

राग खट—

हलधर के कांधे पै कर धर यों बोले गोपाल ॥
बलदाऊ मेरी कही मानो, टेर लेउ सब ग्वाल ॥
गोवर्द्धन की सुभग तरहटी, सघन कदम्ब तमाल ॥
कुहकत मोर भूमि हरियाली, भरे मधुर जल ताल ॥
रुचिसों तहाँ चरैंगी गय्या, देंगी दूध विशाल ॥
नारायण इत हम तुम खेलें, आंखमिचौनी ख्याल ॥१॥

❀ दाऊजी के वचन ❀

राग भैरवी

यह बात भली कही लाल ।।
आवो रे मिल सखा हमारे, गायन के चरवाल ।।
निज निज धेनु लिवाय चलौ अब, जहाँ कहत गोपाल ।।
नारायण हलधर के मुखसों, सुन हरषे सब ग्वाल ।।२।।

वार्त्तिक

सखा आपस में बोले—अरे भैया ! यह सलाह कन्हैया ने अच्छी बताई, वेग चलौ, फिर वा ठौरपै जायके गैया तो चरबे छोड़ दईं और आप सब मिलके आँखमिचौनी खेलबे लगे ।।३।।

(समाजी वचन)

राग कालिंगड़ा

आँखमिचौनी खेलें दोऊ भाई ।।
भाजत में बाजत पग नूपुर, मुख पर श्रम बिन्दू छबि छाई ।।
खेलत सखा परस्पर पकरत, हलधर के जिय में कछु आई ।।
बेरिबेरि हरिहीं को छूवत, निज मन खीजत कुँवर कन्हाई ।।
रिस ह्वै के पुनि गये मात ढिग, अँसुवन भरि सब बात सुनाई ।।
नारायण मोसों बल भैया, राखत आंट ये कौन भलाई ।।४।।

❀ यशोदाजी वचन लालजी प्रति ❀

राग आसावरी

तुम उदास जिन होवो लाला खेलौ याही ठौर ।।
हलधर को घर धसन न दूंगी, ढीठन को शिरमौर ।।
तेरे काज मनोहर गैया, आज लई है और ।।
नारायण चलि तोहि दिखाऊं, बंधी भीतरी पौर ।।५।।

वार्त्तिक

ये वचन जननी मुख सुन के अति उमंग सों लालजी मैया की अँगुरी पकड़ जब पौरी में जाय कें गैया कूँ देख्यौं—तब आप बोले-अरी मैया ! गैया तो बड़ी सुन्दर है और दूध भी घनों देयगी। तब जननी लाल को मुख चूम कें बोली—अरे लाला ! बाबा ने तेरे ही लिये मँगवाई है, दाऊ को यामें कछु साझो नहीं, तब आप बोले—याको नेक सो दूध दाऊ को भी दियो करेंगे—तब नन्दरानी हँस कें बोली—लाला ! तेरी राजी ॥६॥

दोहा—ताही छिन श्रीनन्दजू, आये भवन मँझार ।
निज गोदी ले लाल कूँ, बाढ्यो हरष अपार ॥७॥
लीला पूरण ब्रह्म की, भक्त जनन के प्रान ।
नारायण जे दुष्टजन, करें तर्कना आन ॥८॥

इति श्रीआँखमिचौनी लीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत समाप्त ॥३॥



अथ श्रीलालजी की उत्थापन लीला

❀ यशोदा वचन ❀

राग रामकली

लालन अब भोर भयो, जागो बलिहारी ॥
घर घर उठि दधि बिलोवें, ब्रज की नवनारी ॥
मैं तिहारे काज रखी, लौनी घर न्यारी ॥
नारायण वनकं चलीं, धेनु हू हमारी ॥१॥

(समाजी वचन)

राग खट

एक सखी उठि बड़े भोर ही, नन्दराय के भवन गई ।।
ताही समय जगे मनमोहन, आलसवश मुख कांति नई ।।
नैंन उनींदे झूमत पलकें, शिथिल वचन अति मोद मई ।।
नारायण यह छबि लखि ग्वालिन, मनों भीतको चित्र भई ।।२।।

❀ सखी वचन नवगोपवधू प्रति ❀

ध्रुपद राग भैरों

आज सखी प्रातकाल, दृग मीड़त जगे लाल,
रूप के विशाल, सिन्धु गुणन के जहाज ।।
कुंडलसों उरझी माल, मुखपर अलकनको जाल,
भई मैं निहाल, निरखि शोभा को समाज ।।
आलस वश झुकत ग्रीव, कबहूँ अँगड़ाई लेत,
उपमा सम देत, मोंहि आवत है लाज ।।
नारायण यशुमति ढिंग, हौं तो गई बात कहन,
याही में भये री, एक पंथ दोऊ काज ।।३।।

वार्तिक

नवगोपवधू बोली हे सखी ! उनकूँ देखिके मेरे नेत्र कब सफल होंयेगे ? थोरी देर पीछे लालजी हू बाहर पधारे ।।४।।

(समाजी वचन)

राग कालिंगड़ा

भवन ते निकसे नन्दकुमार ।।
पचरंगी चीरा शिर सोहै, चितवनपै बलिहार ।।
कानन में मुतियन को चौकड़ा, गल फूलनको हार ।।
नारायण जे आपही सुन्दर, तिनकूँ कहा शृङ्गार ।।५।।

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—गोपवधू के भवन ढिग, जब आये गोपाल ।
तब बोली निज सखी सों, गोपवधूटी बाल ।।६।।

❀ गोपवधू वचन ❀

राग खट

देख सखी नव छैल छबीलौ, प्रात समय इत सों को आवै ।।
कमल समान बड़े दृग जाके, श्याम सलोनो मृदु मुसिक्यावै ।।
जाकी सुन्दरता जग बरनत, मुख शोभा लखि चन्द्र लजावै ।।
नारायण यह किधौं वही है, जो यशुमति को कुँवर कहावै ।।७।।

❀ सखी वचन ❀

राग विभास

यही मोहन निज मोही व्रजबाला ।।
गजगति चलत बजत पग नूपुर, उर सोहै वनमाला ।।
कमल फिरावत मृदु मुसक्यावत, बोलत वचन रसाला ।।
श्यामवरण लखि लजत नीलमणि, पंकज मेघ तमाला ।।
नैन सैन करि हरत मैन मन, मुखद्युति चन्द्र विशाला ।।
नारायण प्रगट्यो जादूगर, नन्दराय को लाला ।।८।।

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

दोहा—सुनो लाल इक वृजबधू, धरत तिहारो ध्यान ।
ताहि तनक दीजै दरश, निजदासी कर जान ।।९।।

वार्त्तिक

जब श्रीलालजी वा गोपवधू के ढिग जाय के बतरायबे लगे, ताही समय वाने अपनी सासकूँ आवतो देख्यो, तब इत

सों लाजहू प्रगट हो आई, सखी तो लाज के आधीन ह्वै गई, वाकी सास निकट आय के इनसों कहबे लगी क्यों रे नन्द के! हमारे घर क्यों आयो है? तब आप बोले—अरी! हमारी पतंग टूटि के आय परी है ताय लैबे आये हैं, ऐसे बात बनाय के निज भवन में चले आये, ता पीछे गोपवधू अति व्याकुल होय के सखी सों कहिबे लगी ॥१०॥

ध्रुपद राग भैरों

आज सखी प्रात काल, मेरे गृह आये लाल,
भई मैं निहाल वाके, रूप को निहार री ॥
पूरण शशि सम कपोल, तिनपै कुंडल किलोल,
मधुर मधुर सुनिके बोल, रही ना सम्हार री ॥
नाकमें बुलाके सोहै, चितवन चितही को मोहै,
अद्भुत शृंगार चरण, नूपुर झनकार री ॥
नारायण हौं तो उठी, मिलन इतसों आई लाज,
मन की मनही में रही, कर न सकी प्यार री ॥११॥

वार्तिक

हे सखी! अब तू कछू ऐसो उपाय बताय जासों वा चितचोर साँवरे कूँ देखूँ ॥१२॥

राग खम्माच का जिला

साँवरे के देखे बिन परत न चैन ॥
छिन छिन मन अकुलात सखी री, रूप के प्यासे नैन ॥
वह शोभा वह मन्द हँसन वर, वह तिरछी दृग सैन ॥
नारायण करि गयो बावरी, मधुर सुनाय के बैन ॥१३॥

वार्तिक

तब वा सखी ने एक उपाय बतायो कि, या मिस यशुमति गृह जाय के प्राणप्यारे को निरखि आ ॥१४॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—मिस बनाय के व्रजबधू, गई यशोमति तीर ।
निरखि लालको सुख भयो, मिटी विरहकी पीर ॥१५॥

❀ गोपवधू वचन यशोदा प्रति ❀

राग कालिंगड़ा

रानी मैं कछु बूझिबे आई ॥
प्रात समय काहू के मुख ते, अचरज सों चरचा सुनि पाई ॥
तो मैं कहूँ जो तू सुनिके पुनि, निज मन बिलग न मानै माई ॥
द्वै बापनको सुत भयो कैसे, तेरो छबिनिधि कुवँर कन्हाई ॥
हँसि बोली यशुमति सुनि बहना, तुमही जानत यह चतुराई ॥
नारायण याही मिस ग्वालिन, निरखत नन्दनँदन सुखदाई ॥१६॥

दोहा—ये लीला गोपाल की, जो गावे दिन रैन ।
अन्त समय सद्गति मिलै, जीवत पावे चैन ॥१७॥

इति श्रीलालजी की उत्थापन लीला श्रीनारायण स्वामीजीकृत समाप्त ॥४॥

अथ पनघट-लीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—पनघट की लीला नई, कहूँ प्रेम सों गाय ।
नारायण जे रसिकजन, श्रवण करें चित लाय ॥१॥
निज निज घट लै व्रजबधू, गईं लाड़िली पास ।
यमुना जल भरिबे चलो, ललो रूप की रास ॥२॥

वार्तिक

तब श्रीजी ने कही हे सखी ! हमने अबई काहू के मुख ते सुनी है कि, वहां तौ लालजी महाराज ठाढ़े हैं ॥३॥

❀ पुनि श्रीजी वचन सखी प्रति ❀

राग देश सोरठ

कैसे जाऊं री बीर, घट भरिबे नीर, ठाढ़ो यमुना तीर,
सामरौ अहीर, मारै दृगन तीर, हरै सुधि शरीर ॥
नित यही चित में चिंता समाज, व्रजराज सों कैसे बचैगी लाज,
जिया कांपै आज, नहिं धरत धीर ॥
वाको रूप है कै कोऊ जादू यंत्र, कैधौं नारायण वशीकरण मंत्र,
कैधौं तंत्र कै, पलही में करै फकीर ॥४॥

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

वार्तिक

सखी बोली—हे प्यारी! आप तो पहले ही सों इतनी डरपो हो, पधारो तो सही ॥५॥

❀ समाजी वचन ❀

राग खट—

प्रात समय व्रजनारि सकल मिल, घट यमुना जल भरन चलीं ॥
ओरपास तारागण सजनी, बीच चंद मुख भानु लली ॥
पग नूपुर कटि किंकिनि बाजैं, पूरि रही धुनि कुंज गली ॥
इतउत तकत चलत नारायण, आय न जावै कहुँ श्याम छली ॥६॥

❀ सखी वचन सखी प्रति ❀

राग भैरों एकताल

देख सखी नंदलाल, सन्मुख ते आवै ॥
संग सखा भीर लिये, बाँसुरी बजावै ॥
आज याहि समझौ मिल, भलें लाज जावै ॥
नारायण नितप्रति कौ, झगरौ नहिं भावै ॥७॥

❀ लालजी वचन सखी प्रति ❀

राग मलार—

ठाड़ो रहौ व्रजनारि सुन्दर बर ।।
रूप की घटा छटा नई छबि की,
जाहि देखि मोहैं नारो नर ।।
अति चंचल दृग मान लजत लखि,
कानन में सोहै मुतियन लर ।।
नारायण हम सों बिन बूझे,
कहाँ चलीं गागरिया शीश धर ।।८।।

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

दादरा राग आसावरी

गैल जिन रोको जोबन मदमाते ।।
इन बातन शोभा नहिं पावौ, लाज की गारी गाते ।।
यहां हमें गुरुजन को डर है, देखत आवत जाते ।।
नारायण कहुँ अन्त जो होते, तो याको फल पाते ।।९।।

❀ लालजी वचन सखी प्रति ❀

राग कान्हरा बागेसरी

गोरी देखिबे में भोरी छलबल में प्रवीन ।।
रति छबि निन्दित वदन अति सकुचन,
भूषण वसन तन वय की नवीन ।।
कुन्दकली दशन विद्रुम से अधर लाल,
दृगनकी शोभा लखि लाजे मृग मीन ।।
नेक हँसि हेरि मुख फेरि नारायण,
हम सो चतुर कियो अपने अधीन ।।१०।।

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग ईमन धीमा ताल–

मेरी डगर न रोको नन्दलाल ॥
तुम अपने जोबन के मद में, करत फिरत नितप्रति कुचाल ॥
महा ढीठ बरजो नहिं मानत, नये नये तोहि उपजें ख्याल ॥
नारायण तुम निपट अनीती, प्रगट भये व्रज आजकाल ॥११॥

❀ लालजी वचन सखी प्रति ❀

राग मांडकी सूरत–

क्यों जल भरिबे आई, इन घाटन पनिहारी ॥
भोरो भोरो वदन मदन मन मोहै, बातें करत प्यारी प्यारी ॥
अंग अंग मणि भूषण सोहैं, रूप की खिली फुलवारी ॥
मधुर मधुर अधरन मुसिकावत, मन हरिबे की बिचारी ॥
जित चितवत तित करत है घायल, तो सम कौन शिकारी ॥
नारायण जिन देर लगावो, देओ जगात हमारी ॥१२॥

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग झंझोटीका जिला–

जिन मग रोको नन्दकिशोर ॥
तोहि उरझन की बानि परी है, साँझ तकत नहिं भोर ॥
देर लगत मोहि सास रिसावै, तुमैं छैल नित रार सुहावै ॥
इन कुचाल कछु हाथ न आवै, गागरिया दई फोर ॥
तुम अति चंचल छैल विहारी, कैसे कूख रखे महतारी,
यह अचरज मोकों है भारी, घर घर तेरो शोर ॥
नारायण अब क्यों इतरावो, भई सो भई न बात बढ़ावो ॥
ताही कूँ तुम आँखि दिखावो, जो होय तेरा बन्दोर ॥१३॥

(समाजी वचन)

दोहा—झटकि लाल ब्रजबाल कर, तोरि मोतियन हार ।
बोले पुनि चंचल चपल, कहा बढ़ावत रार ।।१४।।

❀ सखी वचन ❀

राग भूपाली

नन्दलाल कुचाल न कर इतनी ।।
देखत हैं मग नारी नगर की, और सखी संग की जितनी ।।
जासो कोऊ बुरो नहिं माने, बात कहो मुख सों तितनी ।।
नारायण जापै इतरावो, सो ठकुराई है कितनी ।।१५।।

वार्त्तिक

फिर सखी आपस में कहिबे लगीं चलो री बीर ! याकी मैया सों चलिकें कहो, यह यौं नहीं मानैंगो, तब आप बोले– तुम भले ही जाय कहो, मेरो कोई कहा करेगो, ऐसे कहिकें चले आये, अरु नागरी भेष धरकें मारग में ठाढ़े ह्वै रहै । जब थोरी देर पीछे सखी हू आय पहुँचीं, अरु इनको नई रूप मनोहर निरखिकें बूझिबे लगीं, अरी साँवरी सुकुमारी तू यहां कैसे ठाढ़ी है, तब आप बोले, अरी बीर आज मैं भोर ही यमुना जल भरिबे गई हती, तहां नन्द के ढोटा ने मोसों कैसी कैसी कुचाल करी हैं ।।१६।।

❀ नवनागरी वचन सबनसों ❀

राग भूपाली–

सखि जाने कहांसों अचक आय, लंगर मेरी गागर फोरि गयो ।।
नई चुँदरिया चीर चीरकर, निपट निडर पुनि आँखि दिखावै,
देखि बीर अति कोमल बैयां, दोउ कर पकरि मरोरि गयो ।।

मोसों कहै सुनि एरी सुन्दरी, तो समान व्रज सुघर न कोऊ,
नखसिख लों छबि परख निरख मुख, सघन कुंजकी ओर गयो ॥
कहँ लग कहों कुचाल ढीठ की, नाम लेत मेरो जिय कांपे,
नारायण मैं घनो बरजि रही, मुतियन की लर तोर गयो ॥१७॥

राग कालिंगड़ा

आज श्याम मेरी गागर फोरी ॥
गागर फोरी भला सो तो फोरी, ताहू पै लंगर बहियां मरोरी ॥
लोक लाज कुलरीति मर्यादा; एक साथ उन तृण सम तोरी ॥
आप समान सखा सँग नटखट, कै रोकत मग कै करैं चोरी ॥
मैं वाकी कछु मोल लई हूँ, मन चाहै सो करै बरजोरी ॥
नारायण सब बदलो लेउंगी, औरन की सम जाने न भोरी ॥१८॥

❀ सखी वचन नवनागरी प्रति ❀

राग ईमन कल्याण

यमुना तट काहे कों अकेली गई ॥
रीति भाँति नहीं जाने यहँ की, तू ब्रज आई नई ॥
जो तेरो उन बैयाँ मरोरी, गागर फोर दई ॥
याही में भाग समझ नारायण, और न अधिक भई ॥१९॥

❀ नवनागरी वचन सखी प्रति ❀

ठुमरी झंझोटीका जिला

एरी मोहि बाँसुरी में नाम लैलै टेरै री ॥
ऐसो री निलज भयो, जोबनके मद कर, सबनके आगे हँसि हेरै री ॥
निपट निडर मेरो अचरा पकर करि, सिरसों गगरिया गेरै री ॥
नगर नारि निरखत नारायण, डगर बगर नित घेरै री ॥२०॥

वार्त्तिक

अरी बीर मैं वाकी कौन कौन सी कुचाल कहूँ ।।२१।।

राग ईमन

कल को छोहरा ढीठ लंगर मोहि, गारियां दै दै जात ।।
संग की सखी सुनत सब ठाढ़ी, नेक नहीं सकुचात ।।
ज्यों ज्यों बरजत हूँ मैं वाकों, त्यों त्यों अति इतरात ।।
नारायण ब्रजमें रहूँ कैसे, जहां नित प्रति उतपात ।।२२।।

वार्त्तिक

हे सखी ! अब व्रजमें कैसे बसूं, सखीने कही अरी डरै क्यों ?
चलि यशोदा पै कहि आवें, फिर वा ढीठसों निबट लैंगी ।।२३।।
दोहा—नारायण जोगी जिसे, ध्यान धरत दिन रैन ।
ताहि व्रजवधू संगलै, चली उराहनों दैन ।।२४।।

❀ नवनागरी वचन यशोदा प्रति ❀

रेखता–

सुनिले यशोदा रानी, तू लाल की बड़ाई ।।
सब लोक लाज वाने, जमुना में धोय बहाई ।।
भोरैंही मैं गई जो, जल भरिबे काज भैना ।।
पीछे सों आय अचानक, उन मूँदे मेरे नैना ।।
डरपी मैं हाय को है, तब बोले टेढ़े बैना ।।
हौं तो रही अकेले, वा संग ग्वाल सैना ।।
तब सबने हो हो करिके, तारी मेरी बजाई ।।सु०।।१।।
हँसि हँसिके छैलमो सों, करिबे लगो ठिठोली ।।
यह छबि तिहारे मुखकी, अब कासों जावे तोली ।!
निरखै कबू बदन को, कबहूँ वह छुवै चोली ।।

मैं तो सकुचकी मारी, वासों कछु न बोली ।।
पुनि बहियाँ मेरी झटकी, गागर धरनि गिराई ।।सु०।।२।।
अँगिया के बंद तोरे, चूँदरि झड़ाक फारी ।।
दुलरीके निरखिबें को, गलबहियाँ मेरे डारी ।।
यह सब कुचाल देखें, मग ठाढ़े पुरुष नारी ।।
ताहू पै नाम मेरो, लैकर सुनावै गारी ।।
गुरुजनमें मेरी वाने, यह विधि करी हँसाई ।।सु०।।३।।
ज्यों ज्यों कहूँ मैं हट रे, त्यों त्योंही दूनौ अटकै ।।
मुसक्यावै दृग मिलावैं, भ्रकुटी चलावै मटकै ।।
कर करके सैनाबैनी, तन पर से चीर झटकै ।।
अब और कहा कहूँ मैं, गलहार ह्वै कें लटकै ।।
एक साथ वाने ऐसो, पकरी निलज्जताई ।।सु०।।४।।
कबहूँ कहे बता री, तू क्यों अकेली आई ।।
कै घरमें तेरे पति की, तोसों भई लराई ।।
तू चलि भवन हमारे, करि मोसों मित्रताई ।।
विधना ने तेरी मेरो, जोरी भली बनाई ।।
नारायण वाकी बातें, सुनिके मैं अति लजाई ।।५।।२५।।

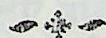
वार्त्तिक

तब नंदरानी ने करी अरी सखी ! मेरो लाल तौ जाने कौनसे वनमें गैया चरावत होयगो, तू क्यों वाको वृथा दोष लगावै । तब सांवरी बोली, अरी ! तू वाके गुण कहा जाने, कहूँ यहां ही ऊधम करत डोलत होयगो । जो तू न माने तौ हम दिखाय भी देंगी । इतनी कहिके पुनि भवनते बाहर आयके आपस में कहिबे लगीं, क्यों बीर ! अब यशोदा कूँ कैसे सांच आवे, तब सांवरी बोली–मोकूँ लालजी बनायके दूरसो यशोदाकूँ दिखाय

दीजो कि देख ले, अब तिहारो श्यामसुन्दर कौनसे वनमें गऊ चराय रह्यौ है ? तब सबनने कही हम्बै सखी ! यही ठीक है, फिर सांवरी ने ओट करिके जब अपनो निज सरूप प्रगट कियो, तब एक संग सब सखी अचरज करके निहारबे लगीं, न सांवरी कहत बने न सांवरो कहत बने, फिर हँसि हँसिके कहिबे लगीं, धन्य हौ लालजी महाराज ! अपनी मैया हू सों न चूके, तब आप बोले—अरी सखी ! कहूँ चतुरहू चूकं हैं ? ॥२६॥

दोहा—ये लीला यदुनाथ की, जो सुनिहै चित लाय ।
नारायण ताके सदा, श्रीपति रहें सहाय ॥२७॥

इति श्रीपनघट लीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत सम्पूर्ण ॥५॥



अथ नवलसखी की दान लीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—धनि व्रजवासी नारि नर, धनि वृन्दावन धाम ।
नारायण सुरपति जिन्हें, निशदिन करत प्रणाम ॥१॥
प्रात समय ब्रज नागरी, सजि अपनो शृङ्गार ।
गोरस बेंचनकों चलीं, गजगामिनि सुकुमार ॥२॥
मग में ठाढ़ो सांवरो, रोकि सबन की गैल ।
रूपसिंधु अरविंद दृग, रसिक शिरोमणि छैल ॥३॥
जब पहुँची ढ़िग आयके, मृगनैंनी वरवाम ।
तिनहिं देखि मुसक्यायके, बोले सुन्दर श्याम ॥४॥
कहां जाउ ठाढ़ो रहौ, तुम्हैं रूप अभिमान ।
अब आगे पग जिन धरौ, बिना दिये दधि दान ॥५॥
सुनत वचन नंदलालके, हंसीं सकल व्रजबाल ।
देखो री अब सांवरो नई चलत है चाल ॥६॥

एक सखी की भुज पकरि, हँसि बोले ब्रजराज ।
प्यारी तू आई नई, दही बेंचिबे आज ॥७॥

❀ लालजी वचन नवलसखी प्रति ❀

ठुमरी खम्माच का जिला—

आज तू नवेली दधि बेंचबे कूँ आई री ॥
जोबन की उमँग सों झूमत चलत,
गजमत्त हू की गति तै लजाई री ॥
नैंनन के बान भौंह तान के कमान कहौ,
कौन पै यह करी है चढ़ाई री ॥
रूप की निकाई सुघराई नारायण,
कहाँ लग करूँ मैं बड़ाई री ॥८॥

❀ बड़ी सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग कालिंगड़ा

लाल तुम काहे को इतरावो ॥
मोर पंख उरसे पगिया में, यापै बड़े कहावो ॥
जब त प्रगट भये तुम ब्रज में, घर घर धूम मचावो ॥
माखन छाँछ चुराय हमारी, मिल गोपन सँग पावो ॥
फटी पुरानी कामरि ओढ़ौ, वन वन धेनु चरावो ॥
नारायण फिर कौन भरोसे, एते गाल बजावो ॥९॥

❀ लालजी वचन नई सखी प्रति ❀

राग दादरा आड़ा कालिंगड़ा

हमारो दान लेउ ब्रजनारी ॥

मदमाती गजगामिनि डोलै, तू दधि बेचनहारी ॥

रूप तोहि बिधनाने दीनों, ज्यों चन्दा उजियारी ॥
मटुकी सीस कटीले नैना, मुतियन मांग सँवारी ॥
हार हमेल गरे में राजैं, अलकें घूँघर वारी ॥
या ब्रज में जेती सुंदरि हैं, सब हम देखी भारी ॥
नारायण तेरी या छबि पै, कान्ह जाय बलिहारी ॥१०॥

❀ बड़ी सखी वचन ❀

राग कालिंगड़ा

मेरी बात सुनो यदुराई ॥
याकी दधि अबही मति लूटौ, तुमको नन्द दुहाई ॥
याकी सास भोर ही याको, भवन हमारे लाई ॥
गोरस बेंचन याहि सिखावौ, यों कहि संग पठाई ॥
नई वधू पुनि निपट ही भोरी, नहिं जानत चतुराई ॥
तासों याहि आज मति रोकौ, अबहीं गौने आई ॥
लाज करति मुख घूँघट ओढ़े, तुम्हें देखि सकुचाई ॥
नारायण हठ तजौ सांवरे, निरखत लोग लुगाई ॥११॥

❀ लालजी वचन सखी प्रति ❀

राग झंझोटीका जिला

सखी तुम नेक तौ रूप दिखावौ ॥
घूंघट पट मुख ओट करौ क्यों, याहि तनक सरकावौ ॥
ब्रज में लाज करै सो बौरी, हँसि हँसिके बतरावौ ॥
नारायण हम दोउ बरोबर, क्यों इतनी सकुचावौ ॥१२॥

राग झंझोटी

सखी तुम मेरी ओर क्यों न हेरो ॥
बरसाने में पीहर तेरो, कै कोउ गांव गमेरो ॥

तू मोसों इतनी क्यों सकुचत, मैं हूँ देवर तेरो ।।
घूँघट खोलि एरी नवनागरि, दान दीजिये मेरो ।।
लाज करो गोरस क्यों बेचौ, घर घर सांझ सबेरो ।।
नारायण नित कुंजगलिन में, रहै कान्ह को डेरो ।।१३।।

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग झंझोटी–

याको घूँघट पट न उघारो ।।
परत्रिय देख अनीति करौ तुम, नई नई रीति निकारो ।।
बड़े महरि की पुत्रबधू है, नेक तौ बात बिचारो ।।
भले बुरे की लाज न तुमको, मन भावति करि पारो ।।
दधि गोरस पै दान लगावत, मानों राज तिहारो ।।
नारायण है कौन हमारे, मग को रोकन वारो ।।१४।।

वार्त्तिक

लालजी बोले—अरी सखी ! तू इतनी क्यों हाथ नचाय रही है, घूँघट तो हम वाको उघारें, कछु तिहारो तौ नाहीं उघारें ।।१५।।

दूती की चाल–

तू इतनों क्यों हाथ नचावत, तेरो कछु कोई घूँघट खोलै ।।
जो ऐसी कुल लाजवती तू, तौ क्यों भोर ही घर घर डोलै ।।
जोबन माँहि फिरै मदमाती, आप समान न और को तोलै ।।
नारायण दधि बेंचनहार तू, नेक न बात बिचारिके बोलै ।।१६।।

❀ सखी वचन ❀

बरवा दूती की चाल–

आप भले गुणवान बनो तुम, औरन में अति खोट बतावो ।।
माखनचोर कहावत हौ नित, तोऊ नहीं मनमाँहि लजावो ।।

रतन जड़े आभूषण पहरे, छाँछ लिये करको फैलावो ।।
नारायण सब लोग हँसैंगे, प्रथम उतारि इन्हें धरि आवो ।।१७।।

❀ लालजी वचन सखी प्रति ❀

दोहा—दधि जोबन नवरूप को, जब लगि देउ न दान ।
तब लग जान न पाउगी, कोटिक करो सयानि ।।१८।।

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग भैरवी–

मारग दीजै मोहन प्यारे ।।
इन बातन शोभा नहिं पावो, तुम हौ राजदुलारे ।।
बहुत हँसी जिन करो सांवरे, सुनि हैं कन्त हमारे ।।
तुमरो कोई कछू न करैंगो, हमैं मूँदैंगे तारे ।।
देखे सुने नहीं हम कबहूँ, तुम सम झगरन हारे ।।
नारायण क्यों रारि बढाओ, रे द्वै बापन वारे ।।१९।।

❀ लालजी वचन सखी प्रति ❀

राग कालिंगड़ा–

ग्वालिन दान देत इठलावे ।।
नित प्रति ही तू या मारग ह्वै, क्यों दधि बेंचन जावै ।।
हमें कहत तू द्वै बापन को, अपने क्यों न गिनावै ।।
नारायण देओ कोटिक ताने, कर नहिं छूटन पावै ।।२०।।

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग मल्हार–

छैल गैल मति रोकै तू हमारी रे ।
चाल कुचाल चलौ जिन चंचल,
चरचा करें सब पुर नर नारी रे ।।

हम सुकुमार ठाढी काँपति हैं,
शिर पर दधि को मटुकिया भारी रे ।।
नारायण ब्रज कौन बसैगो,
ऐसी अनीति जो करनी बिचारी रे ।।२१।।

❀ लालजी वचन सखी प्रति ❀

राग मल्हार तीनताल—

जोबन की मदमाती डोले री गुजरिया ।।
अंग अंग जोबन की उठति तरंग नई ।
नैंना कजरारे भौंहें तिरछी नजरिया ।।
हाथन में चूरी नकबेसर करनफूल ।
मुंदरी ललित छबि देत अँगुरिया ।।
अब लों तोसो नहिं देखो नारायण ।
दधि की बेचनहारी नन्द की नगरिया ।।२२।।

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग आड़ा कालिंगड़ा-

छांड़ौ मेरी गैल न तौ गारी मैं सुनाऊंगी ।।
औरन के भूले कहूँ मोसों जिन अटको ।
अबई यशुमति पै पकरि लै जाऊँगी ।।
पहले ही सों अपनी बड़ाई कहा करूँ मैं ।
देखिये तौ कैसे तुहें नाच नचाऊँगी ।।
जो मैं तोहिं सूधो न बनाऊँ नारायण ।
तौ मैं निज बाप की न आज सौं कहाऊँगी ।।२३।।

❀ लालजी वचन सखी प्रति ❀

राग बरवें पीलू का जिला—

पहले मेरो दान चुका री, पीछे बतराइयो प्यारी ।।
तो समान तुहिं देत दिखाई, नवजोबन नव सुन्दरताई ।

और कहां लों करों बड़ाई, मोहन को मन मोहनहारी ॥
अति बांके हैं नैंन तिहारे, सान धरे पैने अनियारे ।
जिनने हमैं घायल करि डारे, इन समान नहिं बाण कटारी ॥
नारायण जिन भोर लगावो, देउ दान अपने घर जावो ।
क्यों मटुकी चौपट करवावो, देख हँसेंगे पुर नर नारी ॥२४॥

❀ सखी वचन सखी प्रति ❀

राग कान्हड़ा बागेसरी–

जाने दै री जाने दै तु यासों मति बोलै ॥
यह लंगर निपट्यो भयो ब्रज में, डगर चलत छबि तोलै ॥
जाहि न लाज सकुच गुरुजन की, हँसि हँसि घूँघट खोलै ।
नारायण यह दृगन को रोगी, पर त्रिय झाँकत डोलै ॥२५॥

❀ अपर सखी वचन सखी प्रति ❀

राग दरबारी कान्हड़ा–

सब मिलि चलो नन्दगृह माई ॥
इनहीं के सुत भयो अनोखो, नई नई रीति चलाई ॥
माँगत दान न कान काहू को, ऐसी कहा लरिकाई ।
नारायण या ग्राम वास करि, अब हम बहुत अघाई ॥२६॥

❀ लालजी वचन सब सों ❀

दोहा—अहो नवेली गुण भरी, धरी मटुकिया शीस ।
दधि जोबन को दान हम, लेंगे बिस्वेबीस ॥२७॥

❀ बड़ी सखी वचन नवल सखी प्रति ❀

दोहा—अरी सुहागनि सुंदरी, नवदुलहिन सुकुमार ।
हठ माहिं छाँड़त साँवरो घूँघट नेक उघार ॥२८॥

(समाजी वचन)

दोहा—घूँघट पट कछु खोलि के, मुसक्याई ब्रजबाल ।
देखि मनोहर रूप को, मगन भये नँदलाल ॥२९॥

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग कालिंगड़ा

आपनो दान लेउ नँदलाल ।
रस के भरे वचन अति अटपट, कहन लगी ब्रजबाल ॥
दोऊ ओर दृग सों दृग लागे, हिय में प्रेम विशाल ।
नारायण या विधि सो हँसि हँसि, कर चुकवत गोपाल ॥३०॥

वार्तिक

सखी बोली अजी लालजी महाराज ! आप तौ दान माँगते रहे, फिर क्यों न लियो, तब लालजी बोले अरी सखी ! दधि मांगिबे को तौ हमारो मिस रह्यो, यह रूपमाधुरी निरखि के सब दान भरि पायो ॥३१॥

दोहा—ये लीला जो नित सुनैं, गावैं दै दै ताल ।
नारायण तापै कृपा, करें लाड़िलीलाल ॥३२॥

इति श्रीनवलसखी की दान लीला श्रीनारायण स्वामीजीकृत समाप्त ॥६॥

अथ श्रीछद्म दान-लीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—दधिमटुकी शिर पै धरी, चलीं बेंचिबे बाल ।
नारायण ठाढ़े गली, छैलछली नँदलाल ॥१॥

❀ लालजी ❀

राग खम्माच–

ठाढ़ो रहौ ठाढ़ो रहो रूप निधान ।
बरजोरी कित जावो दौरी, बिना दिये दधि दान ॥
काहू भाँति उपमा मैं तेरी, कर नहिं सकत बखान ।
घूँघट में मुख दमकत ऐसे, ज्यों बादर में भान ॥
हम निज कर मांगत रिसाति तुम, भलो नहीं यह बान ।
नारायण तुम आजहि आई, नई नई पहिचान ॥२॥

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग ईमन कल्याण–

मनमोहन मोसों मति अटको ।
झटकौ न चीर, मटकौ न छैल, दधि की न गैल मटुकी पटको ॥
जैसे कछु तुम हौ सब जानूँ, गुण तुम्हार अब कहा बखानूं ।
तनक तनक रस काज राज रस, भवन भवन निशि दिन भटको ॥
तुम कब के ब्रज में भये दानी, रोकत हो मग नारि बिरानी ।
दधि गोरस की लूट मचाई, तुम्हें न काहू को खटको ॥
नारायण अबहूँ कहि मानो, औरन की सम मोहि न जानो ।
निकसि जायगी सब लँगराई, चलो हटो घर को सटको ॥३॥

(समाजी वचन)

दोहा—झगर झगर बतरात मग, निपट अनोखो छैल ।
मटुकी फोरी लकुट सों, बिखर गयो दधि गैल ॥४॥

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग मल्हार–

क्योंरे छैल मेरी मटुकिया पटकी ।

करके ढिठाई, मग दधि बिखराई,
सब चूरी करकाई, सुकुमार बैयां झटकी ।।
अबहीं यशोदा ढिंग पकरि लै जाऊँ तोहि ।
एक न चलैगी तेरी बात नटखट की ।।
बदलो लेउँगी न डरूँगो नारायण ।
कौन सो गरज मेरी, तोसों अब अटकी ।।५।।

❀ अपर सखी वचन ❀

दोहा—तू यासों जीतै नहीं, लोग सुने ह्वै भीर ।
जो कछु भई सो भई अब, चलि अपने घर बीर ।।६।।

❀ सखी वचन सखी प्रति ❀

राग कालिंगड़ा

मैं कैसे घर जाऊं मोसों ननँद लरैगी ।।
आगेहि चबाव मेरो करति है निशि दिन,
मटुकीके बिन देखे अधिक जरैगी ।।
कुटिल कुचाल वाके मनकी न थाह परै,
नेकहा में झूठ मूठ साख भरैगी ।।
याहीसों मैं अति घबराऊं नारायण,
जाने वो कहा मोपै दूषण धरैगी ।।७।।

(समाजी वचन)

दोहा—श्रीदामा को भेष धरि, प्यारी परम सुजान ।
प्रीतम के ढिंग आयके, या विधि करत बखान ।।८।।

राग कालिंगड़ा

लाल तोहि मैया बेग बुलावै ।।
बछरा छूटि गयो है तेरो, पकरन मैं नहिं आवै ।।

मोहिं कह्यो तू जा लिवाय ला, जहां ताहि खेलत पावै ।।
नारायण अब चल तू झटपट, नातर गाय चुखावै ।।९।।

वार्त्तिक

लालजी बोले चल सखा, तब सखी बोली अब तो सखाकी हिमायत सों छूटि चले हौ, जब अकेले पाओगे तब समझूँगी। फिर मारगमें प्यारीजी ने बूझी, लालजी-तुमने हमकों पहचान्यो, लालजी बोले-हे श्रीदामा! आज तू कछू भाँग पी आयो है, जो ऐसो बूझै, तब श्रीजी हँसिके बोली ।।१०।।

दोहा—हमहूँ छल कैसो कियो, लखि न सके गोपाल ।
निरखि ललीकी छबि नई, पुनि पुनि हर्षत लाल ।।११।।

वार्त्तिक

लालजी बोले बलिहार या भेष पै ।।१२।।

दोहा—नारायण यह गुप्त रस, श्रवण करै जो कोय ।
या जगमें सुख सों रहे, अन्त समय गति होय ।।१३।।

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत श्रीछद्म दानलीला समाप्त ।।७।।



अथ देवीपूजन लीला प्रारम्भ

* समाजी वचन *

दोहा—रतनजटित वृन्दाविपिन, सब सुषमा की खान ।।
गौर श्याम क्रीड़त जहाँ, मंगल मोदनिधान ।।१।।
अरुण उदय नवनागरी, करि मज्जन शृङ्गर ।।
देवी पूजत प्रेम सों, प्रीतम हित उरधार ।।२।।
उत सों नागरि भेष धरि, नन्दनँदन ब्रजराज ।।
गौरी पूजत मिल चले, प्रिय के छलिबे काज ।।३।।

राग कालिंगड़ा–

नागरी भेष धरयो गिरधारी ।।
तहां आय पूजत देवी कों, जहाँ पूजत वृषभानदुलारी ।।
प्रथम ताहि स्नान करावत, अति हितसों लै कंचन झारी ।।
पुनि आभूषण पट पहराये, भाल तिलक गल माला डारी ।।
धूप दीप नैवेद्य पान धरि, प्रेम सहित आरती उतारी ।।
हाथ जोरि कछु बिनती कीनी, हो प्रसन्न गिरिराजकुमारी ।।
बूझति कुमरि कहाँ रहौ सजनी, तुम मोहि लगति प्राणते प्यारी ।।
नारायण बलिहार चलौ अब, मिलि दोऊ निरखें फुलवारी ।।४।।

❀ सखी वचन सखी प्रति ❀

राग जौनपुरी टोड़ी–

आज कौन राधे सँग डोलै ।।
नवयौवन गजगामिनि भामिनि,
हरषि निरखि निज छबिको तोलै ।।
श्याम वरण मुखचन्द्र प्रकाशित,
कबहुँक घूँघट कबहुँक खोलै ।।
नारायण यासों चलि बूझ,
जो हमसों यह तनकहुँ बोलै ।।५।।

❀ सखी वचन प्रियाजी प्रति ❀

दादरा झंझोटीका जिला–

कहो प्यारी यह कहां सों आई ।।
कहा नाम को गाम है याको, कौन की है यह जाई ।।
यह हमसों इतनो क्यों सकुचति कै कछु तुमने सिखाई ।।
नारायण देखी न सुनी हम, नारि ते नारि लजाई ।।६।।

❀ श्रीजी और सखी वचन परस्पर ❀

राग काफी–

री मेरी या सजनी सों आजहि भई है चिन्हार ॥
देवी पूजिके आई मों संग, निरखन कों फुलवार ॥
मेरे हित इन फूल बीनके, ललित बनाये हार ॥
बंदनी करनफूल अरु गजरे, भूषण विविध प्रकार ॥
यह भूषण प्रीतम की रचना, यह वाकी अनुहार ॥
नारायण चाहै मति मानो, है यह नन्दकुमार ॥७॥

❀ श्रीजी वचन ❀

झंझोटीका जिला–

भलो भेष नागरी को बनि आये प्यारे ॥
पग में पायल बाजें, हाथ गजरा रे ॥
झुमका किलोल करैं, काननमें न्यारे ॥
मोतिनकी मांग पर, जाऊँ बलिहारे ॥
चंदके निकट सोहैं, नेक नेक तारे ॥
नैन सैन मीठे बैन, रूप के उजारे ॥
नारायण अंग निरखि, कोटि मदन हारे ॥८॥

दोहा—लीला श्यामा श्याम की, दुखभंजन सुखरूप ॥
नारायण जे नित सुनैं, ते न परैं भवकूप ॥९॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत देवीपूजन लीला सम्पूर्ण ॥६॥



अथ नवदुलहिन लीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—भानु नगर में एक ने, सुत को कियो विवाह ।
नवदुलहिनि आई भवन, भयो परम उत्साह ॥१॥

राग जैजैवंती—

एक के घर नवदुलहिनि आई ॥
सो ब्रजनारि लाज वश सोचति, कीरति-कुमरि न न्योत पठाई ॥
वे अपने मन कहा कहेंगी, इनके भले विवाह सगाई ॥
पांच बतासन के लालच सों, गीतन में काहू न बुलाई ॥
एक सखी बैठारि बहू ढिग, भरि थारी पकवान मिठाई ॥
नारायण लै चली बाइनों, जहाँ हुती राधे सुखदाई ॥२॥

दूती की चाल पै-

जब पहूँची प्यारी के महलन, इनको देखि कुंवरि हरषाई ॥
करि आदर बैठार सबन कूँ, कछु विवाह की बात चलाई ॥
क्षमा करो यह चूक हमारी, मैं तिहारे नहिं पहुँचन पाई ॥
नारायण गई भूलि काम में, तुमकूँ देखि बहुत सकुचाई ॥३॥

दूती की चाल पै-

राजकुमरि की देखि सुघरता, हरषत सब मिलि करत बड़ाई ॥
क्यों न कहौ तुम बचन अमी सम, प्रगट भानुकुल की प्रभुताई ॥
बोली कुँवरि बहू सँग लाती, तब होती मेरे मन भाई ॥
नारायण हमहूँ सब देखत, वाके मुख की सुन्दरताई ॥४॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—आदि अंत लौं जो कछू, बातें भईं रसाल ॥
भवन द्वार सुनते रहे, रसिया मोहन लाल ॥५॥
प्यारी के मन की लखी, चलीं सखी बहु लैन ॥
पग पग में हरषत हियो, घड़ी चार गइ रैन ॥६॥
इत दुलहिनि सुकुमारके, दृगन भरी अलसान ॥
तन सों वसन उतारिके, सोय रही पट तान ॥७॥

होनहार जैसी कछू, तैसो लागत योग ॥
ढिगहू की ओंघन लगी, भलौ बन्यो संयोग ॥८॥
रसिकलाल तासों प्रथम, ताके भवन पधार ॥
दुलहिनि के पट पहरिकें, बैठे घूँघट मार ॥९॥

भजन दरबारी कान्हड़ा—

दुलहिनि को हरि रूप बनायो ॥
लहँगा पहिरि ओढ़ि चूँदरिया, घूँघट पट मुख पै लटकायो ॥
ज्यों के त्यों बैठे बनठन कें नखशिख लौं निज बदन दुरायो ॥
सखी आय देखी जब दुलहिन, ढिग सजनी कों ओंघत पायो ॥
कर झकझोरि जगाय ताहि पुनि, हरषित सकल वृतान्त सुनायो ॥
नारायण बहु के लैबे कूँ, भानुकुमरि ने मोहि पठायो ॥१०॥

(समाजी वचन)

दूती की चाल पै-

संग लिवाय चलीं दुलहिनि को, लै तारो निज भवन लगायो ॥
लखे न कौतुक नन्दलाल के, निज बहु को घर में मुँदवायो ॥
आवत देखि बहू को प्यारी, निज मनमें अति हर्ष बढ़ायो ॥
नारायण उठिके करि आदर, हाथ पकरि पुनि ढिग बैठायो ॥११॥

❀ प्रियाजी वचन ❀

दूती की चाल पै—

भूषण वसन अमोल मँगाये, रतनन को इक थार भरायो ॥
ले दुलहिनि तू बदन दिखाई, या कारण हम तोहि बुलायो ॥
वस्तु अनेक दई हैं तोऊ, घूँघट पट नहिं नेक उठायो ॥
नारायण सब हँसत परस्पर, आज बहू ने हमें हरायो ॥१२॥

दूती की चाल पै–

तब बोली दुलहिनि की सासू, याने तौ इक स्वांग फैलायो ॥
हमकूँ बिदा करो श्रीराधे, आप दोऊ कीजै मन भायो ॥
निपट हठीलो ह्वै बापन की, मानत नहीं बहुत समझायो ॥
नारायण निज भवन गईं सब, फिर याकूँ प्यारी ने बुलायो ॥१३॥

दूती की चाल पै–

ललिता कहै सुनो प्यारीजू, दूसर पहर बजन पै आयो ॥
भली बहू याकी सेवा में, खान पान तुमने बिसरायो ॥
मैं देखूँगी हठ अब याको, याने तौ बहु खेल खिलायो ॥
नारायण यों कहि पट झटक्यो, निकसि पर्यो यशुमतिको जायो ॥१४

वार्त्तिक

सब हँसि हँसिकें कहन लगीं, बलिहार या सांवरी बहू पै! फिर पिछिलौ प्रसंग उनके घर जायबेहू को होयबे लग्यो, तापीछे सखिन ने ब्यारू के थार सजायकें आगे लाय धरे ॥१५॥

राग सोरठ--

ब्यारू करत दोऊ सुकुमार ॥
मठरी ठौर जलेबी लाडू, सेव समोसे दार ॥
पूरी लुचई पुवा कचौरी, भाजी विविध प्रकार ॥
अदरख चटनी बेर मुरब्बा, पापर सोंठ अँचार ॥
खजला दूध मलाई खुरचन, खिरसा मोहन थार ॥
शीतल जल पुनि पीवत रुचि सों, नारायण बलिहार ॥१६॥

❀ सखी वचन ❀

राग जैजैवंती—

आज इन दोउन पै बलिहार ।
नंदलाल रतिपति विशाल छबि, चन्द्रवदन वृषभानदुलारी ॥

बैठे कुंजभवन बतरावत, उपजावत सुख प्रीतम प्यारी ।
नारायण उपमा कहा दीजै, मैं अपने मन बहुत बिचारी ॥१७॥
दोहा—तजि कुतर्क जो नित सुनै, यह लीला रसपुञ्ज ।
नारायण ताकूँ युगल, वास देत निज कुंज ॥१८॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत नवदुलहिन लीला सम्पूर्ण ॥१०॥



अथ मानलीला (दोहावली) प्रारम्भ

सो०—विनय करूँ कर जोरि, रसिक जनन के चरण में ।
नारायण चित डोरि, लगी रहै नित युगल पद ॥१॥
दोहा—अगणत गण रूपक यमक, इनको मोहि न ग्यान ।
गुण तुम्हरी सर्कार के, तासों लीजो मान ॥२॥
एक रैन निज पिया सों, प्रिया मुदित मन होय ।
तोते की सुनिके कथा, रही कुंवरि पुनि सोय ॥३॥
बड़े भोर उठि सेज सों, श्री ब्रजराय कुमार ।
स्नान भवन में न्हाय कें, कियो नयो भृङ्गार ॥४॥
सुपने में देख्यो लली, लाल और के साथ ।
उठि बैठी तब मान करि, धरि कपोल तर हाथ ॥५॥
भुंहें चढ़ी फरके अधर, रोम ठढ़े सब अंग ।
मान भूप लै कटक को, चढ़ि आयो इक संग ॥६॥
हँसत न मुख चितवत न दृग, सुनत नहीं कछु कान ।
द्वार द्वार पै चौकियाँ, बैठारीं नृप मान ॥७॥
मन की गति मति लखि सखी, ठढ़ी छड़ी लै द्वार ।
धोखे में आवें न धँसि, कपटी नन्दकुमार ॥८॥
इत सों प्रिय के ढिंग चले, प्रीतम परम प्रवीन ।
सुरत युद्ध की लालसा, तामें अति लवलीन ॥९॥

धनुषबाण बरुनी भुँहें, मृदु मुसक्यान कटार ।
तिरछी चितवनि सेल सम, हँसि हेरन तलवार ॥१०॥
समर साज सबही सजे, अरु शृङ्गार अनेक ।
यह न लखी गढ़ मान ने लियो प्रथमही छेक ॥११॥

❀ शृङ्गार श्रीलालजी ❀

दोहा–चरण चारु नूपुर सजत, बजत करत जनु गान ।
मन मृग भूलत चौकड़ी, सुनि बरवे की तान ॥१२॥
रतन जड़े तिन पै कड़े, मनो गढ़े रतिनाथ ।
बड़े कड़े मन के निरखि, लै मन हाथोंहाथ ॥१३॥
भई न पटतर लाल की, रवि शशि हिये लजाय ।
सकुच सहित बनके कड़े, पड़े चरण में आय ॥१४॥
कटि नटवर की निरखि दृग, चौंधत मुदित निमेष ।
क्षुद्र भाग कब सकत हैं, क्षुद्र घंटिका देख ॥१५॥
कर कंकण मणि जटित को, हटत आँख कब देख ।
मुँदरी कह मुँद री पलक, दृष्टि लगावत पेख ॥१६॥
श्याम वरण चितहरण के, हाथन पै हथफूल ।
जिन्हैं तके मन भूलके, फेर न भूलै भूल ॥१७॥
पहुँची तक पहुँची नहीं, जिनकी सुरत विशाल ।
बन्द बन्द सों बाजुबन, बाँधि लई तत्काल ॥१८॥
हिये हार गये हार तक, निरखन हार विहार ।
उपमा कहत बनी नहीं, रहे निहार निहार ॥१९॥
नाक बुलाक सुहावनो, कुण्डल लोल कपोल ।
नख शिख लौं शृङ्गार बर, जाको तोल न मोल ॥२०॥
मुकुटमणी के शीश पै, मुकुटमणी छबि देत ।
कलँगी कल कल लैम दे, बरबस मन हरि लेत ॥२१॥

बँधे पेच के पेच बर, पेच पेच में पेच ।
फिर निकसै कब मन पड़ै, ऐसे पेच कुपेच ।।२२।।
केश वेश शोभा बनी, को करि सकै बखान ।
घुँघरारे कारे सघन, चिकने कान प्रमान ।।२३।।
कोमल अमल पुशाक बर, चुस्त चुनी सजि अंग ।
जाकी छबि निरखत गयो, निज छबि भूलि अनंग ।।२४।।
बागा जिन समझो इसे, बाग लाल अनुकूल ।
बड़े भाग या बागे के, जामें लाला फूल ।।२५।।
बिंधा न जो या रूप को, लखि कछु रहा सुचेत ।
नैन चोट सी ओटली, वचन वचन कब देत ।।२६।।
झूमत चलत मतंग गति, कबहुँ ठिठक ठहरात ।
मनो मदन मद पान करि, भरि उमंग में जात ।।२७।।
अधर मधुर हँसि हरत मन, कर बर कमल फिरात ।
भवन गवन चाहें कियो, रोक दिये कित जात ।।२८।।

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

भले कान्ह अभिमान मन, ठान न मो सम आन ।
मान समान न मान जिहिं, मिल्यो आज सन्मान ।।२९।।
ठढ़े रहौ न कहौ अहो, कहां चले रसखान ।
जाके मान गुमान तुम, कियो मान सच मान ।।३०।।

❀ कवि वचन ❀

सुनत सुन्न चितवत चकित, सोचत चित चितचोर ।
सुपन तकौ कै जागतौ, भलो भयो भ्रम भोर ।।३१।।
घबराये सुधि बुधि उड़ी, थरहर कांपत अंग ।
पानी मद को जो चढ़्यो, उतरि गयो इक संग ।।३२।।

अहो दई कैसी भई, कही कहा इन बात ।
प्यारी प्यार बिसारि के, मान कियो क्यों प्रात ॥३३॥

❀ लालजी वचन सखी प्रति ❀

सखी तोहि सों सांच कहि, सांचो है कै झूंठ ।
कहूँ झूंठ को नाम सुनि, सांची न जावैं रूठ ॥३४॥
रैंन तोहि सपनो भयो, कै तू आई देख ।
अथवा अपनो ओर ते, पढ़त मीन अरु मेख ॥३५॥

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

सुनत हँसी हरि को हँसी, हँसी न और प्रकार ।
अभी परैगी ए लला, झूंठ सांच की सार ॥३६॥

❀ कवि वचन ❀

तब मानी मन लाल शुक, सांच कहति ब्रजनार ।
बिरह जाल मो पै, दियो, मान शिकारी डार ॥३७॥

❀ लालजी वचन ❀

पुनि बोले भोले वदन, सो उपाय तू ठान ।
जा विधि पावै मान अब, भरी सभा अपमान ॥३८॥

❀ सखी वचन ❀

बहुतेरे तेरे पढ़े, जोड़ तोड़ छल छन्द ।
एक न मेरे ढिग चले, चतुराई ब्रजचन्द ॥३९॥

❀ लालजी वचन ❀

जो आज्ञा पाऊं सखी, आऊं तनक निहार ।
प्रिय मुख पंकज पै परो, कैसे मान तुसार ॥४०॥

❀ सखी वचन ❀

प्रीतम सो दिन अब गये, करत रहे उपहास ।
बिन बूझे जाते चले, दौर दौर के पास ॥४१॥

❀ लालजी वचन ❀

जब तो तू भोरी हुती, अब तो चतुर दिखात ।
पकरि छड़ी छाँटे ठढ़ी, बात बात में बात ॥४२॥

❀ सखी वचन ❀

कहा कहानी लै ठड़े, बात होय कछु बात ।
चलो हटो सरको परे, मोहि न भीर सुहात ॥४३॥

❀ लालजी वचन ❀

बिनय करत बानी घिसी, ठढ़े बीतियो याम ।
जिन में ऐसी निठुरता, तिन सों राखे राम ॥४४॥

❀ सखी वचन ❀

छल बल करि केती कहो, रहो न द्योंगी जान ।
चहे सुनो या कान ते, चहे सुनो वा कान ॥४५॥

❀ लालजी वचन ❀

पुनि अधीन ह्वै कर कहै, जोर जोर बिन जोर ।
सखी सखी ह्वै जिन बने, कृपन समान कठोर ॥४६॥

❀ सखी वचन ❀

सुनत हेरि हँसि फेरि मुख, बोली बोली मार ।
बिनय गिने को आप की, पै कहुँगी कहि डार ॥४७॥

❀ कवि वचन ❀

कही गई सुनि उन निकट, बिकट कियो जिन मान ।
छकी छबीली छबि निरखि, बिनत जोरि द्वै पान ।।४८।।

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

बिनय करूँ न करूँ कहो, कहा करूँ मतिधीर ।
बोले ते तव मान मैं, भिंग परेगी बीर ।।४९।।
चन्द्रमुखी चपला चमक, चतुराई की खान ।
कारण कवन कियो कहो, कुँवरि किशोरी मान ।।५०।।
जो ऐसे ही मान को, चोरी लेओ बुलाय ।
द्वारपाल फिर द्वार पै, क्यों राखे बैठाय ।।५१।।

❀ कवि वचन ❀

उक्त वचन के बान इन, जब मारे द्वै चार ।
द्वारपाल भजिबे लगे, सूने तजिके द्वार ।।५२।।

❀ श्रीजी वचन ❀

भौंह सौंह करि सैन सों, बूझन लगी सुजान ।
एक राग निबट्यो नहीं, तू कहा गावत तान ।।५३।।

❀ सखी वचन ❀

पिय चकोर बिन आप के, अति व्याकुल है आज ।
ज्यों झख जलते विलग गति, दरश देउ निशिराज ।५४।।
प्रीतम हाल हवाल लखि, अरी निठुर ब्रजबाल ।
लाल कहां अब लाल हैं, या छिन तुम हो लाल ।।५५।।

❀ कवि वचन ❀

सुनत उठी तन फुरफुरी, फिर बैठी अनखात ।
फिर फिर के फरके अधर, बोली वचन रिसात ।।५६।।

❀ श्रीजी वचन सखी प्रति ❀

चुपरी चुपरी जिन कहै, चुपरी चुपरी बात ।
मिलन सीखिबे दे उन्हें, उपरी उपरी गात ।।५७।।
यहां कहा कछु बटत है, अड़े खडे बन छैल ।
फैल फैल सोये जहां, वहीं मचावे फैल ।।५८।।
लाखन लखि लिख मन रखे, कपट किये जो श्याम ।
दया मया पति नहिं हया, जिनके सो किह काम ।।५९।।

❀ कवि वचन ❀

पय सुभाव सागर प्रिया, नीर मनो है मान ।
वचन उपायन सों भयो, विलग न मन खिसियान ।।६०।।
फिरि बगदी पिछले पगन, मुखते कढ़त न बैन ।
जिमि हारे पर सूरमा, आवत नीचे नैन ।।६१।।
देखत ही सखि को मुख, निज मुख भयो उदास ।
सुखनिवास विश्वास ते, भै निराश तजि आस ।।६२।।

❀ लालजी वचन ❀

क्यों मुरकी दुरकी इतै, कहा उपजियो ज्ञान ।
मुरकी मुरकी कान के, प्यारी मुरकी जान ।।६३।।

❀ सखी वचन ❀

लालन कहनी सो कही, वाने सुनी न कान ।
ऐसे गुरुते कब पढ़ी, झटपट छूटै मान ।।६४।।
साम दाम कहि कोटि विधि, समझाई तव हेत ।
सो काहू विधि प्राणपति, बात लगन नहिं देत ।।६५।।
हेम वरण श्रीलाड़िली, रोस कोट में आज ।
बैठी मान मचान पै, सुनो लाल ब्रजराज ।।६६।।

चहै सुनावो चारि षट, कै दशआठ पुरान ।
जाके मनमें मान है, सो कब मानत ज्ञान ।।६७।।

व्याकुलता लालजी

करत विचार विचारनिधि, बहु विधि उर धरि धीर ।
प्रिया कली ढिग में अली, किमि ह्वै पुजो समीर ।।६८।।

लालजी वचन

गहि ठोड़ी ब्रजनारि की, बार बार लै वार ।
गुण न भूलिहौं हरि असन, चार चार पै चार ।।६९।।

❀ सखी वचन ❀

साँवलियो द्वारो हटो, लाल बेर किहि काम ।
बूझो किसमिस मिलेंगी, मैं जामिनि हूँ श्याम ।।७०।।
धीर धरो जग धीर बड़, होत न धीर अधीर ।
भीर परी जो भीर ह्वै, ठढ़े द्वार करि भीर ।।७१।।

लालजी वचन

धरा धरूँ तो धर सकूँ, धीर न धार्यो जाय ।
जिन रस चाख्यो प्रेमको, तिन्हें न और सुहाय ।।७२।।
जान जान जिन मिस करो, होवै जान सुजान ।
जान न देवौ जान द्यो, नातर देवो जान ।।७३।।

कवि वचन

सखी लखो गति लाल की, निज मन रचत इलाज ।
दरश स्वाति बिन कल न लैं, पिया पपोहा आज ।।७४।।
मृगछौना किम संग लै, भीतर करूँ पयान ।
सनमुख मान चलाय रह्यो, बंक बिलोकन बान ।।७५।।

या विधि सों सोचत सखी, पुनि मन कियो विचार ।
फिर छबि रहै कि ना रहै, जैसी बनी अवार ।।७६।।
अब दिखाउँ पिय भ्रमर कूँ, यह शोभा को साज ।
कली खिलै हो फूल यह, फूल कली भइ आज ।।७७।।
चंद्र बदन सुखसदन को, सँग लै चली ताँह ।
मुरझ रही रवि मान सों, प्रिय कमोदिनी जाँह ।।७८।।

❀ व्यवस्था श्रीलालजी ❀

लगी मिलन की चटपटी, भूली सुरति वियोग ।
कब दृग पक्षी चुगेंगे, दरशन रूपी चोग ।।७९।।
देखि दूरि ते भूरि छबि, दूरि दिये दुख टाल ।
दुरैं दूरि ते जिन कहैं, दूरि रहौ गोपाल ।।८०।।

❀ मानकी शोभा ❀

कर कपोल के धरि तरे, बैठी अति छबि पाय ।
मानो तन धरि शान्त रस, पौढ़्यो कमल बिछाय ।।८१।।
कोउ अंग फरकत नहीं, यों बैठी चुप चाप ।
मानो भीति के चित्र की, छबी बनी है आप ।।८२।।
मुख उदास कछु दृग मुँदे, मनों उदारत स्वांग ।
ज्यों योगी जन बैठिके, करत योग अष्टांग ।।८३।।
बैठी नागरि मौन गहि, बिथुरी अलकन जोय ।
मानो कमलनि जानि निशि, मुख मूँदे रहें सोय ।।८४।।
लटकन के मोती लटक, अधरन पै की भीर ।
मानों लाल सों यों कहै, छीनि लई जागीर ।।८५।।
लट ह्वै नैन कपोल पै, शोभा देत अपार ।
बैठी नागिनि कमल पै, दरपन रही निहार ।।८६।।

माथे मोतिन बदन की, यह शोभा नइ भाँति ।
रूप मानसर के निकट, बैठी हंसन पाँति ॥८७॥
ठड़े ठड़े निरखत पिया, शोभा शोभाखान ।
मुख बनाव बैठन अदा, धरन कपोलन पान ॥८८॥
पथिक पीय मन माँगि मग, बैनी परसन जात ।
सीसफूल ठग बीच में, करत रोक उत्पात ॥८९॥
गौर बरण भौं बंक बर, लोचन अरुण सुहात ।
मतवारे दो खंग लै, ठढ़े उजेरी रात ॥९०॥
नैन देखि सुख लूटते, तरसन लागे कान ।
आजहि प्यासे हम रहे, सुधा बचन बिन पान ॥९१॥

❀ कवि वचन ❀

श्री छबि सिंधु अथाह की, को कैसे ले थाह ।
अंग तरंग भौंहें भँवर, अलक उरग दृग ग्राह ॥९२॥

❀ विनय श्रीलालजी की ❀

निरख निरख शोभा हरष, पिय हिय होत अपार ।
डरत डरत बिनती करत, जै श्री राजकुमार ॥९३॥
पंकज विषधर मीन मृग, सर खंजन बादाम ।
प्यारी तेरे दृगन के, यह बिन दाम गुलाम ॥९४॥
समझ सुघरता शील सम, सार असार बिचार ।
सुमुखि सुलोचनि सकल गुण, तुमैं दिये करतार ॥९५॥

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

मिलन वचन सुस्नेह युत, बोली सखी विचार ।
प्यारी पिय ठाढ़ो निकट, उठि निहार बलिहार ॥९६॥

जा मृग को घायल कियो, तिरछी चितवन बान ।
परख लेउ जिन फिर कहौ, तू लाई हैं आन ।।९७।।

श्रीजी वचन सखी प्रति

नैन तरेरे बंक भौं, श्रवण सुनत पिय नाम ।
रिस वश ह्वै कहि ह्यां कहां, श्याम श्याम मन काम ।।९८।।
लजत निलज्ज न लजत हैं, लाजवान के नैन ।
द्वार द्वार झुकि झाँकि के, आये दरशन दैन ।।९९।।

सखी वचन श्रीजी प्रति

कहां गये किनके रहे, लखी कौनसी बात ।
कै योंही घर बैठिके, परके काग उड़ात ।।१००।।

श्रीजी वचन सखी प्रति

इनहीं सों बूझैं नहीं, जो ठाढ़े करि भोर ।
कर कंगन को आरसी, कहा करैंगी बीर ।।१०१।।
सजनी सजनी के रहे, रजनी भरि घनश्याम ।
भवन भवन भय रात निशि, भोर, आये मम धाम ।।१०२।।

लालजी वचन श्रीजी प्रति

सुनि प्रिय के भोरे वचन, रचन श्रवण चितचोर ।
बोले कछु मुसिक्याय कें, नागर नवल किशोर ।।१०३।।
प्यारी प्यारी आप ते, को जा सों हैं हेत ।
मैं येहू जानूँ नहीं, कारी हैं कै श्वेत ।।१०४।।

श्रीजी वचन लालजी प्रति

मुकुर मुकुर जिन बात कहु, मकर हँसत हैं कान ।
मुकरौ मुकुर निहार कै, मुख मुकरे की शान ।।१०५।।

❀ लालजी वचन श्रीजी प्रति ❀

सोच विमोचन सोचिके, निर्दोषै दे दोस ।
बिन आज्ञा या द्वार की, चौखट सौ सौ कोस ॥१०६॥

❀ श्रीजी वचन लालजी प्रति ❀

वृथा बात गढ़ि गढ़ि कहौ, समझि लियो कछु खेल ।
एक न मानूँ तुम चहें, केते पापर बेल ॥१०७॥

❀ लालजी वचन श्रीजी प्रति ❀

अभय कियौ अपनाय के, विदित सकल संसार ।
आज कहा मन में भई, देत द्वार तें टार ॥१०८॥

❀ श्रीजी वचन लालजी प्रति ❀

ढाल ढाल मुख सों कहौ, चटपट चटपट बात ।
यह अचरज विद्या घनी, पढ़े एकही रात ॥ १०९ ॥

❀ कवि वचन ❀

आज बनी शोभा युगल, को वर्णत मतिधोर ।
भोरोपन अरु दीनता, मानो धरे शरीर ॥११०॥

❀ लालजी वचन श्रीजी प्रति ❀

रैन सुवे की किन कथा, श्रवण करी दुसराय ।
तब सुधि आई मानिनी, तुरत गई मुसिक्याय ॥१११॥

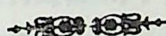
❀ हरष मान मोचन । ❀

हँसत हँसत सखि कंचुकिन, टूटि टूटि गये बन्द ।
मन्दिर के अंदर नयो, पूरि रह्यो आनन्द ॥११२॥

❀ कवि वचन ❀

उत चितवत मुसिक्यात इत, दम्पति अति छबि देत ।
मानो बांटत बायनों, सजनी हँस हँस लेत ॥११३॥
रसिक जनन की कृपाते, कियो कछुक गुणगान ।
नतु नारायण बापुरो, याको सकै बखान ॥११४॥
व्रजबासी धनि धनि विपिन, संत स्वामि गुरुदेव ।
जासु कृपाते कछु मिल्यो, गुप्त रहस को भेव ॥११५॥
बिघन हरन मंगल करन, चरन जुगल सरकार ।
नारायण निज जनन के, जीवन प्राण अधार ॥११६॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत मानलीला दोहावली सम्पूर्ण ॥१०॥



अथ खण्डिता मानलीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—एक सखी अति प्रेम वश, भवन बुलाये लाल ।
बातन में उरझायके, निरखत रूप विशाल ॥१॥
अपर सखी छिपके तहाँ, कौतुक सकल निहार ।
जाय कह्यो पुनि प्रिया सों, कछुक सहित विस्तार ॥२॥
यह सुनिके प्रिय रिस भई, पुनि इक सखी बुलाय ।
कही तासु जा देख तू, लाल कहाँ बिरमाय ॥३॥

वार्त्तिक

जब या सखी ने वा सखी के द्वार पँ जायके बूझी, क्यों री! तेरे घर में लालजी पधारे हैं? तब वह सखी बोली, अरी बीर!

क्यों हांसी करै, तेरेइ घर मे लालजी पधारै हैं यासों जो तू कहै सो सब साँच ।।४।।

❀ फिर सखी वचन वा सखी प्रति ❀

राग कालिंगड़ा

तेरे भवन यह कौन बिराजैं ।
वचन मनोहर भाषत तोसों, कबहुँ मधुर धुनि नूपुर बाजैं ।।
मोरमुकुटकी झलक परत है, जाहि निरखि रवि शशि मन लाजैं ।।
नारायण तू सांच कही री, यह तेरे आये किहि काजैं ।।५।।

वार्त्तिक

यह वचन सखीको सुनिके श्रीलालजी बाहर निकसि आये, अरु सकुचके बोले, अरी ! कहुं प्यारी जी सों मति कहियो, तब सखी बोली, मैं कहा कहूँगी, दूतीने पहले ही समाचार पहुँचायके मान कराय दियो हैं ।।६।।

❀ सखी वचन लालजी सों ❀

झंझोटीका जिला—

कितनो समझाय रही, परघर जिन जावौ रात,
उघरैगी बात प्रात छिपी ना रहैगी ।
दूतीजन चहूँ ओर डोलति है यासि काज,
झूँठ सांच जाय कोउ प्यारी सों कहैगी ।।
राजन के होयँ कान, जैसे कहौ लेत मान,
ताहू पै यह प्रगट चूक कैसे वो सहैगी ।
नारायण जैसौ तुम उनको जियँ चाहोगे,
तैसौही तुम्हें भानु, नन्दिनी हू चहैगी ।।७।।

वार्त्तिक

फिर सखी ने कही आप मेरे संग पधारो जो कछु मोसों बनेगी मैं सब प्रकार उनसों बिनती करूँगी ॥८॥

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

जिला—

प्यारी तेरे आगे ठाढ़े नन्दकिशोर ।
लाज भरे दृग करत न सन्मुख, निरखत धरती ओर ॥
बिन समझे इनसों बनि आये, औगुन लाख करोर ।
नारायण अब क्षमा कीजिये, यह माँगूँ कर जोर ॥९॥

❀ श्रीजी वचन लालजी प्रति ❀

जैजैवंती—

कौन काज यहां आवत हौ जू ।
देखि लिये सौतिन घर बैठे, अब क्यों बात बनावत हौ जू ॥
जासों करत नई रस बतियां, हँसि हँसि कंठ लगावत हौ जू ।
नारायण वाही के जावो, मोसुं कहा सकुचावत हौ जू ॥१०॥

❀ लालजी वचन श्रीजी प्रति ❀

जिला-

प्यारी सुघर सुकुमारी नेक समझ के कीजे मान ।
मैं तो गयो न काहू के भले ठीक करौ छबिखान ॥
दूतीको कहा मिलैगो उन रस में दीयो विष सान ।
प्रगटी निपट घरफोरी जाने एक सो द्वै किये प्रान ॥
सांची कही काहू ने बड़े लोगन के ह्वै कान ।
तुम तो प्रिये अति भोरी नहिं सांच झूठ को ज्ञान ॥
मेरो तो मन मधुकर है तुमरो मुख कमल समान ।
नारायण नित प्रति मोकूँ एक आप ही को रहै ध्यान ॥११॥

वार्त्तिक

जब श्रीलालजी ने देख्यो, कि या भांति सों मान नहीं छूटै तब बाहर आय के सखी भेष धारण करि फिर श्री प्रिया जी के निकट जाय के समझायबे लगे, हे प्यारी ! आपकूँ ऐसो मान करिबो योग्य नहीं, क्योंकि आप प्रीति की रीति कों जानौ हौ, और आज मैं तिहारे प्रीतम सों तिहारे मनायबे को बीरो उठाय के आई हूँ, अब मेरे आयबे की लाज राखौ ।।१२।।

सांवरी को वचन

रेखता—

भूपाली के स्वर- -

इतनो न मान कीजै, वृषभान की दुलीरी ।
तेरे मनायबे में, मोहि श्रम भयो हैं भारी ।।इतनो०।।
प्रीतम को आज तो–बिन, पल छिन न चैन आवै,
नहीं जी लगत भवन में, नहिं बन की छबि सुहावै ।।
हँसि बोलिबौ कहां को, नहिं खान पान भावै ।।
हाथन में चित्र तेरो, पुनि पुनि हिये लगावै ।।
अति बिकल ह्वै रह्यो हैं, वह सांवरो बिहारी ।।इतनो०।।
प्यारे आगे अपने, मैं गुण की कर बड़ाई ।।
तेरे मनायबे कौं, बीरा उठाके आई ।।
बल बुद्धि मो में जितनी, तितनी मैं सब लगाई ।।
पै नेक हू न मेरी, चतुराई काम आई ।।
सब विधि सों राजनीति मैं, कहि कहिके तोसों हारी ।।इतनो०
तेरी तो नित बड़ाई, सब सखी जन बखानें ।।
प्यारी हिये की कोमल, सुपनेहू रिस न जाने ।।
यह आज कहा भयो है, बैठी हो भ्रुकुटी ताने ।।

उन सखीजन को कहिबौ, अब कौन सांच माने ॥
सब झूँठ ही बड़ाई, भामिनि करें तिहारी ॥इतनो०॥
लालन के साथ मिलके, बन शोभा निरखौ प्यारी ॥
कहूँ सघन ललित छाया, कहुँ फूली फुलवारी ॥
जलसों भरे सरोवर, झुकि रहि द्रुमन की डारी ॥
बोलत अनेक पक्षी, बरनत हैं छबि तिहारी ॥
बलि बेग हो पधारौ, यह लालसा हमारी ॥इतनो०॥
एरी सुघर सयानी, मो बिनती मान लीजै ॥
तजिके यह मान मुद्रा, प्यारे सों हेत कीजै ॥
नितही अधर सुधारस, हँसि हँसिके दोऊ पीजै ॥
फिरकर न उन सों रूठौ, वरदान यही दीजै ॥
नारायण याही कारण, निज गोद मैं पसारी ॥इतनो०॥१३॥

वार्त्तिक

यह नई रूप मनोहर देखिके श्रीजी ने इनको हाथ पकरिके कह्यो–अरी! तू नेक बैठि तौ जा, यह पंचायत पीछे करि लीजो। तब सखी पास तें बोली बलिहार, हमारो कहबो तौ न मान्यो, अब अपनी राजी सों हाथ पकरिके पास बैठायबे लगीं, इत सों लालजी बोले, बाँह गहे की लाज। यह वचन सुनिके श्रीजी सकुच सहित मुसिक्याय गईं, लालजी गलबहियाँ देकैं हँसिबे लगे, ता पीछे सखियन ने ब्यारू भोग कराय कैं आरती करी ॥१४॥

दोहा—श्रीराधा गोविंद की, लीला परम उदार।
नारायण गाये सुने, देत पदारथ चार ॥१५॥

इति श्रीखण्डिता मानलीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत सम्पूर्ण ॥११॥



अथ श्रीसम्भ्रम-मानलीला प्रारम्भ

समाजी वचन

दोहा—बड़े भोर सुखसेज तें, जगे पिया छबि ऐन ।
प्यारी के शृंगार हित, चले सुमन बन लैन ॥१॥
सोवत में पुनि लाड़िलो, सपनों देख्यो एक ।
निज प्रीतम मिलि और सों, क्रीड़ा करत अनेक ॥२॥
ता पीछे जागी लली, निकट न देखे श्याम ।
तब मन में निश्चय भयो, गये काहु के धाम ॥३॥
एक सखी सों कही तब, ठाढ़ी रहि तू द्वार ।
मन्दिर में आवै नहीं, कपटी नन्दकुमार ॥४॥

श्रीजी वचन दूसरी सखी प्रति

दादरा बरवै पीलू का जिला—

सखी नन्दलाला आवन नहीं पावें ॥
भीतर चरन धरन जिन दीजो, चाहें जिते ललचावें ॥
ऐसेन को विश्वास कहा री, कपट की बान बनाव ॥
नारायण एक मेरे भवन बिन, अन्त चाहैं जहाँ जावें ॥५॥
दोहा—सुमन बीनि जब साँवरो, आयो मन्दिर द्वार ।
सखी न भीतर जान दै, बरजति बारम्बार ॥६॥

❀ लालजी वचन ❀

राग दादरा—

हमें तू जिन रोकै नवल ब्रज गोरी ॥
मो मन में यह साँच न आवत, रूठी हों भानकिशोर ॥

बीचहि ते क्यों बात बनावत, रिस सों भौंह मरोरी ॥
नारायण विधि को कहा सूझी, तोसी रची घरफोरी ॥७॥

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग कालिगड़ा

द्वार पै क्यों ठाढ़े ब्रजराज ॥
जहाँ सों आये वहीं जावो तुम, यहाँ नहीं कछु काज ॥
लाख भाँति सों बिनय करो तुम, एक न मानूं आज ॥
नारायण बलिहार तिहारी, नेक न आवत लाज ॥८॥

❀ लालजी वचन सखी प्रति ❀

राग कालिगड़ा--

लाज सों मेरो काज कहा री ॥
बिन प्यारी मोहिं कल न परत है,
इक इक पल बीतत है भारी ॥
ऐसी कहा चूक भई मो पैं,
तुम सजनी सब देखनहारी ॥
नारायण मोहि बेगि बतावो,
क्यों रूठी वृषभान दुलारी ॥९॥

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग कालिगड़ा

मैं कहा जानूँ कुंजबिहारी ॥
किहि कारण रूठी है तुम सों, चन्द्रमुखी वृषभानकुमारी ॥
जब ते उठी प्रिया सोवत तें, तबही सों मन में रिस भारी ॥
ना जानूं कछु सपने में उन, देखी है करतूति तिहारी ॥

ठाढ़े रहौ भीतर मति जावौ, प्रीतम मानो कही हमारी ।।
नारायण जो भुज गहि रोकूँ, फिर कहा बात रहै गिरिधारी ।।१०।।

❀ लालजी वचन सखी प्रति ❀

राग झंझोटी—

मोहि मति रोकै री तू, एरी ब्रज नागरी ।।
रूप की निधान है तू, गुणन की खान है तू,
तेरो सम कौन आज, तेरो बड़ो भाग री ।।
कहै तौ मैं नृत्य करूँ, बांसुरी में राग भरूँ,
कान्हरो किदारो भैंरों, सोरठ बिहाग री ।।
तू तो सदा उपकारी, हित की करनहारी,
आज नारायण मोसों, क्यों राखै तू लाग री ।।११।।

वार्त्तिक

सखी बोली हे प्यारे ! यामें मेरो कुछ दोष नहीं, मैं तो उनकी आज्ञा सो रोकूँ, परन्तु अब आप एक काम कीजै, जा रीतिसों मैं कहूँ वाही रीति सो उनके निकट जायके विनती करौ ।।१२।।

राग झंझोटी का जिला—

प्यारी ढिंग जाय लाल धीरे वचन कहियो ।।
नीची रखि दृष्टि नैन, बिनती कीजो बिचारि,
सन्मुख ह्वै ठाड़े दोऊ हाथ जोरे रहियो ।।
अचरा मुख पै दुराय, कबहूँ भूषण सँभारि,
ह्वै कें बलिहार उनकी कबहूँ ठोड़ी गहियो ।।
नारायण भूलिके न डरपियो निरादर सो,
जो कुछ वह कहैं आप सबही बात सहियो ।।१३।।
दोहा—सखी वचन सुनि मुदित मन, गये प्रिया ढिंग लाल ।
भोरहि आज उदास क्यों, एरी रूप विशाल ।।१४।।

❀ प्रियाजी वचन लालजी प्रति ❀

ठुमरी खम्माच—

प्यारे तेरे जिय की न जानी जाय बात रे ॥
कहूँ तो सांझ आधो रात, रहत कहूँ
पिछिली रात, कहूँ प्रात रे ॥
उनहीं सों जाओ, बतराओ सुख पाओ तुम,
जिन यह सिखाये दाँव घात रे ॥
अब तोसों भूलिके न बोलूँ नारायण,
जहां लग अपनी बसात रे ॥१५॥

❀ लालजी वचन ❀

ठुमरी जिले में–

प्यारी जी तिहारे बिन कल न परत है ॥
मन्दिर अटारी चित्रसारी और फुलवारी,
मोहि कछु प्रिय न लगत है ॥
घनो समझायो इत उत बहलायो पुनि,
तौहू मन धीर न धरत है ॥
एतौ हठ आगे कब कियो नारायण,
जेतौ हठ आज तू करत है ॥१६॥

वार्त्तिक–

जब श्रीलालजी किशोरीजी की बलैयां लैंके गलबैयां दैबे लगे तब श्री किशोरीजी को वचन ॥१७॥

ठुमरी खम्माच–

प्यारे मेरे गरवा में जिन डारो बैयां ।
छुऔ न लँगर मेरो पकरौ न कर तुम, छाँड़ौ अब कपट बलैयां ॥

जावो पिया वाही मनभाई के भवन तुम, जाके निस परत हौ पैयां ॥
झूँठीमूँठी सौंहैं क्यों खाओ नारायण, जानूँ मैं तिहारी चतुरैयां॥१८॥

* लालजी वचन श्रीजी प्रति *

राग जोगिया–

सांची कहौ किधौं हांसी करौ जो ।
आज कहा कारण जो मोसों, बेर बेर कहौ यहाँ सों टरौ जी ॥
कौन सखो कितमें घर वाको, तुम जाको मोहिं दोष धरौ जो ।
नारायण यही अचरज मोकों, झूंठ कहत नहिं नेक डरौ जो ॥१९॥

* श्रीजी वचन लालजी प्रति *

राग कालिंगड़ा–

श्याम तुम वाही सजनी के पधारौ ।
जाके बिना पल चैन न तुमको, झांकत हौ निशि ताही को द्वारौ ॥
यहाँ ठाढ़े क्यों देर लगावत, जाओ लाल नवरूप निहारौ ।
नारायण तिहारी बातन को, अब मोको न रह्यो पतियारौ ॥२०॥

* लालजी वचन *

लावनी की राह में–

उठौ अब मान तजौ गोरी । रही है रैन बहुत थोरी ॥
सदा सों तुम मनकी भोरी ॥ कहूँ मैं शपथ खाय तोरी ॥
औरन के बहकाये तुम, करि बैठति हौ रोष ॥
झूँठ सांच परखत नहीं, वृथा देत हौ दोष ॥
यहो मोहिं अचरज है भारी ॥१॥
तनक हँसि चितवौ सुकुमारी । शशी मुखपै हूँ बलिहारी ॥
अपनी ओर निहारिकै, देव अभय वरदान ॥

क्षमा करो सब चूक अब, जो कछु भई अजान ॥
एती बिनती मानो मोरी ॥२॥

तिहारे गुण नितप्रति गाऊं ॥ बिना आज्ञा न कहूँ जाऊं ॥
ताहू पै दृग अरुण करि, भृकुटी लेत चढ़ाय ॥
जोरावर सों निबल की, काहू बिधि न बसाय ॥
हारे हूँ हार जीतेहूँ हार ॥३॥

जिन्हें तुम समझौ हितकारी, सोइ अति कपटी ब्रजनारी ॥
हम में फूट करायके, आप अलग मुसिक्यात ॥
नारायण तुमने करी, खरी न्यावकी बात ॥
भलेको दण्ड बुरे पै प्यार ॥४॥२१॥

वार्त्तिक

पास तें सखी बोली हे प्यारी ! ऐसे अपने प्रीतम प्यारे की ओर सों कठोर न होनो चहिये ॥२२॥

सखी वचन

राग ध्रुपद-

तेरो री मुखारविंद शरदचंद छविनिकन्द,
ताहि सदा निरखिबे को सांवरो चकोर है ।
तापर तू भ्रुकुटी तानि, बैठत नित मान ठानि,
छाँड़त नहिं रिसकी बानि, बड़ी तू कठोर है ॥
तादिन तौ सौंह खाई, अब नहिं रूठोंगी माई,
चाहें पिया प्यारे मांहि, औगुन करोर है ॥
यह सुनि मुसिक्याई बाल, अंक भरे नवल लाल,
नारायण हरखि सखी, डारत तृण तोर है ॥२३॥

दोहा—भानुकुमरि नन्दलाल की, यह लीला अभिराम ।
नारायण हितसों सुने, पूरण होवें काम ॥२४॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत संभ्रममानलीला सम्पूर्ण ॥१२॥

अथ रूपगर्विता मानलीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—शशिवदनी प्रियसों कह्यो, प्रीतम अति हरषाय ।
यह सुनि प्यारी रिस भई, भृकुटी लई चढ़ाय ॥१॥

❀ श्रीजी वचन लालजी प्रति ❀

तरक वचन सों करत तुम, मो मुख अस्तुति लाल ।
ज्यों भुजंग सूधेहु मग, चले भुजंगी चाल ॥२॥
मो मुख सम किमि होय शशि, सुनो सांवरे गात ।
घटत बढ़त सकलंक विष, बन्धु प्रगट जड़ तात ॥३॥

❀ लालजी वचन ❀

वार्तिक

लालजी बोले हे प्राणप्यारी ! मैंने तो सहज सुभाव आपके मुखका बड़ाई करी हुतो ॥४॥

❀ श्रीजी वचन ❀

दोहा—प्रीतम कछु बौरे भये, मोहि देत हौ सीख ।
मुख मोठे मन में कपट, जा विधि गांठें ईख ॥५॥

❀ समाजी वचन ❀

निठुर वचन सुनि लाल ने, कही सखी सों आय ।
वा भोरी रिस भरी कूँ, तुम समझावो जाय ॥६॥

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग मल्हार तीन ताल—

काहे को मानिनि मान बढ़ावत ।
तोहि तौ बानि परी रूठन की,
मैं नित हार गई हूँ मनावत ॥
आप तनक मन में नहि समझति,
औरन कूँ भटु नीति सिखावत ।
नारायण प्रीतम प्यारे कूं,
हँसि रस के क्यों न कण्ठ लगावत ॥७॥

❀ श्रीजी वचन सखी प्रति ❀

जिला धीमा ताल—

प्रीतम की चरचा न चला री ॥
अब उनके गुण जानि गई मैं, जो वे खेलत कपट कला री ॥
तू उनकी अति सुघड़ मिलनियाँ, और काहू सों जाय मिला री ।
नारायण ऐसो सन्देश तू, फेर कबूँ मो ढिग मति ला री ॥८॥

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग कान्हड़ा दरबारी—

ऐसो मान न कीजै बार बार ।
एरी सुहागिनि भागिन तोपै, हौं पीवौं जल बार बार ॥
उत सों लाल पठावत तो ढिग, तू इत सों दे टार टार ।
मैं चौगान की गेंद भई री, मेरे नहीं पग चार चार ॥
तेरो मान अपमान है मेरो, समझावत गइ हार हार ।
नारायण विधि कैसे लगै तू, पात पात मैं डार डार ॥९॥

श्रीजी वचन

दोहा—जो इत सों रवि उत उगै, तौउ करूँ न प्यार ।
फिरि तू क्यों आवत सखी, मो ढिग बारम्बार ॥१०॥

* सखी वचन श्रीजी प्रति *

राग कालिंगड़ा

सुनि राधे तोहि ऐसी न चहिये ।
जो अपने आधीन रहै नित, ताहि कहा इतनौ डरपैये ॥
तुम कछु प्रीति की रीति न जानो, फिरि कहाँ लों तुम को समझैये।
नारायण यह प्रीति कहावै, हँसि रस के पिय कण्ठ लगैये ॥११॥

श्रीजी वचन सखी प्रति

राग देश धीमा ताल—

चलि हटि री सखी क्यों बात गढ़त,
सो मैं सब जानूँ जो वह पाटी पढ़त,
हिय कपट बचन मानो फूल से झरत ॥
जाहि नेक कहे की न आवत लाज,
मन भावत ही करत फिरत है काज,
मोहि इनहीं लच्छिन सों रिस हू बढ़त ॥
अब नारायण मैं न करूँगी प्यार,
नित देखि चुकी वाकी यही है तार ।
जेती कीजिये बड़ाई तेती मूँड़ पै चढ़त ॥१२॥

* सखी वचन श्रीजी प्रति *

जिला—

तोसी नहीं कोऊ देखो री हठीली ।
ज्यों ज्यों मैं अब तोहि मनावत, त्यों त्यों तू होवै अति गरबीली ॥

ऐसे समय बलि रोष न कीजै, भौंहैं कमान तनक करि ढीली ।
नारायण उठि मिलि प्रीतम सों, तजि दै मान की बान छबीली ॥१३

वार्त्तिक

फिर सखी ने लालजी सों जाय कही हे प्यारे ! आप झट-पट नागरी भेष धारि के प्रियाजी के भवन द्वार पै आय के बार बार भीतर कूँ झाँकियों, जब उनकी दृष्टि तिहारे ऊपर परै अरु तुम्हैं बुलाय के कछु बूझैं तो जा भांति सों मैं समझाय चली हूँ वाही रीति सों उनको उत्तर दीजो ॥१४॥

राग कान्हड़ा झपताल–

देखि री आज नव नागरी भेष धरि,
लली के छलन हित ललन कैसे सजैं ।
पहर भूषण बसन, दृगन कजरा दियो,
निरखि श्रृंगार सुरवधू मन में लजैं ॥
मन्द मुसिक्यान मग चलत गति ठुमकि के,
मधुर धुनि किंकिणी चरण नूपुर बजै ।
रूप अभिराम नारायण लखि श्याम को,
कौनसी माननी मान जो ना तजैं ॥१५॥

समाजी वचन

दोहा—जाय द्वार ठाड़ो भई, सांवरि रूप विशाल ।
पुनि पुनि झांकति भवन में, अद्भुत जाके ख्याल ॥१६॥

किशोरीजी वचन

अरी सखो उठि देखि तू, को झांकत है द्वार ।
याकूँ तनक बुलाय ला, बूझें ढिग बैठार ॥१७॥

❀ श्रीजी वचन नागरी प्रति ❀

राग सोरठ धीमा ताल—

या बिरियाँ सखी तू कित डोलै री ।
निपट अकेली सँग न सहेली, पग पग में अपनो छबि तोलै री ॥
नहिं अवसर दधि बेचन को अब, पिछली रैनि पहरुआ बोलै री ।
नारायण अति चतुर सांवरी, नेह की गाँठि तनक नहिं खोलै री ॥१८

❀ नवनागरी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग जंगला काफी --

सकल वृत्तान्त कहूँ मैं तुम सों, सुनो दयानिधि भानु लली ।
एक सखी कूँ मिलन चली मैं, संग लिये दश पाँच अली ॥
पीछे ते कही टेरि काहु ने, आयो तुमैं पकरन को छली ।
यह सुनिके सँग की सब भागीं, काहू गली कोऊ काहू गली ॥
मैं पुनि दौरि यहाँ आय दुबकी, देखि मनोहर ठौर भली ।
नारायण भई भेंट आप सों, कछु मेरी पुनि बेलि फली ॥१९॥

श्रीजी वचन सांवरी प्रति

दोहा—राति यहां विश्राम करि, एरी साँवरी अंग ।
प्रात भवन पहुँचाऊँगी, तोहि सखी के संग ॥२०॥

वार्त्तिक

यह वचन सुनिके सखी बलिहार प्रिया प्रीतम को कहिबे लगी, तब श्रीजी अचरज ह्वै के बोलीं, अरी सखी ! कछु देखि-भारि के बात कहौ, पुनि सखी कर जोरि के बोली हे प्यारी ! अब आप ही देखिभारि लीज, तब श्रीजी ने लालजी की ओर देख्यो, लालजी झट मुसिक्याय गये फिर तौ हँसी की बातें

हैबे लगीं, लालजी ने कही हे प्यारी ! आप तो नेक सी बात में मान करि बैठो हो ॥२१॥

❀ श्रीजी वचन लालजी प्रति ❀

राग खम्माच—

प्रीतम तुम मोहि प्रान ते प्यारो ।
जो तोहि देखि हिये सुख पावत, सो बड़ भागिन वारो ॥
तुम जीवन धन सरवस तुमही, तुमही दृगन को तारो ।
जो तुमकों पलभर न निहारूं, दीखत जग अँधियारो ॥
मोद बढ़ावन के कारण हम, मानिनी रूप हि धारो ।
नारायण हम दोउ एक हैं, फूल सुगन्धि न न्यारो ॥२२॥

दोहा—नारायण गावे सुने, ये लीला सुखधाम ।
प्रिया प्रीतम में मन लगै, रसिकन में ह्वै नाम ॥२३॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत रूपगर्विता मानलीला सम्पूर्ण ॥१३॥

अथ नवपनिहारी लीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—ब्रजमण्डल के बास की, करत चतुर्मुख आस ।
नारायण ते धन्य हैं, जिनको नित्य निवास ॥१॥
पनघट की लीला सुनो, सज्जन जन धरि ध्यान ।
नारायण वर्णन करूं, अपनी बुद्धि प्रमान ॥२॥
एक दिवस उठि भोरही, छलिया श्याम सुजान ।
त्रिया भेष धरिके चले, गली भूप वृषभान ॥३॥

शिर पै सोहै ईंडुरी, रतन टँके चहुँ पास ।
तापै कंचन कलश धरि, चले रूप की रास ॥४॥
भूप द्वार पै जायके, टेरत सुर गम्भीर ।
एरी कोऊ चलत है, भरिबे जमुना नीर ॥५॥

❀ नवपनिहारी वचन ❀

राग जेजैवंती आसावरी—

बेगि चलौ जल भरिबे नवेली ।
कब सों टेरि रही मैं द्वारे, एक न निकसति सखी सहेली ॥
संग साथ में खोजत डोलूँ, कोऊ मिलै मेरों मनमेली ।
नारायण मग डर लागत है, यमुना जाय सकूँ न अकेली ॥६॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—टेर सुनत नवनारि की, गोप लली छबि रास ।
कंचन घट धरि शीश पै, जुरि मिलि आईं पास ॥७॥
अद्‌भुत शोभा निरखिके, उर सुख भयो अपार ।
रूप ठगौरी मैं ठगी, इकटक रहीं निहार ॥८॥

❀ श्रीजी वचन नवपनिहारी प्रति ❀

राग दादरा-

तुम या ग्राम कहां रहौ आली ।
हम कबहूँ देखी न सुनी है, यह शोभा छबि रूप निराली ॥
नखशिख लौं शृंगार मनोहर, अधर रची पानन की लाली ।
नारायण कहौ प्रगट खोलिके, बात न राखौ बीच बिचाली ॥९॥

❀ नवपनिहारी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग देश सोरठ—

प्यारी हौं तो याही पुर माँहि बसत,
पै मैं निशि दिन अपने भवन ही रहत,

निज प्रीतम सों हँसि रस सुख बिलसत ।
पनघट यमुना तट अरु जित तित,
दरशन झाँकी बन बिहरन हित,
कहुँ बहुत न मैं घर सों निकसत ॥
नित डगर बगर इत उत डोलत,
मोहि नारायण अति सकुच लगत,
याही सों मैं नहीं कितहूँ उकसत ॥१०॥

❀ श्रीजी वचन नवपनिहारी प्रति ❀

दोहा—नाम कहा तेरो सखी, हम सों प्रगट बखान ।
नाम है मेरो गुणवती, सुनो कुमरि वृषभान ॥११॥
अरी गुणवती गुण भरी, मृदुल मनोहर गात ।
क्यों काँपत तेरो बदन, साँची कह तू बात ॥१२॥

❀ गुणवती वचन श्रीजी प्रति ❀

राग आसावरी–

नन्दसुवन प्रगट्यो उतपाती ॥
कहा कहूँ वाके गुण तुम सों, चोर जार घटवार जगाती ॥
जो कबहूँ मोहि डगर बगर में, देखत है कहुँ इत उत जाती ॥
सबके बीच पुकारी कहत है, कहाँ चली जोबन मदमाती ॥
वाका इन कुचाल सों सजनी, अति भयभीत कँपत दिनराती ॥
नारायण निज लाज काज हित, गिरजापति नित रहूँ मनाती ॥१३॥

वार्त्तिक

श्रीजी ने कही क्यों री ! वह ऐसोई है ? तब गुणवती बोली अजी कछू बूझो मती ॥१४॥

❀ गुणवती वचन ❀

राग काफी–

सजनी याही सों जिया घबरावै ।
मैं अबही आई या ब्रज में, छल बल नेक न आवै ॥
जो कदापि वा ठग सों मगमें, इकले भेंट ह्वै जावै ।
फिरि जानें वह यशुमति ढोटा, कहा कलंक लगावै ॥
याही सोच भई हौं दूबरी, धीरज कौन बँधावै ।
नारायण हरि लाज रखैं जो, तौ अब रहने पावै ॥१५॥

❀ श्रीजी वचन सखी प्रति ❀

राग दादरा–

याहि भली विधि सों लै चलौ री ।
नन्दनन्दन के नाम सों डरपै, अति भोरी यह गोपकिशोरी ॥
यद्यपि हम हूँ सब जानति हैं, बिनु फागुन वाकी नित होरी।
नारायण अब साथ हमारे, लंगर करि न सकै बरजोरी ॥१६॥

❀ सखी वचन गुणवती प्रति ❀

राग सोरठ वा रामकली–

तू चलि री हमारे संग संग ।
अब जिन डरपै वा रसिया के, सुनि सुनिकें नये रंग ढंग ।
तोहि देखि ऐसो को जाके, हिये न लगत अनंग रंग ।
नारायण सुकुमार साँवरी, तू सुन्दर सब अंग अंग ॥१७॥

❀ समाजी वचन ❀

राग जंगल झंझोटी–

जल कों भरन चलीं ब्रजबाला ।
शरद इन्दु सम कान्ति बदन की, लोचन रतिपति भाला ॥

तिनके मध्य भेष बनिता को, अति छबि देत गुपाला।
नारायण कोऊ न लखै यह, कौतुकी नन्द को लाला ॥१८॥

❀ गुणवती वचन सबसों ❀

राग दादरा–

या मारग न चलौ री स्यानी।
या मारग वह ठाड़ो ह्वै है, मैं निज मन अनुमान सों जानी॥
हौं तुमको इक गैल बताऊ, जाहि कोऊ नहिं जानत प्रानी।
नारायण स्नान ध्यान करि, निरभय भरि लावैंगी पानी॥१९॥

दोहा—अरी सखी मिठबोलनी लै चल वाही गैल।
जा मारग हम सबन को, लखि न सकै वह छैल॥२०॥

गुणवती वचन

ठुमकि धरति तुम चरण को, नूपुर बजत विशाल।
सुनि पावैगो साँवरो, आवैगो ततकाल॥२१॥

गुणवती वचन

राग दादरा–

धीरे चलौ तुम गोप लली री।
नूपुर धुनि जो सुनि पावैगो, घेरैगो फिर आय गली री॥
उरझौ झार कठिन सों सुरझत, हम अबला वह पुरुष बली री।
नारायण मग दाँव घात में, लग्यो रहै बित छैल छली री॥२२॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—बात कहत खेलत हँसत, बिधुवदनी वर वाम।
जब पहुँची यमुना निकट, बोले छलिया श्याम॥२३॥
एक दिन याही ठौर पै, मोहि रोकियो लाल।
सो तुमसो मैं कहा कहुं, जा विधि करी कुचाल॥२४॥

❀ सखी वचन गुणवती प्रति ❀

पुनि तोसों उन कहा कही, सो सुनिबे को चाव ।
प्रगट कहौ तू खोलि के, अब जिन राख दुराव ।।२५।।

❀ गुणवती वचन ❀

राग खम्माच व कल्याण–

लंगर की बात सुनो सगरी ।
एक दिना मैं जल कूँ आवत, शीश धरे कंचन गगरी ।।
याही ठौर मो भेंट भई उन, बहुत करी झगरा झगरी ।
नारायण कर झटक पटक घट, घेर लई पनघट डगरी ।।२६।।

राग ईमन कल्याण–

तुम सुनो छैल की बात ।
बेर बेर मोतन हँसि हेरैं, चंचल नैन चलात ।।
में सकुची कोऊ लखि लेगो, मग में आवत जात ।
नारायण पुनि चरचा होयगी, भवन भवन में प्रात ।।२७।।

दोहा—यों मेरी बैंयां गही, यों रूखेपन हेरि ।
यों सिरसों गागरि पटकि, यों ठाढो मग घेरि ।।२८।।

वार्तिक–

बतरात ही में निज स्वरूप प्रगट करिके आगे ठाढ़े ह्वै रहे ।।२६।।

❀ लालजी वचन ❀

राग मल्हार–

ठाढ़ी रहौ नव गोपकुमारी ।
बिन हमसों बूझें कित जावौ, तुमहीं नई आई पनिहारी ।।
इन घाटन मेरे कर लागे, जानत हैं सगरे नर नारी ।
नारायण सों बेग चुकावौ, गजगामिनि कटि केहरि वारी ।।३०।।

❀ सखी वचन परस्पर ❀

दोहा—अरी सखी यह छल भयो, हम सब भोरी बाम।
भेद नहीं जान्यो किनूँ, यह छलिया घनश्याम ॥३१॥

दादरा मल्हार—

कैसे भरें अब जल की गगरी।
ललित त्रिभंग आगे ह्वै ठाढ़ो, रोकि रह्यो नँदलाल डगरिया॥
हम याकूँ जानत रहीं अबला, यह तौ निकस्यो श्याम झगरिया।
नर सों नारि नारि सों नर पुनि, यह कौतुक होय याही नगरिया॥
तासों कहा बस्यावै जाने, बाँधी निलजताई की पगरिया।
नारायण अँगुरी दांतन दै, भईं अजरच ब्रजनारी सगरिया ॥३२॥

❀ सखी वचन ❀

दोहा—रोकनहारे कौन तुम, हमें गैल नहिं देत।
हम ह्याँके राजा सखी, निज कर तुम सों लेत ॥३३॥

❀ सखी वचन ❀

झंझोटी का जिलो—

चलि परे हटि रे काहे को इतरावै।
भूषण वसन दधि माखन चुरैया, अब कैसी कैसी बात बनावै॥
जिनके बसाये तुम उनहीं सों झगरत, निलज न नेक लजावै।
नित प्रति धेनु को चरैया नारायण, आज तू भूप कहावै ॥३४॥

❀ लालजी वचन सखी प्रति ❀

राग देश सोरठा—

जोबन की माती इठलाती डोलै ग्वालिन, हमकूँ लगावत दोस।

निज कर मांगे बिना मैं तोसों, और कहा लियो खोस॥

लखि न परत तेरे मन की गति, छिन में हँसत छिन रोस।
नारायण तोसी अबला के, धन्य जो बसत परोस ॥३५॥

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग देश—

छाँड़ो मेरी डगर झगर जनि साँवरे, मोहि अति देर भई।
कब की मैं आई जल भरिबे को, तैं बिच घेर लई॥
सास ननँदिया देखत सँग मोहि, नाम धरेंगी कई।
यमुना को मिस करि गागरिया सिर धरि, जानें कहाँ तू गई॥
लाज को रहिबो कठिनहि दीखे, कैसी करूँ हे दई।
अब तो मैं जानि चुकी नारायण, होयगी चरचा नई ॥३६॥

❀ लालजी वचन सखी प्रति ❀

राग खम्माच—

जो इतनी तू लाज लजावै।
घर ही बैठ के जल न भरावत, क्यों यमुना लौं दौरी आवै॥
तो समान या ब्रजमंडल में, कोऊ नहीं कुलवंती कहावै।
निज मन कपट बसत नारायण, सास ननँद को दोष लगावै ॥३७

❀ सखी वचन सखी प्रति ❀

राग खम्माच-

एरी सखो याकूँ हम जानें।
यह अपनी हठ नाहिं तजैगो, कबसों रोकि रखी हम याने॥
हौं अबला की कौन चलाई, विधिना हू की कही नहीं माने।
नारायण जोबन गरबीलो, मटकि मटकि के कुटिल भौं ताने ॥३८

❀ लालजी वचन सखी प्रति ❀

राग खम्माच का जिला वा रामकली–

तुमहीं कुलवन्ति मैं देखी आज,
मणि गागरि नागरि शीश धरी।
दृग मीन से चपल चलत इत उत,
मुसिक्यान अधर छल छन्द भरी॥
फरके सब अंग अनंग रंग,
भृकुटी अति कुटिल कमान खरी।
तन रोम रोम सों नारायण,
चंचलताई की बरषै झरी ॥३९॥

वार्त्तिक--

तब सखी आपस में कहिबे लगी, अरी बीर ! याकूं बिना कछु दिये छूटबे न पाओगी, ताते या सों बूझौ कहा कर माँगे। जब सखीन ने बूझो, तब लालजी बोले, सोऊ सुनो ॥४०॥

❀ लालजी वचन ❀

राग कालिंगड़ा—

सो तुम सुनो सकल सुकुमारी।
मैं नित जल शिवजी पै चढ़ाऊं, या बन सघन मझारी॥
आज गयो मैं गऊ बिवायबे, एरी रूप उजारी।
ता कारण सों बिना नहाये, मैं नहिं पूजे त्रिपुरारी॥
तुम निज निज घट जल सों भरिके, अपनी अपनी पारी।
नारायण चलि शम्भु न्हवावो, मो बदले ब्रजनारी ॥४१॥

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

दोहा—हम कबहूँ देखी नहीं, कौन ओर वह ठौर।
जहाँ बिराजत उमापति, देवन के शिरमौर ॥४२॥

❀ लालजी वचन ❀

जो तुम में मुखिया सखी, चलौ हमारे साथ।
ठौर बतावैं हम तुमैं, जहाँ भवानीनाथ ॥४३॥

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग कालिंगड़ा

तब सखियन ने कही सुनो प्यारी।
पहले तुम यमुना जल भरिके, जाय पूजि आवौ त्रिपुरारी॥
यह प्रिय वचन सुनत सजनी के, निज हिये हरषी राजदुलारी।
नारायण ऊपर के मन सों, मैं न जऊं कह भानुकुमारी ॥४४॥

❀ प्रियाजी वचन सखी प्रति ❀

राग कालिंगड़ा–

मैं इनके संग इकली न जाऊ।
बीर तिहारे नित तानेन सों, फिर कैसे मैं पीछौ छुटाऊं॥
जैसी कछू तुम हौ सब जानूँ, प्रकट कहेते कहा फल पाऊं।
नारायण मैं जानि बूझिके, क्यों अपने पट झार लगाऊं ॥४५॥

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग परज—

साँचे ही तुम मन की अति भोरी।
तुमकों सदा हमारी ओर सों, बन्यो रहत है बहम किशोरी॥
हमहू तौ इकली इकली सब, इनके संग जायँगी गोरी।
नारायण फिर तुम क्यों डरपौ, जावौ बेगि भई देर न थोरी ॥४७

वार्त्तिक–

श्रीजीने कही अरी सखी! जल तो मैं चढ़ाय आऊंगी पर तुम कहूँ चलो मति जयो, जब कंचनझारी जल सों भरिके

प्रीतम संग चली, तब मार्ग में लालजी ने कही हे प्यारी ! यह सब रचना आपही के मिलिबे कारण रची है, आप मुसिक्याय कै बोलीं सो तौ हम जानैं, फिर अपनी प्राणप्यारी कूँ वन की शोभा दिखायबे लगे ।।४७।।

❀ लालजी वचन श्रीजी प्रति ❀

जिला कवित्त—

देखो प्यारी विपिन में कैसी छबि छाय रही,
झुकि रहीं लता अति लगत सुहावनी ।
फूले फूल रंग रंग भँवर गुंजार करैं,
ठौर ठौर कोकिला बोलत मनभावनी ।।
मृगिन के सहित मृग डोलत हैं इत उत,
चलत पवन तन तपनि नसावनी ।
कहै नारायण गोरी आपको आगम भयो,
तासों बनराज ने करी है पधरावनी ।।४८।।

वार्त्तिक—

यहाँ सब सखी परस्पर सोचिबे लगीं ।

राग टोड़ी—

देर भई क्यों न आई प्यारी ।
कै कहुँ डगर भूलि गई भोरी, कै मग चलत भयो श्रम भारी ।।
कै पूजन में बिलम लगो है, कै बन में निरखत फुलवारी ।
कै बिरमाय रखी रसिया ने, कै अबलौं ढूँढ़त त्रिपुरारी ।।
कै मग में कहुँ कांटो लाग्यौ, कै इकली निज भवन पधारी ।
कै छिपि रही खिजावन के हित, नारायण सोचत व्रजनारी ।।४९

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—घट उठाय उतही चलीं, जहाँ दोउ वन माहिं।
जाय निहारे द्रुम तरे, ठाढ़े दै गलबाँहि ॥५०॥
सघन लता की ओट तें, छबि निरखत वृजबाल।
भागि सराहत आपनो, पुनि २ होत निहाल ॥५१॥

राग विलावल—

आज इन दोउन पै बलि जैये।
रोम रोम सों छबि बरसति है, निरखत नैन सिरैये॥
रूप रास मृदु हास ललित मुख, उपमा देत लजैये।
नारायण या गौर श्याम कों, हिये निकुंज बसैये ॥५२॥

वार्त्तिक—

फिर सखी प्रगट होयके बोलीं, बबिहार लालजी महाराज! भली पूजा करवायबे आये। तब आप बोले अरी सखी! एक इन के ही जल चढ़ायबे सों भोलानाथ प्रसन्न ह्वै गये, अब तुम भले ही जल भरौ। तब सखी दंडौत करिके बोलीं, धन्य हो पुजारीजी महाराज! ॥५३॥

दोहा—यह लीला भक्तन लिये, करत लाड़िलो लाल।
नारायण गावैं सुनैं, परैं न यम के जाल ॥५४॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत नवपनिहारी लीला सम्पूर्ण ॥१४॥

अथ श्रीश्यामविरहिनी लीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—एक दिवस तिय भेष धरि, परम कौतुकी श्याम।
विरहिनि बनि डोलत डगर, लै लै अपनो नाम ॥१॥

❀ विरहिनी वचन ❀

प्रीतम तो देखे बिना, छिन छिन कल्प बिहाय ।
बेगि दीजिये दरश अब, मो विरहिनि को आय ॥२॥

वार्त्तिक-

काहू सखी ने इनको देखि के श्रीजी सों जाय कही हे प्यारी ! मैं एक अचरज देखि आई हूँ तब श्रीजी मे बूझी कहा, पुनि सखी बोली ॥३॥

❀ सखी वचन ❀

राग देश-

चलौ तौ बताऊँ तुमें भवन के द्वार ।
एक नारि विरहिनि भई डोलै, तन की नाहिं सँभार ॥
श्याम श्याम मुख नाम रटति है, साँवरी रूप अपार ।
नारायण ऐसी मोहि दीखति, है बड़ गोपकुमार ॥४॥

❀ समाजी वचन ❀

छप्पय-

सुनि सजनी के वचन, प्रिया मन में ललचाई ।
निरखन को वह नारि, द्वार पै दौरी आई ॥
दौरी आई द्वार, देखि वह सखी विरहिनी ।
पुनि ताके ढिग गई, आप इकली मृगनैनी ॥
कर गहि बूझत कौन तू, कहा लगाई श्याम धुनि ।
नारायण तू सांच कहि, हों आई तो दशा सुनि ॥५॥

❀ श्रीजी वचन विरहिनी प्रति ❀

पद सोरठ का जिला-

तोहि डगर चल कहा भयो री वीर ।
कहूँ पग को पायल कहूँ सिर को चीर,

भई बावरी न कछु सुधि बुधि शरीर ।
तेरे मतवारेन सम झूमत नैन,
मुख भाषति है तू अति विरह के बैन,
मानो घायल काहू ने करी दृगन तीर ॥
मोसो नारायण जिन राखै दुराव,
जो तू कहै सोई तेरौ करूँ उपाव,
जासों रोगहू घटै हटै सकल पीर ॥६॥

❀ विरहिनी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग गिरनारी सोरठ-

मैंने देखी री आज मोहन की हँसन ।
अधरन पै अद्भुत अरुणाई, मुतियन की लर पाँति दशन ॥
वा शोभा के दृग रहे प्यासे, पीबे लगे भरि भरि के पसन ।
नारायण तब सों मोहि सजनी, सुधि न रही निज वदन बसन ॥७॥

वार्त्तिक ।

प्रियाजू ने बूझी अरी ! तैंने उनकूं कहां देख्यो है ॥८॥

❀ साँवरी वचन ❀

राग आसावरी-

आज सखी भोरही मैं पनियां गई री ॥
सांवरो सलोनो एक बड़े बड़े नैन जाके,
जमुना के तट मोसों भेंट भई री ।
देखि अति रूप वाको नेह उर हार भयो,
ताही समय लाज को तिलांजली दई री ।
उन बिन कल न परत नारायण,
कैसी घरी लगी लगन नई री ॥९॥

❀ श्रीजी वचन विरहिनी प्रति ❀

राग कान्हड़ा बागेश्वरी—

सखी क्यों बौरी भई है वा छलिया के वियोग ।
भूलि के नाम न लीजो श्याम को, चरचा करेंगे लोग ॥
तू सुकुमार कठिन मग नेह को, नहिं श्रम तेरे जोग ।
नारायण बिन जाने बूझे, तू मति लगावै तन रोग ॥१०॥

❀ विरहिनी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग जोगिया आसावरी—

सखी मेरे मन की को जाने ।
कासों कहूँ सुने जो चित दै, हित की बात बखाने ॥
ऐसो को है अन्तरयामी, तुरत पीर पहँचाने ।
नारायण जो बीति रही है, कब कोई सच माने ॥११॥

वार्त्तिक--

प्रियाजू ने कही, अरी ! तू घबरावै मति नेक धीरज राखि ॥१२॥

❀ विरहिनी वचन श्रीजी प्रति ❀

लावनी की राह—

सखी कैसो करूँ मैं हाय, न कछु वश मेरो ।
बिन देखे साँवरो चन्द, दृगन में अँधेरो ॥
सखी ऐसो सुन्दर नहि कोऊ, मैं सब जग हेरो ।
वाको जो लिखै तसबीर, सो कोन चितेरो ॥
सखी कठिन छैल को विरह, आनि मोहि घेरो ।
सगरी निशि तारे गिनत हो, होत सबेरो ॥

सखी जो तू मिलावै आज, वह रूप उजेरो ।
जबलों जीवोंगी, गुण न भूलूँगी तेरो ।।
सखी नारायण जो न मिलै, वह मन को लुटेरो ।
तब नन्द द्वार पै, जाय करूँगी डेरो ।।१३।।
दोहा—नन्द भवन जानूँ नहीं, एरी राजकुमारि ।
नेक दया करि संग ह्वै, लै चलि वाके द्वारि ।।१४।।

❀ श्रीजी वचन विरहिनी प्रति ❀

राग कालिंगड़ा—

उठि सजनी चलि तोहि बताऊँ, सन्मुख नन्द को द्वार दिखावै ।
तू कित धावति है पुर बाहर, मो पीछे भटु क्यों नहिं आवै ।।
एक एतौ हिय में डर मोकूँ, जो कबहूँ यशुमति लखि पावै ।
नारायण मन में जानेंगी, यह सब ब्याधि यही सँग लावै ।।१५।।

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—नन्द द्वार पै गई जब, कपट विरहिनी बाम ।
पुनि पुनि अति अकुलाय के, लेति श्याम को नाम ।।१६।।

❀ विरहिनी वचन ❀

राग काफी—

बेदरदी तोहि दरद न आवै ।
चितवन में चित वश करि मेरो, अब काहे को आँखि चुरावै ।।
कबसों परी तेरे द्वारे पै, बिन देखे जियरा उकलावै ।
नारायण महबूब साँवरे, घायल करि फिर गैल बतावै ।।१७।।

वार्त्तिक—

श्रीजी ने कही अरी ! सखी तू तौ यहाँ बैठि, अरु मैं तो अब जाऊँ, कहूँ तेरे संग मोहि बाबरी तौ नहिं होनों, तब

विरहिनी बोली अजी ! अब मैं कैसी करूँ, तब श्रीजी ने कही यहाँ तो यशोदाजी देखेंगी, चलि तोहि और ठौर बैठाऊँ वहाँ सूँ तू उनकूँ देखि लीजो ॥१८॥

❀ साँवरी वचन ❀

राग ईमन कल्याण—

तैंढी बाँकी चितवन, सानूँ प्यारी लगदी, साँवला मेंढा दिलदार।
सोहनी सूरत बड़ो बड़ी अँखियां गल बिच गजमुतियन दा हार॥
एक नजर तुम हँसकर देखौ बारूँ मैं जियरा हजार बार।
नारायण असीं रूप दिवानी आय परी अब तैंढे द्वार ॥१९॥

❀ श्रीजी वचन विरहिनी प्रति ❀

राग देश का जिला-

सखी तु मति ले वाको नाम, नहीं पछितावैगी।
मन कपटी मुख मीठौ बोलै, कली कली रस चाखत डोलै,
ऐसे सों करि प्रीति कहा फल पावैगी॥
मेरी कही तू चित न धरति है, जासों मोहि अब जान परति है,
तू अपने सुन्दर तन रोग लगावैगी।
नेह किये कछु हाथ न आवै, लोक लाज कुल धर्म नसावै,
नारायण तू नाहक जगत हँसावैगी ॥२०॥

❀ विरहिनी वचन ❀

राग काफी—

बिन देखे मन माने न मेरो।
श्याम वरण चित हरन लाडिलो, रूप सुधा नित जगत उजेरो॥
चाल मराल मनोहर बोलन, चपल नयन मो तन हँसि हेरो।
नारायण त्रिभुवन को स्वामी, हो वृषभानुकुमरि को चेरो ॥२१॥

वार्त्तिक—

जब विरहिनी ने अपने कूँ चेरो कह्यो, तब प्रियाजी अचरज मानिके सखी सों बूझिबे लगी, अरी ! ललिता ! यह लुगाई ह्वै के फिरि लोग कैसे बनिबे लगी जो आपकूँ चेरो बनावैं चेरी बने तौ एक बात है ॥२२॥

दोहा—ललिता लखि नवलाल को, बोली सुन शिरमौर ।
बिन प्रीतम चेरे चतुर, चेरी बनै न और ॥२३॥

सोरठा—

सुनि ललिता के बैन, प्यारी निज मन में हरष ।
मानो छबि को ऐन, पुनि पुनि निरखत लाल मुख ॥२४॥

वार्त्तिक—

धन्य हौ लालजी महाराज, जो काहू की बहू बेटी होते तो भला काहू को घर तोऊ बसावते ॥२५॥

❀ श्रीजी वचन लालजी प्रति ❀

राग ध्रुपद कान्हड़ा दरबारी—

आज भले बने लाल, अद्भुत नई व्रज की बाल,
दृगन सोहै कजरा, अति मीठी मीठी करत बात ।
अँगिया मनमोहनहारी, दामिन की शोभा न्यारी,
झीनी नव चूनरी में, झलकत है श्याम गात ॥
हाथन में चूरी, माथे मुतियन की माँग भरी,
कानन में झुमका पग बिछियन धुनि अति सुहात ।
नारायण बार बार, प्रीतम की छबि निहार,
अचरा मुख दैके प्यारी, मन्द मन्द हँसत जात ॥२६॥

वार्त्तिक

लालजी बोले—हे प्यारी ! आपने तो कही हुती कि अब तुम्हारे छल में हम कभू न आवेंगी अब कैसे आईं ? श्रीजी ने कही तिहारे प्रसन्न करिबे कूँ ।।२७।।

दोहा—यह लीला श्रीलाल की, चारि पदारथ देत ।
नारायण गावे सुने, युगल प्रीति के हेत ।।२८।।

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत श्यामविरहिरी लीला सम्पूर्ण ।।१५।।

अथ युगलछद्म लीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—श्याम सखी को भेष धरि, डोलत अपने द्वार ।
नारायण झाँकत कभू, अचक किंवार उघार ।।१।।
उतसों आवत लाड़िली, संग सखी बहु भीर ।
देख साँवरी बिकल सी, बूझति गौर शरीर ।।२।।

❀ श्रीजी वचन सांवरी प्रति ❀

राग कालिंगड़ा—

सखी तू इत उत क्यों डोल रही ।
कै कछु वस्तु गिरी मारग में, कै निज गति छबि तोल रही ।।
कबहुँक नन्दभवन को द्वारो, उझकि अचक तू खोलि रही ।
नारयण नहिं दीखत कोऊ, कौन सो हँसि हँसि बोल रही ।।३।।

❀ सांवरी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग देश—

सखी जब सों नन्दलाल निहारे ।
तबही सों बौरी भई डोलूं, इत उत गली गिरारे ।।

शीस मुकुट शिर पेंच रतन को, लसत बार घुँघरारे ।
खंजन नैन मैनमद गंजन, अंजन रेख समारे ।।
कूंडल लोल कपोल मनोहर, कोटि भानु उजियारे ।
मानो रूपसिंधु में खेलत, मकरन के द्वै बारे ।।
मंद हँसन मुख श्याम बरन छबि, शशि मनोज लखि हारे ।
दशन पाँति ज्यों मुतियन को लर, अधर सोहैं अरुणारे ।।
नाक बुलाक कुटिल बर भृकुटी, वचन रचन अति प्यारे ।
नारायण नखशिख शृंगार करि, ठाढ़े भवन के द्वारे ।।४।।

❀ श्रीजी वचन सखी प्रति ❀

राग सोरठ का जिला–

मनमोहन जाकी दृष्टि परत, ताकी गति होत है और और ।
न सुहात भवन तन अशन वसन, बन ही कूँ धावत दौर दौर ।।
नहिं धरत धीर हिय विरह पीर, व्याकुल भई भटकत ठौर ठौर ।
कबहूँ अँसुवन भरि नारायण, मग झाँकत डोलत पौर पौर ।।५।।

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग सोरठ–

जाहि लगन लगै घनश्याम की ।
धरत कहूँ पग परत हैं कितहू, भूलि जाय सुधि धाम की ।।
छबि निहार नहिं रहत सार कछु, घरी पल निशिदिन याम की ।
जित मुंह उठै तितै ही धावै, सुरति न छाया घाम की ।।
कोई करौ निन्दा कोई अस्तुति, मेड़ तजी कुल ग्राम की ।
नारायण बौरी भई डोलै, रहै न काहू काम की ।।६।।

* श्रीजी वचन सखी प्रति *

राग देश—

साँवरे की जिन निरखो मुसिक्यान ।
सो तौ भई घायल ताही छिन, बिन बरछी बिन बान ॥
कल नहिं लेति धरति नहिं धीरज, तलफति मीन समान ।
नारायण भूली सुधि तन की, बिसर गयो सब ज्ञान ॥७॥

* साँवरी वचन *

राग झंझोटी-

साँवरे क्यों मोसों रिस मानी ।
तेरे काज घरबार त्यागि के, गलियन फिरत दिवानी ॥
लोकलाज कुलरीति प्रीति जग, इनहूँ को दियो पानी ।
नारयण अब तौ हँसि चितवौ, एरे रूप गुमानी ॥८॥

* श्रीजी वचन साँवरी प्रति *

राग देश-

साँवरे बदन छबि सदन मदन मद, गंजन अंजन दृग रेख ।
अतिही विकल नहीं जिय में परत कल, जब सों श्याम लियो देख ॥
डोलत डगर बड़ गोपकुमरि ह्वै, तजि कुल लाज विशेख ।
नारायण नहिं मिटत सखी जो, लिख्यो विधाता लेख ॥९॥

साँवरी वचन

राग काफी-

यह नैना रिझवार नये री ।
एक बेर लखि रूप लाल को, तजि घरबार फकीर भये री ॥
अब देखे बिन डारत आँसू, युग समान पल बीति गये री ।
नारायण येहू अति चंचल, फल पाये जो बीज बये री ॥१०॥

श्रीजी वचन

दोहा—भामिनि तू भोरी निपट, जादू मुख घनश्याम।
वाकी ओर निहारि के, बस्यो कौन को धाम ॥११॥

❀ साँवरी वचन ❀

राग भैरवी—

अब मैं कैसी करूँ री बीर।
हौं तो घनो चाहूँ न करूँ सुधि, मन तो धरत न धीर॥
जो घायल उन नैन बान को, सो जानत यह पीर।
नारायण करि गयो बावरी, सुन्दर श्याम शरीर ॥१२॥

❀ श्रीजी वचन ❀

दोहा—जाकी तू घायल फिरै, निज कुललाज बिहाय।
सो अब मेरी समझ में, गयो चरावन गाय ॥१३॥

वार्त्तिक।

साँवरी बोली, हे सखी! मैं अब कैसी करूँ ॥१४॥

❀ श्रीजी वचन ❀

झंझोटी का जिला—

जौलों श्याम विपिन ते आवें।
तौलौं तू चलि भवन हमारे, काहू विधि तो मन बहलावें॥
भलो नहीं यों डगर डोलिबो, ब्रजवनिता मिलि दोष लगावें।
नारायण बलि प्रीति मानिके, हम तेरे हित की समझावें ॥१५॥

❀ साँवरी वचन ❀

दोहा—गुण मानूंगी आपको, एरी परम सुजान।
काहू विधि मोसों मिले, मेरो जीवन प्रान ॥१६॥

वार्त्तिक-

तब श्रीप्रियाजी इनकूँ अपने भवन में लिवाय ले गईं ॥१७॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—वहाँ जाय पुनि साँवरी, लै लै ठंढे श्वास ।
विरह वचन भाषन लगी, श्याम मिलन की आस ॥१८॥

❀ सांवरी वचन ❀

कब आवेंगे हे सखी, बन ते मोहन लाल ।
यों कहिके भुइँ पै गिरि, जैसे कोउ बिहाल ॥१९॥

❀ श्रीजी वचन ❀

अरी सखी ये कहा भयो, झटपट देखो आय ।
मो माथे याको कहूँ, मति कलंक लगि जाय ॥२०॥

वार्त्तिक

सखी देखिके बोली हे प्यारी ! याकौ तौ यही उपाय है ॥२१॥

दोहा—आप श्याम को भेष धरि, तनक दूरि पै जाय ।
हाथ लकुट कटि पीतपट, आवौ धेनु लिवाय ॥२२॥

वार्त्तिक--

फिरि यासों हम कहेंगी देखि री ! नन्दलाल बन तें गऊ चराय के आवें तब याकूँ चेत होयगो ॥२३॥

दोहा—बहुत भली कहि लाड़िली, धरि प्रीतम को भेष ।
आवत धेनु लिवाय के, बंशी शब्द विशेष ॥२४॥

वार्त्तिक—

इतमें सांवरी कछुक चेत में आयके बोली ॥२५॥

राग काफी—

लाल तेरे जादू भरे दोऊ नैन ।
चितवन में चित वश करि लेवें, मोहनी मंत्र है सैन ॥
अति बाँके सुन्दर मतवारे, अनियारे छबि ऐन ।
नारायण इनके बिन देखे, पल छिन परत न चैन ॥२६॥

वार्त्तिक–

जब श्रीजी प्रीतम भेष सों पधारी तब सखी बोली ॥२७॥

❀ सखी अरु सांवरी के वचन ❀

राग ध्रुपद ईमनकल्याण–

देख सखी नन्दलाल, साथ लिये ग्वालबाल,
आगे आगे धेनु पाछे, आवत बंशी बजात ।
कानन पै कदम फूल, अटपटे चीरो के पेच,
घुँघरारी अलकें बदन, गोरज सों अति सुहात ॥
सो शोभा कहि न जाय, जब ये हँसत खिलखिलाय,
मानों मुख सों छबि की झरीं, एक संग बरस जात ।
नारायण एरी बीर, अब नहिं मन धरत धीर,
ऐसो मोहि जिय में आवै, झपट मिलूँ याके गात ॥२८॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—मिलत लाल को साँवरी, गिरी बाँसुरी भूम ।
निरखि सखी हँसिबे लगीं, मची ठठोली धूम ॥२९॥

वार्त्तिक—

फिर सखीन ने वाही भेष सों श्यामसुन्दर को नवदुलहिन अरु श्रीकिशोरीजी को नवदूलह बनायके भाँवरे पार, आप बनरा गायबे लगीं ॥३०॥

राग शहानो-

या बनरे पै मैं जाऊं बलिहारी ।
जाहि मिल्यो ऐसो बर सुन्दर, सो बनरी बड़ भागिनवारी ।।
गौर बरन केशरिया बागौ, कटि पटका बाँधे जरतारी ।
शीस मोर माथे पै सेहरा, कानन में मुतियन छबि न्यारी ।।
हाथन मेहँदी रचो कर कंकन, जाहि निरखि रतिपति मति हारी ।
नारायण लखि रूप मनोहर, सफल भईं अब आँख हमारी ।।३१।।

वार्त्तिक-

ता पीछें युगल सरकार निकुंज पधारे, सखी अपनी अपनी सेवा पै ।।३२।।

दोहा—भक्ति सुधारस देत है, यह लीला ब्रजनाथ ।
नारायण तजि तरकना, सुने प्रीति के साथ ।।३३।।

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत युगलछद्म लीला सम्पूर्ण ।।१५।।

अथ श्रीप्रथमअनुराग लीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—ननँदि भवन दुलरी धरी, लैन चली ब्रजनार ।
अपर सखी बरजन लगी, तू जिन निकसे द्वार ।।१।।

राग देश-

सखी तोहि ढूंढ़त है नन्दलाल, कहुँ मति जावै री ।
तेरी सौं अबही यहाँ आयो, घनो देर मोसों बतरायो,
तोहि देखिबे कारण फिरि फिरि आवै री ।।
आज काल सिगरे व्रज माहीं, रूपवान तेरे सम नाहीं,
तेरे बदन के आगे चन्द लजावै री ।।

नारायण मोहि यह डर भारी, जो वासों भइ भेंट तिहारी,
फिर जाने वह कहा कलङ्क लगावै री ॥२॥

❀ सखी वचन नवनागरी प्रति ❀

राग जैजैवन्ती प्रभाती—

मेरो कह्यो अब मान सहेली, तू जिन बाहर निकस अकेली ।
आजकालि तेरे जोबन को, घर घर में चरचा है हेली ॥
मनमोहन तेरे निरखनको, डगर बगर नित फिरत नवेली ।
नारायण वासों बचि आवै, तौ मेरी तू गुरू मैं चेली ॥३॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—समझाई बहु भांति सों, कहिके वचन अनेक ।
बरजोरी गोरी चली, कही न मानी एक ॥४॥

राग मल्हार—

थोरी दूर जब गई ब्रजनारी ।
आगे ते आवत मनमोहन,
भेंट भई तब डगर मँझारी ॥
नव शृंगार हँसन अवलोकन,
श्याम वरन शशिमुख छबि न्यारी ।
नारायण लखि रूप लाल को,
तन मनकी सब सुरति बिसारी ॥५॥
दोहा—लाल गये निज भवन तब, सखी भई गति और ।
नैनन सों लरिबे लगी, विकल परी वा ठौर ॥६॥

❀ विरहिनी वचन ❀

राग काफी

नैनो रे चितचोर बतावौ ।
तुमही रहत भवन रखवारे, बाँके बीर कहावौ ॥

तिहारे बीच गयो मन मेरो, चाहे जिती सौं खावौ ॥
घर के भेदी बैठि द्वार पैं, दिन में घर लुटवावौ ॥
अब क्यों रोवत हौ दईमारे, कहुँ तौ थांग लगावौ ॥
नारायण मोहि वस्तु न चहिये, लेनेहार दिखावौ ॥७॥

दोहा—एक सखी निकसी उतै, तिन देखी मगमाहिं ।
निकट जाय बूझन लगीं, बिरहिनिकी गहि बाहिं ॥८॥

❀ सखी वचन अपर सखीन सों ❀

राग कालिगड़ा--

यहाँ लग नेक आवो ब्रजनारी ।
या सजनी कों कहा भयो है, लोटति धरनि मँझारी ॥
कै काहू की दृष्टि लगी है, सुन्दर रूप निहारी ।
कै दृग बान मृगी उर मारे, काहू बड़े शिकारी ॥
भयो कहा याकूँ मारगमें, सुधि बुधि सकल बिसारी ।
नारायण कछु कहत न आवे, गोविन्दकी गति न्यारी ॥९॥

❀ सखी वचन नवनागरी प्रति ❀

सोरठ का जिला—

सखी तू कैसें अचेत परी ॥
चोर सँभारि निहारि बावरी, टूटि रही दुलरी ॥
जा बिरियाँ तू गई ननँद गृह, जाने वो कैसी घरी ॥
नारायण मग में कहुँ डरपी, बात यही सगरी ॥१०॥

❀ नवनागरी वचन ❀

राग कालिगड़ा—

सखी तब सों चैन नहिं आवै,

जब सों मैं निरख्यो नन्दलाल, गल मुतियन माल सुहावै ॥

घुंघरारी अलकें मुख राजैं, कोटि मदन दृग छबि लखि लाजैं,
कुण्डल हलन चलन श्रवनन में वंशी मधुर बजावै ॥
सुधि बुधि हरण वचन हँसि बोलैं, चाल मराल इतै उत डोलैं,
बजत चरण छुम छननन नूपुर, ताहू पै मुसिक्यावै ॥
कर कंकन पहुँची मणि झलकें, देखि स्वरूप लगत नहिं पलकें,
नारायण बेसर को मोती, लटकत हिये समावै ॥११॥

❀ सखी वचन ❀

दोहा—जितनी तू वा छैल की, सुरत करैगी बीर ।
तितनी व्याकुल होयगी, धरि न सकैगी धीर ॥१२॥

❀ नवनागरी वचन सखी प्रति ❀

राग मल्हार

नहिं बिसरति सखी श्याम की सुरतियाँ ॥
हँसन दशन द्युति दामिनी सी दमकन,
चन्द से बदन सों अति मृदु बतियाँ ॥
कुण्डल झलक लखि लगं न पलक,
नकबेसरि की हलन चलन गज गतियाँ ॥
नारायण जब निरखूँ लाल कूँ,
सफल नैन शीतल ह्वै छतियाँ ॥१३॥

❀ सखी वचन नवनागरी प्रति ❀

दोहा—अरी सखी तू बहुत अब, लै न श्याम को नाम ।
चरचा होगी जगत में, हँसी करें ब्रजबाम ॥१४॥

❀ नवनागरी वचन ❀

राग रेखता—

मन हरि लियो है मेरो, वा नन्द के दुलारे ।
मुसिक्याय के अदाँ सों, नैनों के कर इशारे ॥१॥

इक दृष्टि ही में वाने, जाने कहा कियो है ।
नहिं चैन रैन दिन में, वाके बिना निहारे ॥मन०॥२॥
चीरे के पेच बाँके, शिर मुकुट झुमि रह्यो है ।
कटि किंकिनी रतन की,नूपुर बजत हैं प्यारे ॥मन०॥३॥
बेसरि बुलाक सोहै, गल मोतियन की माला ।
कंकण जड़ाऊ कर में, नख चन्द सों उजारे ॥मन०॥४॥
छबि देत आरसी से, सुन्दर कपोल दोऊ ।
बरछी समान लोचन, नइ सान पै समारे ॥मन०॥५॥
फूलन के हाथ गजरे, मुख पान की ललाई ।
कानन में मोती बाले, कुण्डल हू झलकें न्यारे ॥मन०॥६॥
लखि श्याम की निकाई,सुधि बुधि सकल गँवाई ।
बौरी बनाय मोकों, कित गयो वंशोवारे ॥मन०॥७॥
जन्तर अनेक मन्तर, गण्डा तबीज टोना ।
स्याने तबीब पण्डित, करि कोटि जतन हारे ॥मन०॥८॥
नारायण इन दृगन ने, जब सों वह रूप देख्यो ।
तब सों भये हैं ध्यानी, उघरत नहीं उघारे ॥मन०॥९॥१५

वार्त्तिक-

अरी ! चुप रह बावरी क्यों जगत हँसावै, नेक तौ धीरज राखि ॥१६॥

❀ नवनागरि वचन सखी प्रति ❀

राग कालिंगड़ा-

सखी ये दृग वा रूप लुभाने ।
मचलि रहे शशिमुख निरखन कों, जा विधि बाल अयाने ॥
लोकलाछ कुलधर्म खिलौना, दिये तऊ नहिं माने ।
नारायण सोऊ इन फीरे, ऐसे निडर सयाने ॥१७॥

❀ सखी वचन नवनागरी प्रति ❀

राग देश सोरठ-

सखी तू जान दै, वाकी अधिक न सुधि कर वीर ।
है अति ही निर्मोही साँवरो, नहिं जानत पर पीर ॥
प्रीतिमाहिं फल प्रगट देखि तू, ढरकावत दृग नीर ।
नारायण इतनी न विकल हो, नेक हिये धरि धीर ॥१८॥

❀ नवनागरी वचन सखी प्रति ❀

राग झंझोटी का जंगला

श्याम दृगन की चोट बुरी री ।
ज्यों ज्यों नाम लेत तुम वाको, मो घायल पै नौन पुरी री ॥
ना जानूँ अब सुधि बुधि मेरी, कौन विपिन में जाय दुरी री ।
नारायण नहिं छूटत सजनी, जाकी जासों प्रीति जुरी री ॥१९॥

❀ सखी वचन नवनागरी प्रति ❀

दोहा—भामिनि तू जाने नहीं, या मारग की सार ।
कुल कलंक सब जग हँसै, चरचा ह्वै घरबार ॥२०॥

❀ नवनागरी वचन ❀

राग ईमन दादरा-

लगन नहिं छूटै एरी बीर ।
ताने देउ भले नाम धरौ चाहें कोटि करो तदबीर ॥
क्षण में करत चतुर को बौरा, नृप कों करत फकीर ।
नारायण अब कठिन है बचिबो, बिंधे हिये दृग तीर ॥२१॥

वार्त्तिक-

तब सखी ने कही अरी ! तू अब घर में चलि के भोजन पानी करि, तेरे दुःख दूर होयबे को उपाय करेंगी ॥२२॥

❀ विरहिनी वचन ❀

राग कालिगड़ा—

मोपै कैसी ये मोहनी डारी । चितचोर छैल गिरधारी ॥
गृह कारज में जी न लगत है, खान पान लगै खारी ।
निपट उदास रहति हूँ जब सों, सूरति देखि तिहारी ॥
संग की सखी देति मोहि धीरज, वचन कहत हितकारी ।
एक न लगत कही काहू की, कहत कहत सब हारी ॥
रही न लाज सकुच गुरुजन की, तन मन सुरति बिसारी ।
नारायण मोहि समझि बावरी, हँसत सकल नरनारी ॥२३॥

❀ सखी वचन अपर सखी प्रति ❀

राग शहानो—

तुम ऐसो कछु जनत बिचारो ।
जा विधि सों या अति विरहिनि को,
आय मिलै व्रजराज दुलारो ॥
जो कछु बीति रही अब यापै, को याके बिन जाननहारो ।
नारायण जौलों जीवैंगो, मानैगो गुण अधिक तिहारो ॥२४॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—एक सखी उठि तुरत ही, लाई श्याम लिवाय ।
विरहिनि सों कहि देखि री, को ठाड़ो ढिंग आय ॥२५॥

❀ नवनागरी वचन सखी प्रति ❀

राग सोरठ—

सखी री यह मेरो चितचोर ।
भृकुटी कुटिल बंक अवलोकनि, सुन्दर नवलकिशोर ॥
गैल चलत मैं सहजहिं निरखी, या छलिया की ओर ।
नारायण जाने कहा कीनो, इन लखि नैनन कोर ॥२६॥

❀ सखी वचन लालजी प्रति ❀

राग खम्माच—

लाल इती विनती सुनि लीजै ।
जा विधि याहि चेत ह्वै तन की, सो उपाय बलि बेगहि कीजै ॥
नहिं सुधि वदन वसन भूषण की, छिन छिन छटा रूप की छीजै ।
नारायण या अति विहाल को,ज्यों त्यों जीव दान अब दीजै ॥२७॥

वार्त्तिक—

लालजी बोले हमने तो याको कछु नहिं कियो, परन्तु एक मन्त्र हमको आवै है सो याके कान में कहिबे सों यह अच्छी ह्वै जायगी ॥२८॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—उझकि सखी के कान में, कही लाल यों बात ।
वंशोवट यमुना निकट, तोहि मिलूँगो प्रात ॥२९॥

वार्तिक—

या वचन के सुनते ही सखी झटपट उठि बैठी ॥३०॥

दोहा—या लीला कों जो सुनै, करि मन में विश्वास ।
नारायण मन कामना, पावै विना प्रयास ॥३१॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत प्रथम अनुराग लीला सम्पूर्ण ॥१७॥

अथ चौसर लीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—रैन दिवारी घर बगर, दीपदान चहुँ ओर।
यह शोभा देखन चले, नागर नन्दकिशोर ॥१॥
छबि निरखत ब्रज गलिन की, गये प्रिया के द्वार।
उझकि झाँकि खाँसन लगे, रसिक रूप रिझवार ॥२॥

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग देश—

प्यारी तेरे काजे कोऊ ठाढ़ौ द्वार।
अति ही चतुर प्रगट नहिं बोलत, खाँसत बारम्बार॥
करत प्रकाश फिरत मन्दिर ढिग, पग नूपुर झनकार।
देखि री कौन कहांते आयो, बूझि किंवार उघार॥
निशि आधी मग फिरत पहरुआ, सोवत सब संसार।
नारायण या बिरियां को है, बिन ब्रजराजकुमार ॥३॥

❀ श्रीजी वचन सखी प्रति ❀

राग कामोद—

सखो मोहि योंही करौ बदनाम।
मैं घर सों बाहर नहिं निकसो, नैन न देखे श्याम॥
पीठि पिछार करौ तुम चरचा, लै लै मेरो नाम।
कौन कौन को मुख पकरूँ मैं, तुम सब एकसी बाम॥
झूँठ साँच इत उतै लगावौ, यही तिहारो काम।
नारायण अब नेक दया करि, बसन देओ या ग्राम ॥४॥

वार्त्तिक-

फिरि सखीन ने मुसिक्याय के कही, हे प्यारी ! हमने तौ हँसि के कही है, आप बुरो मति मानो, परन्तु कछु और हू आपने सुनी है, श्रीलालजी यों कहैं कि चौसर के खेल में कौन को सामर्थ्य है जो हम सों जीति सकै, जो आप की आज्ञा होय तो उनको बुलाय के चौसर में हरावें और तारी बजावें राति दिवारी की है। आपने कछु मुख फेरि के कही, तिहारी राजी ॥५॥

दोहा—एक सखी हँसि के उठी, खोले तुरत किंवार।
चलौ लाल भीतर भवन, बोलत भानुकुमार ॥६॥

❀ अपर सखी वचन लालजी प्रति ❀

तुम चौसर के खेल में, अति प्रवीण हौ लाल।
आज तनक हमहूँ लखैं, चतुराई की चाल ॥७॥

वार्त्तिक -

लालजी बोले बाजी कहा। सखी बोली मैं अपनो लाल यां चित्रसारी मैं छोड़ि देऊँगी, जो हारे सो पकरैं ॥८॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—हँसि हँसि खेलत युगल वर, चाल परस्पर हेरि।
जीत हार को चोंप पै, डारत पाँसे फेरि ॥९॥

❀ सखी वचन परस्पर ❀

राग ध्रुपद दरबारी कान्हड़ा-

चौसर खेलत हैं आज, गौर श्याम रसिक राज,
ललितादिक ढिग समाज, चाल कों बतावैं।

छक्वे पँजड़ी अठारैं, कबहुँ परत पूरे बारैं,
रंग रंग नरद चलत, अति ही शोभा पावैं ॥
प्यारी हिय अधिक चाव, अपनो जब परत दाँव,
लपक झपक झट ही चोट, गोट पै चलावैं ।
प्रीतम निज देखि हार, झगरत हैं बार बार,
नारायण जीती कुमरि सन्मुख मुसिक्यावैं ॥१०॥

॥ श्रीजी वचन ॥

राग ईमन--

हँसि हँसि प्रीतम सों कहै प्यारी ।
मनमोहन अब क्यों खिसियावो, कहा भयो एक बाजी हारी ॥
कहे सुने को बुरो न मानो, तुम समान है कौन खिलारी ।
नारायण उदास जिन होवो, अब की हू है जीत तिहारी ॥११॥

वार्त्तिक

फिर सखीन ने पींजरे में ते लाल निकासि के चित्रसारी में छोड़ि दियो, अरु लालजी सों बोलीं—अब आप पकरो और हमें तौ नींद लगि रही है, जाय के सोवें। तब श्रीजी ने कही गवाह कौन रहैगो ? सखी बोलीं गवाह आप रहौगी, या प्रकार कहि के किवाँर मूँदि के चिक डारि दई ॥१२॥

दोहा—ये लीला ब्रजचन्द की, श्रवण करैं जो नित्त ।
नारायण प्रीतम प्रिया, बसिहैं ताके चित्त ॥१३॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत चौसर लीला सम्पूर्ण ॥१८॥

अथ सखी खण्डिता लीला प्रारम्भ



वार्त्तिक-

एक समय श्रीलालजी महाराज ब्रजगलियन की शोभा निरखत भए चले जाय रहे, मार्ग में एक सखी अपनी अटारी की खिरकी मे ते उझकि के बोली ॥१॥

❀ सखी वचन ❀

दोहा—आज अकेले या समय, कहाँ पधारे श्याम ।
नेक हमारे भवनहू, आय करौ विश्राम ॥२॥

❀ लालजी वचन ❀

तनक देर में बगदि के, आऊंगो तो पास ।
मृगनयनी अब राख तू, मो वचनन विश्वास ॥३॥

❀ समाजी वचन ❀

आप गये प्रिय के भवन, यहाँ सखी बेचैन ।
छिन भीतर छिन द्वार पै, बीत गई सब रैन ॥४॥

❀ सखी वचन ❀

राग कालिगड़ा व खट—

श्यामसुन्दर अबहूँ नहिं आये ।
दीप की जोत उदास लगत हैं, तारागण सब गगन बिलाये ॥
अरुणशिखा बोलत हैं कबसों, फिरत न पहरू पथिक मग धाये ।
कमलन के मुख खिले चहत हैं, फूल कमोदिनि के मुरझाये ॥
गोरस मथन लगीं व्रजवनिता, मिलि चकई चकवा हरषाये ।
नारायण पियकों बिरमाके, किन सजनी निज भाग मनाये ॥५॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—बड़े भोर आई सुरति, रसिक शिरोमणि श्याम।
बाट निहारति होयगी, उत में वह ब्रजवाम ॥६॥
पीताम्बर की भूल में, नीलाम्बर तन धार।
नूपुर शब्द बचाय के, पहुँचे वाके द्वार ॥७॥

❀ और सखी वचन या सखी प्रति ❀

राग कालिगड़ा-

उठि देखो सखी छबि नन्दलाल।
मींड़त नैन उनींदे रैन के, आवत हैं डगमगी चाल ॥
पगिया पेच ह्वै रहे ढीले, अलकावलि वर बिथुरी भाल।
नारायण प्रीतम की शोभा, तू लखि के होगी निहाल ॥८॥

राग खट-

देखि सखी प्रीतम की शोभा,
निज नैनन को भाग मना री।
अद्‌भुत देत बहार बदन पै,
बिथुर रहीं अलकें घुँघरारी ॥
मुख भोरापन दृग अलसाने,
कोटि मदन कीजै बलिहारी।
मानों चञ्चलता तजि खंजन,
राजत ललित रूप फुलवारी ॥
लेत जँभाई बजावत चुटकी,
छाय रही तन रैन खुमारी।
नारायण यह छबि निहारि के,
को न मोहै जग में नर नारी ॥६॥

❀ सखी मुसिक्याय के लालजी सों बोली ❀

राग कालिंगड़ा--

तुम कौन के भवन सों आये श्याम ।
पलटी माल नीलपट काँधे, योंहो मिल्यो है कि दिये दाम ॥
पीक कपोल अधर दृग अंजन, यह लीला भई जाके धाम ।
नारायण काहेकों दुरावौ, प्रगट कहौ क्यों न वाको नाम ॥१०॥

❀ लालजी वचन ❀

कुंडलिया-

रात गयो मैं भूलि भवन की, गैल तिहारी ।
भ्रमत रह्यो सब ठौर बूझतौ, घर घर नारी ॥
बूझत घर घर नारि, काहू नहिं पतौ बतायो ।
तुमहूँ मेरे काज राति, अतिशय दुख पायो ॥
औरहु जो मोसों भई, सो बरनत सकुचात ।
नारायण योंही फिरत, बीत गई सब रात ॥११॥

राग कालिंगड़ा-

तेरे भवन की गैल भुलायो ।
फिरत रह्यो सगरी निशि खोजत, तोऊ पतौ न कहूँ मैं पायो ॥
एक ठौर मोहि चोर जानि के, बोले इन कछु माल चुरायो ।
पुनि मेरे पकरन कों दौरे, मैं इक घर जु धस्यो घबरायो ॥
वा घरवारी दयावति ने मेरो पीताम्बर दुबकायो ।
निज नीलाम्बर मोय उढ़ा के, तुरतहि भामिनि भेष बनायो ॥
तौलों पकरनहारहु पहुँचे, तिने देखि मोहि वचन सुनायो ।
लैजारी अपनी मणिमाला, बहुत तगादौ मोहि न भायो ॥
पुनि दीपक लै खोजत चोरैं, मैं तब दाँव आपनो पायो ।
नारायण झट निकसि वहाँ ते, ज्यों त्यों प्रात यहाँ लों आयो ॥१२॥

❀ लालजी वचन ❀

राग काफी–

दृग मींडत काजर लग्यो हाथ ।
मुख पोंछत लाग्यो अधरन पै, अधर पान रँग हाथ साथ ।।
पुनि सोई कर लग्यो कपोलन, कहूँ हाथ धरि तेरै माथ ।
नारायण या भाँति सखी को, समझावत रसिकन को नाथ ।।१३।।

❀ सखी वचन सखी प्रति ❀

राग वागेश्वरी कान्हड़ा–

मेरे री आये मनहूँ के भाये, प्रीतम प्रान ते प्यारे ।
ता मग पै बलिहारी जाऊँ मैं, जा मग लाल पधारे ।।
मधुरा वचन रचन अति जादू, मन के मोहन हारे ।
नारायण यह धन्य घरी पल, इन दृग श्याम निहारे ।।१४।।

वार्तिक—

ता पीछे परम रिझवार ने फूलन के गजरे गूँथि के सखी कों पहराये, जब सखी शृंगार करिबे लगी तब आप दर्पन दिखायबे लगे, यह शोभा अपर सखी छिपि के देखि रही हुती, पुनि प्रगट ह्वै के बोली ।।१५।।

❀ सखी वचन सखी प्रति ❀

राग कान्हड़ा—

तू है सखी बड़भाग भरी, नन्दलाल तेरे घर आवत हैं ।
निजकर गूँथि सुमन के गजरे, हरषि तोहि पहरावत हैं ।।
तू अपनो शृंगार करति जब, दरपन तोहि दिखावत हैं ।
आनन्दकन्द चन्द मुख तेरो, निरखि निरखि सुख पावत हैं ।।
जाके गुण सब जगत बखानत, सो तेरो गुण गावत हैं ।
नारायण बिन दाम आजकल, तेरे ही हाथ बिकावत हैं ।।१६।।

❀ लालजी वचन ❀

दोहा—अब हम घर जावें सखी, नूपुर लेयँ उतार।
इनकी धुनि सुनि करइँगी, तो चरचा ब्रजनार ॥१७॥

❀ सखी वचन ❀

राग कालिंगड़ा-

प्रीतम नूपुर मति न उतारो।
इनको धुनि सुनि पारपरौसिन, कहा करेंगी हमारो ॥
भले करो जग चरचा मेरी, तुम निज प्रण नहिं टारो।
नारायण जे शरण चरण की, तिने न कीजै न्यारो ॥१८॥

वार्तिक-

सखी बोली हे प्यारे! जो आप शरणागत कों त्यागोगे तौ आपको प्रण जातो रहैगो, फिर कोई जीव आपके चरण की शरण में न आवैगो, क्योंकि वे कहैंगे, कि नूपुर जो बहुत दिनन से लालजी के चरण की शरण लग रहे थे, उनकों ही त्याग दियो, तो हम नयनों को चरणन की शरण में काहे कों राखेंगे और बिना शरण आये जीवन को कल्याण कैसें होयगो, या लियें मेरी जगत में निंदा होय तौ भले ही होय, परन्तु आप शरणागत को मत त्यागो, भले ही नूपुर बजायें जाओ, आपकी प्रतिज्ञा न जावै ॥१९॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—मुसिक्याय सुनि के वचन, साँचे मन के मीत।
गये सखी ते बिदा ह्वै, देखि प्रीति की रीत ॥२०॥
ये लीला श्रद्धा सहित, जो जन सुने सुनाय।
नारायण भवसिन्धु ते, बिना जतन तरि जाय ॥२१॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत सखीखण्डिता लीला सम्पूर्ण ॥१९॥

अथ वंशी लीला प्रारम्भ



❀ समाजी वचन ❀

राग आसावरी—

हंसै मोती चुगावत प्यारी ।
पुचकारत करकमल फेर के, भूख लगी तोहि भारी ॥
जित जित चलत बजावत चुटकी, गजगामिनि सुकुमारी ।
तितहिं तितहिं वुह अति प्रिय बोलत, डोलत फिरत पिछारी ॥
कबहुँ बुलावत निकट आपने, डरपावत दै तारी ।
नारायण या विधि सों खेलत, श्रीवृषभानुकुमारी ॥१॥

* समाजी वचन *

दोहा—वंशी धुनि सुनि कुमरि को, रही न तन की सार ।
कित हँसिबौ कित बोलिबौ, कित हंस सों प्यार ॥२॥

वार्तिक--

सखी ने बूझी हे प्यारी ! कहा भयो ? तब आपने कही ॥३॥

राग मल्हार--

नन्दनन्दन बन बंशी बजाई री ।
श्रवण करत सुधि रही न तन की, एक संग मो मति बौराई री ॥
नयन चकोर चहत निरखन कों, शरद चन्दमुख कुँवर कन्हाई री ।
नारायण नहिं भवन सुहावत, कहा करूँ अब एरी माई री ॥४॥

राग देश अथवा आसावरी-

वंशी नहीं यह सौति है दारी ।
याही ने गृह काज भुलाये, सुधि बुधि सब हरि लई हमारी ॥

जे कुलवन्ति प्रवीण नारि जग, धीरज धर्म पतिव्रत वारी।
तिनहू को इन लाज बिगोई, वन वन फिरत हैं बदन उघारी॥
नारायण हम तौ नित तरसें, यह भई अधरन की अधिकारी।
कै तौ यही रहैगी व्रज में, कै व्रज में बसिहैं व्रजनारी॥५॥

दोहा—अरी सखी कितकों बजी, वंशी चित की चोर।
मो मन ऐंचत आप को, ज्यों चकई को डोर॥६॥

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

मैं आई लखि लाल कों, इकले धीर समीर।
कदम तरे ठाढ़े हुते, सुन्दर श्याम शरीर॥७॥

❀ श्रीजी वचन ❀

राग कान्हड़ा बागेसरी झपताल—

चलो री आज व्रजराज मुख निरखिये,
जगत की लाज सों काज नहिं सरैगो।
बहुत कोई कहैगो श्याम के ढिंग गईं,
याहू ते अधिक पुनि और कहा करैगो॥
नाचिबे लगीं तो फेरि घूँघट कहा,
सूर रण चढ़े पै कौन सों डरैगो।
बेगि निज प्यारे ते मिलो नारायण,
बहुरि ऐसो सखी दाँव कब परैगो॥८॥

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग काफी—

निज प्रीतम की तू छबि निहार।
श्याम बरन लखि लजत नीलमणि, सुन्दरता मुख पै अपार॥

भृकुटी कुटिल मधुर मुसक्यावन, चितवन की कछु नई ढार।
नारायण कटि पै कर धरिके, ठाढ़े पकरि के कदम डार ॥९॥

❀ प्रियाजी वचन ❀

राग कालिगड़ा—

मोहन बसि गये मेरे मन में।
लोक लाज कुलकानि छूटि गई, इन की लगन लगन में ॥
जित देखूँ तितही यही दीखें, घर बाहर आँगन में।
अंग अंग प्रति रोम रोम में, छाय रहे सब तन में ॥
कुण्डल झलक कपोलन सोहै, बाजूबन्द भुवन में।
कंकन कलित ललित मणिमाला, नूपुर धुनि चरनन में ॥
चपल नयन भृकुटी वर बाँकी, ठाढे सघन लतन में।
नारायण बिन मोल बिकी मैं, इनकी नेक हँसन में ॥१०॥

❀ श्रीजी वचन लालजी प्रति ❀

राग घनाक्षरी—

सखी री यह नवरूप उजारो।
पिछिलेपन पायो यशुमति ने, पुण्य प्रताप तिहारो ॥
लगि न जाय कहुँ दृष्टि हमारी, अधिक न याहि निहारो।
नारायण छबि धाम श्याम पैं, राई नौन उतारो ॥११॥

वार्त्तिक—

तब लालजी बोले—हे प्यारी! आपकी सुदृष्टि सों कबहूँ दृष्टि न लगैगी ॥१२॥

दोहा—लीला युगलस्वरूप की, दुख भंजन सुख दैन।
नारायण जे नित सुनैं, गावैं पावैं चैन ॥१३॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत वंशी लीला सम्पूर्ण ॥२०॥

अथ निकुञ्जहिंडोरा लीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

राग भैरों—

आज दोउ जागे अति अलसात ।
मूँदे नयन अटपटे बैना, नहिं सम्हार निज गात ।।
नींद विवश ह्वै बूझत प्यारी, साँझ भई कै प्रात ।
कहन चहत है भोर साँवरो, मुख ते निकसत रात ।।
झूमत गिरत परस्पर ऊपर, देखि सखी मुसिक्यात ।
नारायण या अद्भुत छबि कूँ, निरखत दृग न अघात ।।१।।

वार्त्तिक

ता पीछे सखीन ने प्रियाप्रीतम कों स्नान कराय अद्भुत शृंगार करिके नाना प्रकार की सामग्री भोग धरी ।।२।।

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—रुचि सों जेंवें युगलवर, लै अचमन हरषात ।
बीरी दै मुख परस्पर, पुनि पुनि मृदु मुसिक्यात ।।३।।

वार्त्तिक-

फिर सखीन ने प्रार्थना करी, आज आप काँच के भवन में हिंडोरा झूलैं और हम सब निरखें, आप मुसिक्याय के बोले—चलो सखी ।।४।।

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—झूलत रंग हिंडोरना, पिय प्यारी मिलि संग ।
अली झुलावति चाव के, अतिहि प्रफुल्लित अंग ।।५।।

❁ सखी गायबे लगीं ❁

देखि युगल छबि सावन लाजै ।
उत घन इत घनश्याम लाड़िलो, उत दामिनि इत प्रिय सँग राजै ॥
उत बरषत बूँदन की लरियाँ, इत गल मुतियन हार बिराजै ।
उत दादुर इत बजत बाँसुरी, उत गरजत इत नूपुर बाजै ॥
उत रंग के बादर इत बागे, उतै धनुष वनमाल इत साजै ।
उत घन घुमड़ इतै दृग घूमत, नारायण बरषा सुख साजै ॥६॥

❁ सखी वचन परस्पर ❁

राग मल्हार—

आज दोउ झूलत मृदु मुसक्यावत ।
औरहु बात लखी तें सजनी, सैनन माहिं कछू बतरावत ॥
मेल कपोल अधर धर बंशी, एक संग पुनि दोऊ बजावत ।
बजति नहीं झगरत आपस में, निरखि सखी अतिशय सुख पावत ॥
निज प्रतिबिम्ब देखि दरपन में, भानुलली मन में सकुचावत ।
बूझत पिय सों यह को झूलत, जो निज छबि सों हमें लजावत ॥
हँसत श्याम प्रिय कूँ लखि भोरी, कण्ठ लगाय बहुत समझावत ।
नारायण हठ तजत नहीं जब, सन्मुख ते सखी काँच हटावत ॥७॥

❁ समाजी वचन ❁

दोहा—प्यारी निज प्रतिबिम्ब लखि, सकुच गई मनमाहिं ।
तब प्यारो हँसि हँसि परत, दै प्रिय के गलबाहिं ॥८॥
यह लीला नित सुने सों, कृपा करें घनश्याम ।
वृन्दावन को वास दें, और आपनो नाम ॥९॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत निकुँजहिण्डोरा लीला सम्पूर्ण ॥२१॥

अथ शयन लीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—एक समय रसरास में, निरतत प्यारी पीय।
अधिक रैनि पुनि गई जब, बोली पिय सों प्रीय ॥१॥

❀ प्यारी वचन ❀

राग दरबारी कान्हड़ा—

प्रीतम वेगि निकुँज पधारो।
रजनी बहुत गई या सुख में, अधिक न रस विस्तारो ॥
अति आलस वश दीखत प्यारे, कोमल वदन तिहारो।
दृग झूमत पग डगमगात उत, बोल शिथिल है न्यारो ॥
रास विलास करत श्रम पायो, ताकूँ तनक निवारो।
नारायण जीवन अधार तुम, मो नयनन को तारो ॥२॥

❀ सखी वचन ❀

राग देश—

युगल छबि देखि मेरो हियरा सिरात।
नींद भरे मग चलत झूमि के, शिथिल भये सब गात।
कह्यो चहत कछु कढ़त कछू मुख, कहत कहत रहि जात।
नारायण या विधि निकुंज में, पहुँचे अति अलसात ॥३॥

❀ सखी वचन और सखी प्रति ❀

राग जैजैवन्ती—

आज बिराज रहे मणि मन्दिर, नन्दनन्दन वृषभानुकिशोरी।
केलि करत युग याम गई निशि, लेत जम्हाई साँवरी गोरी ॥

अति आलस वश झूमत दोऊ, बात करत मुख अटपटि भोरी।
नारायण सोई बड़भागी, जो नित निरखत है यह जोरी ॥४॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—हँसि रस में गई अर्द्ध निशि, भये नींदवश नैन।
अलसाने झूमत झुकत, कहत अटपटे बैन ॥५॥

❀ सखी वचन ❀

आशीष-

राग जेंजैवन्ती अथवा विहाग—

आनन्द रहौ दृगचन्द दोऊ,
सगुन सदा तुमको आवैं।
नित ही रसकेलि करो मिलि के,
हम निरखि निरखि अति सुख पावैं ॥
यह धन हम से रंकन कों मिल्यो,
हम कहाँ लों विधि के गुण गावैं।
नारायण अब आशीश करैं,
तुमहूँ पौढ़ो हमहूँ जावैं ॥६॥

वार्त्तिक-

अर्थात् आज्ञानुसार अपनी अपनी सेवा पै ॥७॥

दोहा—लाला श्रीब्रजचन्द्र की, यामें रस संयोग।
नारायण जे नित सुनें, बड़भागी ते लोग ॥८॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत शयन लीला सम्पूर्ण ॥२२॥

अथ साँवरीछद्म झूलन लीला प्रारम्भ



❁ समाजी वचन ❁

दोहा—जहाँ झूलति रहि लाड़िली, गये तहाँ घनश्याम ।
बोली प्रिया अबलान में, कहा पुरुष को काम ॥१॥

वार्तिक—

लालजी ने कही हे प्यारी ! यह हमारी भूल समझो जो यहाँ आये, अब चले जायँगे ॥२॥

❁ समाजी वचन ❁

दोहा—अति प्रवीण छल छन्द में, रसिकन के शिरमौर ।
वनिता भेष बनाय के, फिरि पहुँचे वा ठौर ॥३॥

❁ लालजी वचन ❁

राग मल्हार—

एरे दई मैं यहाँ क्यों आई ।
कोऊ नहीं कहि झूल री तुमहू, अति ही कठोर यहाँ की लुगाई ॥
मैं अपनी सम जानत सबकूँ, याही धोखे रही भुलाई ।
नारायण निज भवन चलूँ अब, या झूलन ते बहुत अघाई ॥४॥

❁ श्रीजी वचन साँवरी प्रति ❁

दोहा—हँसि कर बोली लाड़िली, सुन री साँवर अंग ।
तू उदास जिन हो सखी, झूलि हमारे संग ॥५॥

❁ सखी गायबे लगीं ❁

राग झंझोटी—

ये दोउ झूलैं री, मन के मोहनहार ।
सजनी एक साँवरे रँग की, सँग वृषभानु कुमार ॥

सावन मास सुहावन भावन, फूल रही फुलवार।
रेशम डोर जड़ाऊ पटली, सघन कदम की डार ॥
गर्जत घन चमकत है चपला, बूँदन परत फुहार।
ठौर ठौर मिलि मोर नचत हैं, या सुख को नहिं पार ॥
भाँति भाँति के पक्षी बोलें, शीतल चलत बयार।
फूले कमल सरोवर माहीं, भ्रमर करत गुंजार ॥
चहूँ ओर छाय रही हरियाली, अद्भुत विपिन बहार।
लिपटि रहीं बर बेलि द्रुमन सों, हरषत युगल निहार ॥
बरन बरन के लाल सोसनी, सखियन किये शृंगार।
विविध प्रकार बजावत बाजे, गावत राग मलार ॥
चतुर सखी इक जानि गई तब, उर सों चीर उघार।
हँसि हँसि परत लखावति औरन, यह लंगर छलवार ॥
ललिता कहै इन्हें नहिं व्यापै, तनक लाज संसार।
पल पल माँहि स्वांग धरि आवत, कबूँ पुरुष कबूँ नार ॥
नारायण बोली प्रीतम सों, कीरति प्राण अधार।
बनिता भेष उतारि आपनो, रूप लेउ निज धार ॥६॥

वार्त्तिक--

श्रीलालजी बोले हे प्यारी ! अबहूँ तौ मरद के संग झूलीं ? आपने मुसिक्याय के कही, हम तौ लुगाई के संग झूली हैं। यह वचन सुनि के सब सखी परस्पर हँसिबे लगीं ॥७॥

दोहा—तर्क छाँड़ि जो नित सुने, यह लीला आनन्द।
नारायण तापै दया, सदा करें ब्रजचन्द ॥८॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत साँवराछद्मझूलन लीला सम्पूर्ण ॥२३॥

अथ वनझूलन लीला प्रारम्भ

•

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—सावन मास सुहावनो, घन गर्जत चहुँ ओर ।
निरखि निरखि शोभा नई, हर्षत नन्दकिशोर ।।१।।
परत फुहार सुहावनी, भीजत श्री ब्रजराज ।
प्यारी को बोलन चले, झूला झूलन काज ।।२।।

❀ प्रियाजी वचन सखी प्रति ❀

राग मल्हार--

सखी री यह सावन मनभावन ।
चातक मोर चकोर कोकिला, बोलत वचन सुहावन ।।
गरजत घन घननन घननन कर, लगे मेह वरषावन ।
नारायण भीजत मेरे गृह, श्यामसुन्दर को आवन ।।३।।

❀ लालजी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग देश—

चलौ अकेले झूलें बन में, प्यारी मेरे प्रान ।
तुम नई नागरि रूप उजागरि, सुखसागर छबि खान ।।
बरन बरन के बादर छाये, मानो गगन वितान ।
बरषत बूँद सोई मुतियन की, झालर शोभा मान ।।
बोलत खग मृग डोलत इत उत, सो नहिं जात बखान ।
रंग रंग के फूल खिले हैं भ्रमर करत रसपान ।।
ऐसे समय विपिन सुख विलसें, एरी परम सुजान ।
नारायण उठि वेगि पधारो, कुलदीपक वृषभान ।।४।।

दोहा—कछुक दूरि बन में गये, बरषन लाग्यो मेह।
कदम तरे ठाढ़े कहैं, किहि विधि पहुँचें गेह ॥५॥

❀ समाजी वचन ❀

राग मल्हार—

कदम तरे ठाढ़े दोऊ बतरावें।
परत फुहार पवन झकझोरत, अब कित भाजिके जावें ॥
भवन दूरि बन ठौर न दीखत, जहाँ निज बसन दुरावें।
नारायण कछु दूरि जायके, फेरि बगदि वहिं आवें ॥६॥

वार्तिक—

तब प्यारीजी ने कही बूँदन सों कहा डरपौ हो, भींजिबे कों तो बन में आये ही हैं, परन्तु काहू और सघन लता तरे चलि के झूलें ॥७॥

❀ समाजी वचन ❀

राग मल्हार—

विहरत बाग झूलन के काजे।
गावत गीत मधुर सुर दोऊ, बीच बीच मुरली धुनि बाजें।
ठुमकि चलन बोलन अवलोकन, कोटि मदन छबि निरखत लाजें ॥
नारायण हुलसत सुख बिलसत, लता भवन तरें आय बिराजें ॥८॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—झूलत हैं श्री लाड़िली, प्रीतम ओर निहार।
बोली अजी गावौ कछू, ललित ख्याल मल्हार ॥९॥

❀ लालजी गायबे लगे ❀

राग मल्हार—

आई बदरिया बरषनिहारी।
गरजि गरजि दामिनि दमकावै, ज्यों चूँदरि में झलक किनारी ॥

मधुर मधुर कोयल बन बोलैं, भवन भवन गावत ब्रजनारी।
चलत पवन शीतल नारायण, परत फुहार लगति अति प्यारी ॥१०

वार्त्तिक

प्रियाजी ने प्रसन्न ह्वै के अपने प्रीतम की बड़ाई करी ॥११॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—एक सखी बन बिरहबे, गई हुती वा ओर।
जित में झूलत दोउजन, राधा नन्दकिशोर ॥१२॥
लता ओट ते निरखि सुख, कही सखिन सों आय।
कहा कहूँ छबि आज की, मोपै कही न जाय ॥१३॥

❀ सखी वचन अपर सखी प्रति ❀

राग हिंडोरा–

आवौ री यह शोभा निहारें।
नन्दलाल वृषभानुनन्दिनी, झूलि रहे गरबैयां डारें॥
परत फुहार विपिन हरियाली, वन पक्षी मृदु वचन उचारें।
अति निरमल जल भरे सरोवर, फूले कमल भ्रमर गुंजारें॥
पवन झकोर उड़त प्रिय को पट, झट प्रीतम निज हाथ समारें।
नारायण इनकी या छबि पै, आज सखी हम सरबस वारें ॥१४॥

वार्त्तिक–

फिर सखी आपस में कहिबे लगीं देखो री! आज हमसों छिपि के झूलि रहे हैं ॥१५॥

❀ सखी वचन ❀

राग ध्रुपद—

ऐसो आनन्द सखी आज लों न देखो कबूँ,
आप ही झूलनिहार आप ही झुलावैं।

वरषत घन गरजि घोर बोलत पिक नचत मोर,
चपला चमकि चहूँ ओर दम्पति हरषावें ।।
भीजि रहे चीर बहे कुसुम रंग अंग अंग,
तापै दोउ एक संग मिलि मलार गावें ।
नारायण पीय प्यारी सावन सुख लेत सखी,
गौर श्याम बदन रती मदन को लजावें ।।१६।।

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—पुनि सजनी दम्पति निकट, जाय करी बलिहार ।
निज मन में सकुची प्रिया, ढिंग की सखी निहार ।।१७।।

❀ श्रीजी वचन सखिन प्रति ❀

राग सारङ्ग-

तुम सम को जानत चतुराई।
मोहि अकेली छाँड़ि भवन में, आप सभी वन बिरहन आई ।।
मैं आई यहाँ तुम्हें खोजिबे, इत उत हेरत डगर भुलाई ।
नारायण कछु भाग भले जो, मिले विपिन में कुँवर कन्हाई ।।१८।।

वार्त्तिक-

सखियन ने मुसिक्याय के कही ये हमसों भूल भई, फिरि सब मिलि के गायबे लगीं ।।११।।

राग कान्हड़ा-

आज बंशीवट वरषत रंग ।
यमुना तीर समीर सुहावन, बोलत विविध विहंग ।।
कीरतिकुँवरि लाल नन्दजी को, झूलि रहे इक संग ।
रूपसिन्धु के अंग अंग ते, छबि की उठत तरंग ।।

बजत बीन ताउस सरंगी, बंशी झाँझ मृदंग।
नारायण गावंति मिलि सजनी, हिय में बढ़त उमंग ॥२०॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—लाल झुलावत लली कूँ, झोटा दियो बढ़ाय।
तासों पिय पै रिस भई, भृकुटी लई चढ़ाय ॥२१॥

❀ लालजी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग सोरठ–

कौन समै रूठन को प्यारी झूलो ललित हिंडोरे।
रंग बिरंग घटा नभ छाई, बिच बिच चपला चमक सुहाई,
परत फुहार परम सुखदाई, चलत समीर झकोरे॥
विविध भाँति पक्षी बन बोले, मृगिन सहित मृग बिहरत डोलें,
जल जन्तू तिमि करत किलोलें, यही अचरज मन मोरे।
कुसुम चीर पहरें ब्रजनारी, साज समाज आज है भारी,
नारायण बलिजाउँ तिहारी, प्रीतम करत निहोरे ॥२२॥

वार्त्तिक–

पास तें सखीन ने कही हे प्यारी ! प्रीतम को कछु दोष नहीं इनको झुलायबो नहीं आवै, अब आप दोउ झूलौ और हम झुलावें गावें ॥२३॥

राग मल्हार—

सघन बन झूलें दोऊ सुकुमार।
हिय हरषत छबि निरखि परस्पर, छिन छिन बाढ़त प्यार॥
कबहुँ मुदित मन तान लेत मिलि, होत सखी बलिहार।
नारायण द्रुम बेलि सुहावनि, हरित किये शृंगार ॥२४॥

वार्त्तिक–

श्रीजी ने कही सखी ! कछु और हू गाओ, जो आज्ञा ।।२५।।

राग गौड़ मल्हार–

बादरवा गहरे आये ।
उमड़ि घुमड़ि घन गरजि गरजि के, बरषन कों उठि धाये ।।
बरन बरन के अति सुन्दर घन, नभमण्डल में छाये ।
चपला चमकि दुरति पुनि प्रगटति, कंचन अंग सुहाये ।।
नाचत मोर कोकिला बोलत, सबके मन हरषाये ।
नारायण जित तित हरियाली, मेह नेह रँग लाये ।।२६।।

वार्त्तिक–

फिर सखीन ने विनती करी, सरकार ! अब तो मेह बहुत आयो है भवन में पधारो, मारग में जा सखी ने इनकों आवत देख्यो, वाने और सखी सों कही ।।२७।।

राग रेखता ईमन को जिला—

सुन्दर अनूप जोरी, अति मन को भावती ।
देखी मैं आज मग में, कुंजन सों आवती ।। सुन्दर०।।१।।
अँग अँग देत शोभा, भूषण जड़ाऊ आली ।
नयनन में सोहै काजर, अधरन पै पान लाली ।।सुन्दर०।।२।।
प्रीतम के कांधे कर धर, प्यारी आनन्द सों ।
हँसि हँसि के करत बातैं, मुख ललित चन्दसों ।।सुन्दर०।।३।।
पग धरत हौलें हौलें, गति देख हँस लाजैं ।
नूपुर परम मनोहर, अति मधुर मधुर बाजैं ।।सुन्दर०।।४।।
या भाँति सों मगन ह्वै क्रीड़ा करत हैं दोऊ ।
नारायण रसिकजन बिन, ये रस न जाने कोऊ ।।सु०।।५।।२८।।

दोहा—लीला मोहनलाल की, सब साधन को सार ।
नारायण रुचि सों सुने, उतरे भव सों पार ।।२६।।

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत वन झूलन लीला सम्पूर्ण ।।२४।।



अथ वसन्त लीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—नारायण वृन्दाविपिन, निशिदिन रहत वसन्त ।
पिय प्यारी मिलि मुदित मन, क्रीड़ा करत अनन्त ।।१।।
वन बिहरन के कारने, लली हिये हरषाय ।
सखी पठाई लाल ढिंग, लावो संग लिवाय ।।२।।

वार्त्तिक—

आज्ञानुसार जब सखी गई, तब रसिकराज बोले सखी ! तू चल हम नेक देर में आवें ।।३।।

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

दोहा—आवेंगे कछु देर में, मोमों भयो मिलाप ।
यह सुनिके कीरतिकुमरि, बैठि रहीं चुपचाप ।।४।।

❀ समाजी वचन ❀

फूलन के गहने रचत, लालहिं लगी अबार ।
पुनि यह सुनि के लाड़िली, बैठी रिस उर धार ।।५।।
आन उपाव न बनि सक्यो, मालिन भेष बनाय ।
चले प्रिया के भवन कूं, मन हीं मन हरषाय ।।६।।

❁ समाजी वचन ❁

पद राग सारंग—

मालिन भेष बने पिय प्यारे ।
फूल शृंगार धरे डलिया में भूषण पट सों अंग सँवारे ।।
सकुच सहित मग चलत मन्दगति, पग बिछिया बाजत हैं न्यारे ।
नारायण अद्भुत शोभा सों पहुँचे भानुकुमरि के द्वारे ।।७।।

❁ सखी वचन श्रीजी प्रति ❁

राग बसन्त बहार-

मान सखी जिन मान बढ़ावै ।
नवपल्लव विकसे वन बागन, नव बहार सबके मन भावै ।।
नयो रूप नवयौवन तेरो, देखत बने कहत नहिं आवै ।
नारायण इतनो धन पाके, फिर गोरी तू न क्यों इतरावै ।।८।।

वार्त्तिक—

जब प्यारीजी न बोलीं तब फिरि सखीन ने कही ।।९।।

राग बसन्त बहार--

री तू नेक किंवार उघार देख ।
द्वार ठाढ़े प्रीतम मालिनियाँ भेख ।।

आयो तेरे काज ऋतुराज आज, फूले फूल मूल फल दल विशेष ।
नारायण कह्यो मानि लै सजनी, यामें नहीं कछु मीन मेष ।।१०।।

दोहा—सखी वचन सुनि लाड़िली, उठी कछुक मुसक्यात ।
जाय द्वार प्रीतम लखे, सखी साँवरे गात ।।११।।
लली ललासों हँसि कहति, तुम्हे न आवति लाज ।
लाज किये ते होय कब, या विधि पूरण काज ।।१२।।

वार्त्तिक—

तापीछे प्रीतम ने फूलन के गहने पहराये सखी बड़ाई करिबे लगीं ॥१३॥

* सखी वचन *

राग ध्रुपद कान्हड़ा व सिन्दूरा—

फूलन को चन्द्रकला सीस फूल फूलन कौ,
फूलन के झुमका श्रवण सुकुमारी के।
फूलन की वन्दनी विशाल नथ फूलन की,
फूलन को बिन्दा भाल राजदुलारी के॥
फूलन की चम्पाकली हार गरे फूलन के,
फूलन के गजरा ललित कर प्यारी के।
फूलन की पग में पायल नारायण,
फूले फूले भागि सदा लाड़िली हमारी के॥१४॥

* किशोरीजी को वचन लालजी प्रति *

राग वसन्त धीमाताल—

चलो लाल खेलें बसन्त मिलि श्रीयमुना के कूल।
नव निकुंज वन नई ऋतु आई नये नये फूले फूल॥
द्रुम डारिन बैठे नव पक्षी बोलत अति अनुकूल।
नारायण उत नई बहार सुख, इतमें तुम सुख मूल॥१५॥

वार्त्तिक।

फिरि श्रीकिशोरीजी ने अपने प्रीतम को नागरि भेष बढ़ाय के जब श्रीयमुनाजी के तट मनोहर बाटिका में जाय के जड़ाऊ सिंहासन पै दोउ गलबैंयाँ डार के विराजे तब गन्धर्वा सखी को आज्ञा भई, जो तुम कछू गाओ। ताही समय रति मदन मालिनी

मालो को भेष धारण कर डाली लगाय के युगल सरकार के आगे लाय धरी, तब गन्धर्वा सखी गायबे लगी ।।१६।।

ध्रुपद राग बसन्त—

नवल रंग नवल फूल, नवल शोभा यमुना कूल,
नवल सघन बेलि द्रुम प्रफुल्लित चहुँ ओर ।
ललित नई गुल्म लता, चटकि २ खिलत कली,
बिकसे तरु पात नये, नयो नयो बौर ।।
नवल लली नवल लाल, नवल सखी गावें ख्याल,
नयो माली मदन डाली, लायो कर जोर ।
नवसमीर नव सुगन्धि, नये नये नित ह्वै अनन्द,
नारायण नवबहार बीतत निशि भोर ।।१७।।

दोहा—ये लीला नित सुने ते, कृपा करें घनश्याम ।
निज चरणन की भक्ति दें, अरु वृन्दावन धाम ।।१८।।

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत वसन्त लीला सम्पूर्ण ।।२५।।



अथ होरी लीला प्रारम्भ

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग काफी-

गोरी कुंजन में आज होरी मची, तू कहा बैठी माँग संवारे ।
मेरी कही जो साँच न माने, सुनि लै डफ धुधकारें ।।
उठि सजनी चलि फाग खेलि लै, प्रीतम तोहि पुकारें ।
नारायण तब बात है तोरी, तू जीते बिन हारें ।।१।।

वार्त्तिक--

तब प्रियाजी ने एक नई सखी सों कही अरी! तू होरी खेलिबे न चलैंगी ? तब वह सखी बोली ।।२।।

होरा—

सास ननँद मेरी देखि रहीं, मैं होरी कैसे खेलूँ बीर ।
मैं अपने मनमाँहि कहूँ अब, कहा करूँ करतार ।।
रसिया नचत बजावत डफ मोहि, टेरत बारहिं बार ।
द्वारे होय रही भीर ।।
लाज भरो गारी गावत नहिं, नेकहु सकुचत छैल ।
मूठ गुलाल इतै उत फैंकत, रोकि रह्यो है गैल ।।
संग छोहरा अहीर ।
याही सों बाहिर नहिं निकसूँ, पिचकारी दे मार ।
नारायण फिरि बात छिपै कब, निरखेंगे नर नार ।।
भींजे रँग सों चीर ।।३।।

* लालजी वचन सखी प्रति *

राग सारंग को रसिया—

होरी में लाज न कर गोरी ।
हम व्रज के रसिया तुम गोरी, भली बनी यह जोरी ।।
जो हम सों सूधे नहिं खेलो, यार करेंगे बरजोरी ।
नारायण अब निकसो द्वार पै, छूटौ नहिं बनिके भोरी ।।४।।

वार्त्तिक

पुनि वा सखी सों प्रियाजी ने कही अरी ! जो तू होरी में इतनो डरैंगी तो व्रज कौ वास करि चुकी । फिरि सखिन सहित श्रीकिशोरीजी होरी खेलिबे कूँ पधारीं ।।५।।

* लालजी वचन सखान प्रति *

राग भूपाली--

यह को आवत है गजचाल, संग बहु भीर लिये शोभा विशाल ।
पिचकारी निज वसन छिपाये, झोरिन में दीखत गुलाल ॥
एरे सखा तुम चेत करो अब, ये हैं घनी व्रजबाल ।
नारायण कहुँ हाथ न ऐहौ, भैय्या तुम थोरे से ग्वाल ॥६॥

* प्रियाजी वचन लालजी प्रति *

राग सिन्दूरा-

एरे लाल फिरि होरी आज खेलन आये, कल कछू थोरे नचे हौ ।
बेशरमी तुम्हरे बट आई, मोहि तौ ऐसे जंचे हौ ॥
तिहारे गुण वरने नहिं जाई, तुम तौ ढीठ सचे हौ ।
नारायण बलिहारि तुम्हारी, लाज सों तुमहिं बचे हौ ॥७॥

वार्तिक-

फिरि तौ होरी होन लगी ॥८॥

* सखी वचन परस्पर *

राग काफी-

पिय प्यारी आज होरी खेलत यमुना तीर ।
हँसि हँसि बदन अरगजा डारत, मारत मूठ अबीर ॥
चलत कुमकुमा रँग पिचकारी, भीज रहे तन चीर ।
जनु घन दामिनि रूप धरे हैं, गोरे श्याम शरीर ॥
बजत अनेक भाँति मृदु बाजे, होय रही अति भीर ।
नारायण या सुख निरखे बिन, कौन धरै मन धीर ॥९॥

❀ श्रीजी वचन सखी प्रति ❀

सारंग रसिया—

रसिया को नारि बनावौ री ।
कटि लहँगा उर माँहि कंचुकी, चुँदरी सीस उढ़ावौ री ॥
गाल गुलाल दृगन बिच काजर, बेंदी भाल लगावौ री ।
नारायण तारी बजाय के, निकट यशोमति जावौ री ॥१०॥

वार्त्तिक-

लालजी ने कही हे प्यारी ! नागरी तौ मोहि बनाओगी, परन्तु जो मेरी मैया ने मोकूँ पहिचान लियो तौ फिर आप की चतुराई कहाँ रहैगो, जासों मैं अपनो शृंगार अपने हाथ सूँ करूँ, कि फिर कोई न पहचाने, और आपकी बड़ाई होई । तब सब ने कही यही ठीक है । फिरि एक एक आभूषण अपनो सबनने इनकूँ उतारि कैं दियो, जब लालजी सघन लता कुंज के भीतर शृँगार करिबे लगे, झट दूसरी ओर सों निकसि दूर जाय के बोले, यार, तौ अपने घरकूँ चले । यह कौतुक देखि के सब सखी आपस में कहिबे लगीं—लै बीर ! व्रजभूषण तौ गाँठ के भूषण हू लै चल्यो ॥११॥

दोहा—यह लीला जो नित सुने, गावे चित के चाव ।
नारायण भवसिन्धु ते, तुरत पार ह्वै नाव ॥१२॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत होरी लीला सम्पूर्ण ॥२६॥



अथ गलीहोरी लीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—होरी खेलन के लयें, रसिया श्याम सुजान ।
फेंट अबीर गुलाल भरि, गये गली वृषभान ॥१॥

❀ श्रीजी वचन सखी प्रति ❀

होरी जंगले का जिला—

होरी खेलन के लयें नन्दलाल, मग नाचत आवत मटक मटक ।
कर डफली गति मधुर बजावत, ताल देत पग पटक पटक ।।
अंग अंग छबि कहि न जाय कछु, चढ़्यो मदन को कटक कटक ।
नारायण मन हरत है मेरो, पेच पाग के लटक लटक ।।२।।

❀ सखी वचन सखी प्रति ❀

राग काफी-

देखि सखी वृषभानुकिशोरी ।
निज प्रीतम को रूप निहारत, जा विधि चन्द चकोरी ।।
भलो फाग फेलन कों निकसी, बीच भई चितचोरी ।
नारायण अटके दृग छबि में, भूलि गई सुधि होरी ।।३।।

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

दोहा—कौन समो है ध्यान को, एरी नव ब्रजबाल ।
डारि अनोखे लाल पै, रंग अबीर गुलाल ।।४।।

❀ सखी वचन ❀

होरी—

सखी देखौ आज वृषभानु लली, होरी खेलत अति छबि पावै ।
प्रीतम के दृग मार कुमकुमा, सन्मुख ते मुसिक्यावै ।।
कबहूँ कहति गिरयो नथ मोती, अब कैसे कर पावै ।
बातन में उरझाय लाल कों, गाल गुलाल लगावै ।।
जब प्यारो पकरन कों लपकत, अधिक अबीर उड़ावै ।
धूंधरि माहिं कछू नहिं सूझत, आपहूँ चतुर बचावै ।।

गौर श्याम मुख भये एक से, शोभा कहत न आवै ।
नारायण फागुन के सुख में लोकलाज नहिं भावै ॥५॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—जब थोरो सो रहि गयो, रंग अबीर गुलाल ।
तब टेरत निज यूथ को, सुघर लाड़िलीलाल ॥६॥

होरी काफी धीमा ताल—

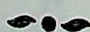
आज दोऊ मदमाते खिलारी,
नन्दनन्दन वृषभानुदुलारी ।
निज निज यूथ युगल वर टेरत,
चोप बढ़ी जीतन की भारी ॥१॥
भवन भवन ते निकसीं सजि सजि,
गोरी साँवरी रूप उजारी ।
ज्यों अति प्रबल घटा घिरि आवत,
त्यों मिलि के आईं ब्रजनारी ॥२॥
एक ओर लिये लला सखा संग,
एक ओर सब गोपकुमारी ।
होन लगी अब होरी परस्पर,
चलन लगीं इत उत पिचकारी ॥३॥
तकि तकि के दृग कुमकुम मारत,
डारि गुलाल देत रसगारी ।
छिरकत अतर चतुर नवनागर,
फूलि रही जोबन फुलवारी ॥४॥
बीन मृदंग सितार सरंगी,
तुस मुचंग झाँझ डफ न्यारी ।

मधुर मधुर सुर साज बजत गति,
हैं अति सुघर बजावनवारी ॥५॥
सैन चलाय सखी आपस में,
सखान के पकरन की विचारी।
घबराये सब ग्वाल बाल जब,
भाग चले मन धीर न धारी ॥६॥
घेरि लियो तब नन्दनन्दन को,
भामिनि भेष बनाय शृंगारी।
मुतियन माँग भरी दृग अंजन,
पद बिछिये नथ झलकाबारी ॥७॥
दै गुलचा मुख मोड़ति रोरी,
नभ मण्डल निरखल सुरनारी।
ताहि नचावत गीत गवावत,
ध्यान धरत जाको त्रिपुरारी ॥८॥
पुनि मिलि के लै गईं महरि ढिंग,
नख शिख लौं सब भाँति सँवारी।
ब्रजनारी यह मिलिबे आई,
नाते में कछु लगति तिहारी ॥९॥
जब यशुमति उठि भेंटन लागी,
ब्रजवनिता मुसिक्यावत सारी।
जानि गई तब महरि यशोदा,
नारि नहीं यह मेरो बिहारी ॥१०॥
हँसि हँसि परत देखि मुख सुत को,
करि आदर सगरी बैठारी।

बड़े भाग जो मो मन्दिर में,
सहित सखिन यह कुमरि पधारी ।।११।।
भानुलली बोली यशुमति सों,
वेगि करौ फगुआ की त्यारी ।
हारि गयो ब्रजभूषण तेरो,
देखि लेउ भई जीत हमारी ।।१२।।
आनन्द भरे वचन सुनि उनके,
मगन भई हरि को महतारी ।
पट भूषण पहिराय प्रीति सों,
गोद सबन के मेवा डारी ।।१३।।
लै आज्ञा ब्रजनारि महरि सों,
शीश नवाय के भवन सिधारी ।
नारायण धनि धनि वृन्दावन,
जहँ विहरत नित प्रीतम प्यारी ।।१४।।७।।

दोहा—सुख उपजावन दुखहरन, यह लीला ब्रजराज ।
नारायण नित सुने ते, पूरण होवें काज ।।८।।

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत गलीहोरी लीला सम्पूर्ण ।।२७।।



अथ छद्महोरी लीला प्रारम्भ

•

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—लै गागरि गोरी चली, भरिबे यमुना नीर ।
एक सखी मग में मिली, बोली सुन री बीर ।।१।।

❁ सखी वचन पनिहारी प्रति ❁

राग आसावरी--

तू कित आज चली बनठन के, मनमोहन मग खेलत होरी।
जाने कहा वाके दृग जादू, जो निरखत सोइ होत है बौरी ।।
शरद इन्दु सम वदन तिहारो, कोमल अंग ललित अति भोरी।
तोहिदेखि कब छोड़ैंगो रसिया, बैठि भवन हठ जिन करि गोरी।।
डोलत डगर लियें पिचकारी, फेंट अबीर गुलाल की झोरी।
नारायण होरी को मिस करि, मोहन लाल करत चित चोरी ।।२।।

❁ पनिहारी वचन ❁

वार्त्तिक—

अरी सखी ! मैं यमुना जल भरिबे जाऊँगी ।।३।।

❁ पुनि सखी वचन पनिहारी प्रति❁

राग झंझोटी—

आज श्याम मग धूम मचाई, धूम मचाई करत ढिठाई।
बिन रँग डारें देत नहिं निकसन, मैं तेरी सौं देखि के आई ।।
तू कहुँ भूलि के मति उत जैयो, जाने कहा वह करै लँगराई।
नारायण होरी के दिनन में, अपनेहि हाथ है अपनी बड़ाई ।।४।।

❁ पनिहारिन वचन सखी प्रति ❁

वार्त्तिक

अरी बीर ! तू तौ साँची कहै, पर कहा करूं मेरे घर में पानी की एक बूँदहु नांय ।।५।।

❁ पुनि सखी वचन ❁

राग कान्हड़ा—

आज हरि डगर मचाई धूम।
जो ब्रजनारि गईं जल भरिबे, बीचहि ते आईं घूम ।।

तू सुन्दरि नवयौवन भोरी, गजगति चलति है झूम ।
नारायण जो तू बचि आवै, लेउँ तेरे पग चूम ॥६॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—एक नहीं मानी कही, गई हठीली बाल ।
अचक आयके गैल में, घेरि लई गोपाल ॥७॥

❀ सखी वचन ❀

राग काफी—

मति मारौ पिचकारी, श्याम अब देउंगी मैं गारी ।
भीजेंगी लाल नई मेरी अँगिया, चूंदरि बिगरंगी न्यारी ।
देखैगो सासु रिसायगो मोपै, सँग की ऐसी हैं दारी,
हँसेंगी दै दै तारी ॥
घाट बाट सब सों अटकत हौ, लै लै रारि उधारी ।
कहाँ लौं तेरी कुचाल कहूँ मैं, एक एक ब्रजनारी,
जानति करतूति तिहारी ॥
मूठी अबीर न डारौ दृगन में, दूखेंगी आँख हमारी ।
नारायण न बहुत इतरावौ, छाँड़ौ डगर गिरधारी,
नये भये तुमही खिलारी ॥८॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—सराबोर करि रंग में, बोले यदुकुल भान ।
जा लिवायला तू उन्हें, जिनको तोहि गुमान ॥९॥

वार्त्तिक--

फिरि आप सखी भेष धारण करिके मारग में आय के ठाढ़े ह्वै रहे और उत में वा सखी ने अपनी सखीन सों जाय कही ॥१०॥

राग काफी-

सखी री या ब्रज में अब कैसे बसें, अनरीति न जाय सही ।
गैल चलत वा छैल नन्द के, बैयाँ आय गही ।।
मुख गुलाल मलि रंग भिजोई, सौ सौ बात कही ।
नारायण मग लोग हँसे सब, आज न लाज रही ।।११।।

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—समाचार सुनि सखी मुख, नवयौवन ब्रजबाल ।
होरी खेलन कों चलीं, लै लै रंग गुलाल ।।१२।।
जब इनसों भइ भेंट मग, बोले छलिया श्याम ।
यह कुचालि कर नन्दसुत, भाजि गयो निज धाम ।।१३।।

वार्तिक-

यह सुनिके सब सखी आपस में कहिबे लगीं देखो री या बिचारी के नये चीर रंगसों कैसे बिगार गयौ है ।।१४।।

❀ पुनि साँवरी वचन ❀

राग कान्हड़ा-

सब जुरि-मिलि के चलो आली ।
या बिरियाँ निज भवन होयगो, वह लंगर वनमाली ।।
हम तुम बस्यो चहें या व्रज में, कबलों सहें कुचाली ।
नारायण वा नन्दलाल कों, आज बनावो लाली ।।१५।।

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—हो हो होरी कहत मग, सहित साँवरी नार ।
जाकर घेरचो सबन ने, नन्दराय को द्वार ।।१६।।

होरी राग काफी—

होरी हो ब्रजराज दुलारे ।।
अब क्यों जाय छिपे जननी ढिग, रे द्वै बापन वारे ।
कै तौ निकसि के होरी खेलौ, कै मुख सों कहौ हारे,
जोर कर आगे हमारे ।।
बहुत दिनन सों तुम मन मोहन, फागहि फाग पुकारे ।
आज देखियो सैल फाग की, पिचकारिन के फुहारे,
चलैं जब कुमकुमा न्यारे ।।
निपट अनीति उठाई तुमने, रोकत गैल गिरारे ।
नारायण सब खबरि परैगी, नेक तो आय के द्वारे,
सूरति अपनी तू दिखारे ।।१७।।

❀ यशोदा वचन सखी प्रति ❀

दोहा—अबलों घर आयो नहीं, मेरो मोहनलाल ।
इत उत खेलत होयगो, संग साथ लै ग्वाल ।।१८।।

❀ सखी वचन साँवरी प्रति ❀

फिर आवेंगो हे सखी, होरी खेलन काज ।
बदलौ लैंगा आपनो, छैल छली सों आज ।।१९।।

❀ साँवरी वचन ❀

राग काफी—

यासों बिन होरी खेलें न जाऊंगी सखी,
मेरी चूंदरि की करी कैसी कुगति ।
जौलों मैं अपनों न बदलो चुकाऊं,
तौलों कबूं अन जल नहिं पाऊँ,

ऐसो छैल कूँ नाच नचाऊँ,
देखै तमासो सगरो जगत ।।
मटकि मटकि नट कटि लचकावै,
कबहुँ दृगन के भाव बतावै,
ताहू पै अति मृदु मुसिक्यावैं,
याही भाँति सब ही कूँ ठगत ।
जो इतसों इतमें उगैं भानूँ,
तउ याकी पगिया रंग सानूँ,
नारायण अब मैं क्यों मानूँ,
मेरो कछू यह बाप लगत ।।२०।।

❁ सखी वचन ❁

दोहा—चलि बैठो मग रोकिकैं, आवत होइगौ लाल ।
सखा सहित पुनि घेरि के, डारौ रंग गुलाल ।।२१।।

वार्त्तिक

साँवरी बोली यह बात मैंने मानी, फिरि गैल में आय के सखीन सों कहिबे लगी, अरी तिहारे पास रंग गुलाल तौ थोरो सो दीखै जो कदापि वाके संग अधिक भीर भई तब कैसी करौगी ? तब सखीन ने कही जैसे तू कहैगी ।।२२।।

❁ साँवरी वचन ❁

दोहा—तुम निज निज दृग मूँदिके, बैठो सब ब्रजबाल ।
तनक देर में होयगो, दूनों रंग गुलाल ।।२३।।

❁ सखी वचन परस्पर ❁

राग सोरठ–

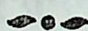
हँसीं सकल ब्रजबाल, अब यह दृग मुँदवायके ।
रंग अबीर गुलाल, लाबैगी कहँ अन्त सों ।।२४।।

दोहा—या विधि निज मन समझि के, मूँदे नैन विशाल।
तुरत श्याम ने सबन पै, डारयो रंग गुलाल ॥२५॥

❀ समाजी वचन ❀

होरी हो भाभी कहत, हँसे लाल गोपाल।
देखि कपट अचरज भईं, नवगोरी ब्रजबाल ॥२६॥
यह लीला ब्रजचन्द की, रसिकजनन के प्रान।
नारायण याके सुने, सदा होय कल्यान ॥२७॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत छद्महोरी लीला सम्पूर्ण ॥२८॥



अथ प्रेमपरीक्षा लीला प्रारम्भ

वार्तिक—

प्रात समय श्रीलाड़िलीजू सहज सुभाव निज भवन द्वार पै आय के ठाड़ी भईं, तब एक खञ्जन कों देखि के वाके नेत्रन को बड़ाई करिबे लगीं। पास तें सखी बोली हे प्यारी! याके नेत्र की चपलता तो ब्रजचन्द के नेत्रन की छटा हू नायं ॥१॥

राग कान्हड़ा—

ब्रजचन्द के ऐसे नैन।
अति छबि भरे नाग के छौना, तुरत डसें करि सैन।
इन सम सावरि मन्त्र न होई, जादू जन्त्र तन्त्र ना कोई,
एक दृष्टि में मन हर लेवें, करि देवें बेचैन॥
चितवनि में घायल करि डारें, इन पै कोटि बाण लै वारें,
अति पैने तिरछे हिय कसके, श्वास न देवें लैन।
चंचल चपल मनोहर कारे, खञ्जन मीन लजावनहारे,
नारायण सुन्दर मतवारे, अनियारे सुखदैन ॥२॥

वार्त्तिक-

तब श्रीजी ने बूझी अरी सखी ! साँची कहौ ? फिर सखी ने कही ॥३॥

राग मल्हार--

मनमोहन सम सुन्दर को है।
मैं अपने अनुमान कहूँ अब, उनकी पटतर और न सोहै ॥
चितवन चपल रूप उजियारो, जाकों मुख नित चन्दहु जोहै।
नारायण जो एक दृष्टि में, सुर नर नाग सकल को मोहै ॥४॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—सखी कहीं जब प्रिया सों, या विधि शोभा लाल।
तब सुनि के मोहित भई, नवल छबीली बाल ॥५॥

❀ श्रीजी वचन सखी प्रति ❀

राग जैजैवन्ती-

आज सखी प्रीतम जो पाऊँ, तौ अपने बड़ भाग मनाऊँ।
साँवरी सूरति नयन विशाला, चन्दवदन गल मुतियन माला,
रूप मनोहर चाल मराला, सुन्दरता पर बलि बलि जाऊँ ॥
जो प्यारो इन गलियन आवै, मो विरहिनि कूँ दरश दिखावै,
बैठि निकट मृदु वचन सुनावै, मैं उनकों हँसि कण्ठ लगाऊँ।
नारायण जीवन गिरधारी, कब लेंगे सुधि आय हमारी,
जब मोसों वो कहेंगे प्यारी, तब मैं फूली अंग न समाऊँ ॥६॥
दोहा—यह वृतान्त सुनि लालसों, कह्यो सखी तब जाय।
प्रीतम तो निरखे बिना, रही कुमरि मुरझाय ॥७॥

सोरठा—

सुनत सखी के बैन, हिय हरषे सुन्दर वदन।
प्रेम परीक्षा लैन, चले तुरत तिय भेष धरि ॥८॥

❀ साँवरी वचन प्रियाजी प्रति ❀

राग जैजैवन्ती-

आज अकेली भवन द्वार पै, कौन काज ठाढ़ी सुकुमारी।
कै काहू की बाट निहारत, कै कितहूँ चलिबे की त्यारी॥
मुख उदास कछु देखि तिहारो, मोहि उपजी चिंता अति भारी।
नारायण अब नेक बतावो मैं तिहारी जाऊँ बलिहारी॥६॥

❀ प्रियाजी वचन ❀

वार्त्तिक-

हे सखी! जबसों मैंने श्रीलालजी की शोभा सुनी है तबसों बिना देखे कल नहीं परै। साँवरी बोली हे प्यारी! वह तिहारी कहा बरोबरी करैंगो, गुणन में मंगता और चोर, रंग में कारो। तब आप रिस ह्वै के बोलीं अरी! तू मुँह सम्हार के बोल, मैं उनके एक एक अंग की शोभा सुन के चकित हूँ॥१०॥

दोहा—मैं उनकी पटतर कहाँ, वह तो शोभाधाम।
अंग अंग लखि लाल को, लाजत कोटिक काम॥११॥

❀ समाजी वचन ❀

मगन भये श्रीलालजी, लखि प्यारी को नेह।
पुरुष बचन बोले प्रकट, भूलि गई सुधि देह॥१२॥

❀ लालजी वचन प्रियाजी प्रति ❀

सोरठा-

बिधना चतुर सुजान, रचि तो वदन अनूप अति।
बचो कछुक सामान, तासों मोतन निर्मयो॥१३॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—जानि गई तब लाड़िली, है यह नन्दकुमार ।
सहित सखी हँसिबे लगी, प्रीतम भेष निहार ॥१४॥

❀ प्रियाजी वचन ❀

राग जैजैवन्ती--

आवौ सखी मिलि मंगल गावौ, मेरे पधारे कुँवर कन्हाई ।
मोसम आज कौन बड़भागिनि, घर बैठे ऐसी निधि पाई ॥
सुन्दर बदन मदन मनमोहन, मधुर मधुर बोलत सुखदाई ।
नारायण इनके दरशन सों, मुरझी बेलि हरी ह्वै आई ॥१५॥

वार्त्तिक--

ता पीछे श्रीलालजी ने जब नागरी भेष बढ़ाय के निज स्वरूप प्रगट कियो, वाही समय मधुमंगल सखाहू ढूँढतौ आय गयो ॥१६॥

❀ मधुमंगल वचन ❀

राग सारंग—

लाल तोहि जननी हेर रही ।
चन्दपौर पै नाम तिहारो, लै लै टेर रही ॥
जेंवन काज बुलावत तुमकों, साँची बात यही ।
नारायण या विधि मधुमंगल, हरिसों आय कही ॥१७॥

वार्त्तिक—

तब प्रियाजी ने कही हे प्यारे ! अब मैं बिना जिमाये, आपको कैसे जायबे देऊँगी ? याते सखा कों बिदा करो, अरु आप हमारे संग विराज के आरोगो ॥१८॥

राग सारंग-

जेंवत दोउ मिलि रूपनिधान ।
षटरस भोजन रुचिर बनाये, ललिता परम सुजान ।।
हँसि हँसि बूझत प्रिया सों प्रीतम, सुनो भानुकुल भान ।
या ब्यंजन को नाम कहा है, कीजै आप बखान ।।
कबहुँ ग्रास मुख देत परस्पर, करत मधुर मुसिक्यान ।
नारायण छबि निरखति सजनी, भाग्य बड़े निज मान ।।१६।।

राग सारंग-

अचवन करि बैठे दोउ चन्द ।
पान चबावत मृदु मुसिक्यावत, गौर श्याम सुखकन्द ।।
ललिता ललितहि सेज बिछाई, हिय में परम अनन्द ।
नारायण मन भ्रमर लुभानो चरणकमल मकरन्द ।।२०।।

❀ सखी वचन श्रीजी प्रति ❀

राग मल्हार –

प्यारी नित ऐसे ही तुमें निहारूं ।
तृण तोरूं या चन्द बदन पै, राई नोन उतारूं ।।
निजकर करूं शृंगार तिहारो, मुख पै भ्रमर बिडारूं ।
नारायण जब तुम कछु गावो, मैं ढिग साज सँवारूं ।।२१।।

बार्त्तिक-

श्रीलालजी ने कही हे प्राणप्यारी ! आपके गायबे की प्रशंसा तौ बहुत सुनी है, परन्तु निज श्रवणन सों कभी गानों नहीं सुन्यो, तब श्रीप्रिया प्रीतम की रुचि जानके प्रसन्न ह्वै के गायबे लगीं ।।२२।।

राग कान्हड़ा झपताला—

आज व्रजराज की देख शोभा नई,
गई तन भूलि सुधि भई हूँ बावरी ।

अधर रंग पान मुसिक्यान जादू भरी,
ताहू पै चितहरन दृगन के भावरी ॥
कुण्डलन की हलन छलन मन मदन की,
चलत गज चाल बसिकरन के चाव री ।
निरखि के रूप नारायण हरष्यो हियो,
कौन से भागि सों लग्यो है दाँव री ॥२३॥

वार्त्तिक

श्रीलालजी ने बहुत बड़ाई करी, ता पीछे सखीन ने आरती करिके परदा छोड़ि दियो ॥२४॥

दोहा—श्रीराधा गोपाल की, लीला परम विशाल ।
नारायण गावै सुनै, परै न यम के जाल ॥२५॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत प्रेमपरीक्षा लीला सम्पूर्ण ॥२६॥



अथ रासपञ्चाध्यायी लीला प्रारम्भ

❀ समाजी वचन ❀

अरिल्ल—

शरद रैन सुख दैन, मैन मन मोहनहारी ।
नारायण चहुँ ओर, परम सुन्दर उजियारी ॥१॥
शीतल मन्द सुगन्ध चलत अति पवन त्रिविध बर ।
फूलि रह्यौ बनराय निरखि भये मुदित हिये हर ॥२॥
बंशीबट पै जाय श्यामसुन्दर मनभावन ।
बंशी में लै नाम लगे ब्रजबाम बुलावन ॥३॥१॥

राग मल्हार—

बंशी श्रवन सुनि गोपकुमारी ।
अति आतुर ह्वै चलति श्याम पै,
तन मन की सब सुरति बिसारी ।।
गल को हार पहरि निज कटि में,
कटि की किंकिनी गल में डारी ।
पग पायल लै धारत कर में,
कर की पहुँचिया पगन मँझारी ।।
कान बुलाक कपोल पै बेंदी,
नाक में पहिरी कान की बारी ।
एक नैन अंजन बिन सोहैं,
एक नयन में काजर धारी ।।
कोउ भोजन पति परसत दौरी,
कोउ जेंवत करग्रास सिधारी ।
नारायण जो जैसे हुती घर,
तैसे ही उठि विपिन पधारी ।।२।।

❀ विरहिनी वचन ❀

कुण्डलिया—

ज्यों भादों सरिता उमड़ि, चलति सिन्धु कों धाय ।
त्यों गोरी हरि के निकट, तुरतहि पहुँचीं जाय ।।
तुरतहि पहुँचीं जाय तिन्हें हरि लखि हरषाने ।
प्रेम परीक्षा लैन श्याम यों वचन बखाने ।।
तजि निज पति ऐसे समय, तुम आईं या विपिन क्यों ।
नारायण सुधि तन नहीं, निपट बावरी फिरत ज्यों ।।३।।

❀ लालजी वचन ❀

राग दरबारी कान्हड़ा—

या बिरियाँ तुम यहाँ क्यों आईं ।
अर्द्ध रैन अति सघन विपिन में, डोलत हैं वन मृग समुदाई ॥
कै ब्रज प्रबल भूप चढ़ि आयो, कै तुमसों घर भई लराई ।
कै कहुँ त्याग दईं पतियन ने, कै बन बिहरन को उठि धाईं ॥
जो तुम कहौ तुम्हारे दरशन, येहु हमें नहिं बात सुहाई ।
नारायण निज निज गृह जावो, याही में कुलधर्म बड़ाई ॥४॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—निठुर वचन सुनि श्याम के, ह्वै ब्रजबाल निरास ।
पग नखसों धरती लिखत, लै लै ठण्ढे श्वास ॥५॥

❀ गोपिका वचन लालजी प्रति ❀

छप्पय-

तब बोली इक चतुर, सुनो तुम नन्ददुलारे ।
श्रवण करत यह वचन, कढ़त हैं प्राण हमारे ॥
कढत हमारे प्राण, दया करि इनको राखौ ।
ऐसे वचन कठोर, लाल मति हम सों भाखौ ॥
अति ब्याकुल घर बार तजि, हम आईं या बेर तब ।
नारायण तुम नाम लै, वंशी में दई टेर जब ॥६॥

❀ गोपिका वचन ❀

राग परज—

ऐसी न चहिये तुमें चितचोर ।
नेक समझि के बात कहो तुम, नागर नन्दकिशोर ॥

प्रथम बुलाय लईं हम बन में, करि मुरली की घोर ।
अब हमसों कहौ जाओ भवन में, प्रीतम निपट कठोर ।।
तात मात पति भ्रात जगत में, जहँ लग नाते ओर ।
अब उनसों कहा काज हमारो, हम आईं तृण तोर ।।
कोटि भाँति सों समझावो तुम, जितौ तुम्हारौ जोर ।
नारायण अब तुम्हें त्यागि पग, परत न घर की ओर ।।७।।

❀ लालजी वचन ❀

राग बिहाग—

अब तुम मानो बात हमारी ।
घर में जाय करो पतिसेवा, परखत ह्वै हैं बाट तिहारी ।।
सोइ पतिव्रत वेदविहित है, सुनि लीजै नवगोपकुमारी ।
नारायण अपने भर्ता बिन, सकल जगत कों जाने नारी ।।८।।

❀ गोपिका वचन ❀

राग देश—

प्रीतम अब यह प्राण बचावौ ।
हम दासिन कों बेर बेरजिन, वचन कठोर सुनावौ ।।
हमैं निराश न करो प्राणपति, हँसिकर कण्ठ लगावौ ।
नारायण कर कमल फेरि उर, मनभव ताप मिटावौ ।।९।।

❀ लालजी वचन ❀

दोहा—हम तुमसों हित की कहैं, सुनो सकल ब्रजबाम ।
अब इतनो हठ जिन करो, जावो अपने धाम ।।१०।।

❀ गोपिका वचन ❀

प्राणनाथ या जगत में, सो अभागिनी नार ।
तुम्हें त्यागि पति चहै जो, सुख कुटुम्ब परिवार ।।११।।

राग जङ्गला–

प्रीतम जाओ जाओ मति भाखो ।
यह जो नेम धर्म को पोथी, बांधि निकट धरि राखो ।।
कहो काहु सों अमी त्यागि के, तुम अरिण्ड फल चाखो ।
नारायण वह कब मानत है, लोभ दिखावो लाखो ।।१२।।

❀ लालजी वचन ❀

वार्त्तिक–

हे गोपियो ! या समय हमारे पास तिहारो आयबे को कछू प्रयोजन नहीं ।।१३।।

❀ गोपिका वचन ❀

राग देश सोरठा–

प्रीतम ऐसे निठुर जिन बोलौ ।
श्रवण कराय के वचन सुधासम, अब कहा विषरस घोलौ ।।
तजि परिवार शरण लई तुमरी, नेक तौ मन में तोलौ ।
नारायण तजि प्रीति डगर कूँ, क्यों अनीति मग डोलौ ।।१४।।

❀ लालजी वचन ❀

राग मल्हार–

जो तिय अपनो धर्म नशावत ।
ताहि न कोऊ भलौ कहै जग में,
उभय लोक में अपयश पावत ।।
नहिं शुभ गति न मिलै सुख सम्पति,
योंहीं वृथा वह जनम गँवावत ।
नारायण ऐसी मनमुखिया,
निज कुल माहिं कलङ्क लगावत ।।१५।।

❀ गोपिका वचन ❀

राग शहानो-

वेद विरुद्ध कहा हम कीनों ।
जा मन सों कीजं पतिसेवा, सो मन तो तुमने हरि लीनो ॥
जो तुम फल सब नेम धर्म के, तुमरे तिन चरणन चित दीनों ।
नारायण जो सार निगम करि, सो हमने तुमहीं कों चीनों ॥१६॥

❀ लालजी वचन ❀

राग जैजैवन्ती—

नारी के निज पति ही देवा ।
मूरख बृद्ध रंक अति रोगी, ताहू की कीजं रुचि सेवा ॥
सुपनेहु परपुरुष न ध्यावै, मन में धर्म विचारै ।
तनक विषै रस भोग कारनै, परमारथ न बिगारै ॥
तासों तुम अपने गृह जावो, करो जो वेद बखानें ।
नारायण नहिं झूंठ कहैं हम, धर्म भलीविधि जानें ॥१७॥

❀ गोपिका वचन ❀

राग जैजैवन्ती—

हम बन आय के धर्म कमायो ।
वे पति तो झूंठे या जग में, साँचो पति तुमहीं कूं पायो ॥
प्राण जायँ पै भवन न जैहैं, यह जिय माहिं समायो ।
नारायण ऐसो को मूरख, मणि कों पाय पुनि चहत गिरायो ॥१८॥

❀ सखी वचन सखी प्रति ❀

दोहा—देखि सखी निर्दईपन, अजहुँ तजत नहिं श्याम ।
पहले हमें बुलाय के, अब कहें जावो धाम ॥१९॥

❀ सखी वचन ❀

सुनो लाल ऐसे वचन, फिर जिन करो बखान ।
नतु सगरी ब्रजगोपिका, अबहि तजैंगी प्रान ॥२०॥

❀ समाजी वचन ❀

जब जानी निज हिये में, अति व्याकुल ब्रजबाम ।
हँसि बोले तब प्रेमवश, परम कौतुकी श्याम ॥२१॥

❀ लालजी वचन ❀

राग मलहार--

यह बात बड़े अचरज की भई ।
हम तौ सहज सुभाव कही हँसि, तुम साँची जिय मान लई ॥
आओ गोपियो रास करें अब, शरद रैन अति मोदमई ।
नारायण तातत्थेई कहि लैन लगे गति श्याम नई ॥२२॥

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—सुनत वचन अति हरष मन, निरतत मिलि ब्रजबाल ।
उभय उभय नवगोपिका, बीच बीच नन्दलाल ॥२३॥

राग नाईकी कान्हड़ा--

आज रचो रस रास बिहारी ।
जैसोई वृन्दाविपिन सुहावन, तैसहि शरद रैन उजियारी ॥
यमुना तीर पुलिन की शोभा, फूलि रही चहुँदिशि फुलवारी ।
चलत पवन मन मोद बढ़ावन, शीतल मन्द सुगन्धित प्यारी ॥
निरतत लाल सहित ब्रजबाला, चपल चतुर गति लै लै न्यारी ।
बजत अनेक भाँति मृदु बाजे, परम प्रवीन बजावनवारी ॥
कोऊ सखी सुर दुगुन अलापत, करत बड़ाई लाल गिरधारी ॥
नाचत सुमन झरत हैं शीस तें, मुख श्रमबिन्दु देत छबि न्यारी ॥

कबहूँ श्याम बिलग ह्वै नाचत, ताल देत मिलि गोपकुमारी ।
नारायण नभ ते सुर निरखत, बरषत फूल सहित निज नारी ॥२४॥

राग भैरों—

वंशीवट यमुना तट निरतत बनवारी ॥
अति सुगन्ध मन्द मन्द पवन चलत प्यारी ।
चन्द्र वदन श्याम रसिक, मुकुटचन्द शीश लसत,
चन्द्र मुखी प्रिया शरद चांद की उजारी ॥
बाजे बाजत विशाल, गति मति सुर अधिक ताल,
राग रंग विविध भाँति नूपुर धुनि न्यारी ।
नारायण शिव सुजान, गोपिका को भेष ठान,
निरखि निरखि नृत्य गान, भये चित्रकारी ॥२५॥

दोहा—प्रिय प्रीतम के गुण ललित, निगमागम को सार ।
नारायण गावैं सुनैं, निश्चय हो भवपार ॥२६॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत रासपञ्चाध्यायी लीला सम्पूर्ण ॥३०॥

अथ सखीअनुराग लीला प्रारम्भ

❀ सखी वचन सखी प्रति ❀

राग जोगिया-

निशि सोवत मैं अँगना में सखी, हरि आय के द्वार पै टेर दई ।
सुनि वचन मनोहर चौंक परी, दृग नींद न जाने कहाँ कूँ गई ॥
निज सास के त्रास न बोल सकी, उन अपने भवन की गैल लई ।
निधि पाय के हाथ सों जात रही, तब सों नारायण बिकल भई ॥१॥

❁ अनुरागवती वचन ❁

राग काफी—

अब वाकी चरचा जिन कर री ।
जाकी टेर सुनत भई व्याकुल, रूप देखि त्यागैंगी घर री ।।
यह हम जानि चुकीं अपने मन, गयो लाज को खेल बिखर री ।
नारायण जहँ प्रगट भयो है, मोहनि मूरति नन्दकुमर री ।।२।।

❁ अनुरागवती वचन ❁

राग काफी धीमा ताल—

या साँवरे सों मैं प्रीति लगाई ।
कुल कलङ्क ते नाहिं डरूँगी, अब तौ करूं अपने मन भाई ।।
बीच बजार पुकार कहूँ मैं, चाहे करौ तुम कोटि बुराई ।
लाज म्रजाद मिली औरन कूँ, मृदु मुसिकान मेरे बट आई ।।
बिन देखे मनमोहन को मुख, मोहि लगत त्रिभुवन दुखदाई ।
नारायण तिनकूँ सब फीको, जिन चाखो यह रूप मिठाई ।।३।।

दोहा—ताही छिन वा ठौर पै, आय गये व्रजचन्द ।
निरखि सखी के हिये में, भयो परम आनन्द ।।४।।

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत सखी अनुराग लीला सम्पूर्ण ।।३१।।



अथ साँझी लीला प्रारम्भ



❁ प्रियाजी वचन सखीन प्रति ❁

दोहा—हे ललिते चंपकलते, चलौ विपिन में आज ।
फूल बीन लावें सखी, निज साँझी के काज ।।१।।

वार्त्तिक--

सखी बोलीं जो आज्ञा—फिर वन में जाय फूल बीनबे लगीं ।।२।।

❀ समाजी वचन ❀

दोहा—ये सुधि पाय गये तहाँ, मोहन गुनन प्रवीन ।
सखिन सखिन श्रीलाड़िली, सुमन रही जहँ बीन ।।३।।

❀ लालजी वचन ❀

राग आसावरा–

फूल यहाँ को बीनति है चोरी ।
करत प्रकाश फिरत या वन में, गजगामिनि तन गोरी ।।
हिये माँहि छल बल चतुराई, देखत में अति भोरी ।
नारायण या ठौर काहु की, चलत नहीं बरजोरी ।।४।।

❀ प्रियाजी वचन लालजी प्रति ❀

राग भैरवी—

फूल हम बीनति बिपिन हमारो ।
तुम ऐसे बोलत कोउ जाने, मानो बन है तिहारो ।।
हट वृथा क्यों रारि बढ़ावो सूधे भवन पधारो ।
नारायण मन में लडुवन सों, भूँख न होय सहारो ।।५।।

❀ लालजी वचन प्रियाजी प्रति ❀

दोहा—सुनत लली मुख के वचन, बिहँसे नन्दकुमार ।
बोले अजो हम बीन दें, फूल अनेक प्रकार ।।६।।

वार्त्तिक—

प्रियाजी बोलीं बस तुम्हारी कृपा ही चहिये, ऐसे कह हँसती खेलती भईं निज भवन में आय के साँझी की रचना

में तत्पर भईं । उत में श्रीलालजी कों और जहाँ तहाँ सखीन को साँझी निरखबे को न्योतो पठवायो । जब श्रीलालजी ने आय के साँझी निहारी, तब अति प्रसन्न ह्वै के प्रियाजी की चतुराई की बड़ाई करबे लगे ॥७॥

❁ सखी वचन ❁

राग ईमन कल्याण—

आज प्रियाजू ने साँझी बनाई ।
निज कर कमल रची यह रचना, को बरने इनकी सुघराई ॥
कहुँ गिरिराज कहूँ बरसानो, कहुँ वृन्दावन छबि अधिकाई ।
कहुँ यमुना तट घाट मनोहर, विविध कुँजवर गाखे(?) सुहाई ॥
कहुँ द्रुमलता कहुँ फुलवारी, बरन बरन खग मृग समुदाई ।
नारायण लखि प्रीतम प्यारो, पुनि पुनि हरषत करत बड़ाई ॥८॥

दोहा—विविध कथा गोपाल की, नारायण सुखरास ।
गति पावें सुन भक्तजन, दुष्ट करें उपहास ॥९॥

इति श्रीनारायण स्वामीजी कृत साँझी लीला सम्पूर्ण ॥३२॥



अथ फुटकर पद प्रारम्भ

राग धनाश्री-

रथ पर राजत दोउ महाराज ।
मणिमय कलश पताका सोहैं, सुन्दर चारों बाज ॥
अद्भुत छत परदा पिछवाई, रतनन को सब साज ।
नारायण सजनी ढिग गावत, धन्य दिवस है आज ॥१॥

राग कालिंगड़ा-

मोहन दीजै हमारौ चीर ।
हम कबसों काँपति हैं ठाढ़ी, सीतल यमुना नीर ॥

बिना वसन अति लाज लगति है, किहि विधि निकसें तीर।
नारायण तुम कैसे पुरुष हो, निरखत नगिन शरीर ॥२॥

फुटकर दोहा--

नारायण संझा समय, चढ़ी अटा ब्रजनार।
कृष्णपाख शशि को उदय, यह अचरज करतार ॥३॥

होरी कूट-

एरी उठि देखि सखी होरी मच रही तेरे द्वार।
चन्द्रमा मृग गज चाल कंबल
दधिसुत वाहन दृग, करि गामिनि, सरसुत सों मुखसार ॥
वलदेव श्रीकृष्ण भीर गुरु
वीर अनुज टेरत हैं तोकों, डर लियें साथ अपार।
लाल
गुरु को आदि लाल पद पूरण, ले प्रीतम मुख डार ॥
शेर मांस ग्यारह
हरि भोजन नवदोय पै आवै, ताहुम दिन गये चार।
सोना श्याम
नारायण हाटक तजि सजनी, भ्रमर को रंग निहार ॥४॥

होरी कूट-

काल होरी गये हार श्याम आज फिर तुम आये।
अक्रूर कंस देवकी वसुदेव नन्द यशोदा
सुफलकसुत स्वामी भगिनी पति, मीत की नारि पठाये ॥
मेघनाद मन्दोदरी रावण राम रंगजी
मेघशब्द जननी पति रिपु कुलदेव नाम संग लाये।
नृसिंह हिरण्य होरी
नरकेहरि रिपु की भगिनी को नाम लेत न लजाये ॥

कमल सूर्य राहु केतु चन्द्रमा
सरसुत मित्र शत्रु भ्राता अरि, सो मुख पान चबाये ।
गौ कुल
नारायण सुरभी कुल अस्थल, क्यों अब चहत हँसाये ।।५।।

राग जोगिया--

आज सखी सुपनों मैं देख्यो रैन ।
जबही सों जिय भई अतिब्याकुल, पल छिन परत न चैन ।।
श्यामवरण इक पुरुषमनोहर, नवयौवन छबि ऐन ।
शीश मुकुट कुण्डल गलमाला, सुन्दर बाँकेनैन ।।
मैं उनसों कछु कहन न पाई, सुने न उनके बैन ।
नारायण तब आँखि उघर गईं, ना कछु लैन न दैन ।।६।।

राग सारङ्ग-

करौ तुम गोवरधन की पूजा ।
मूंग भात को परवत रचि के बीच लगावौ गूंजा ।।
बोले लाल नन्द सों बाबा, प्रथम पूजिबे तू जा ।
नारायण ऐसो त्रिभुवन में, देव नहीं है दूजा ।।७।।

गजल-

जहाँ ब्रजराज कल पाये, चलौ सखी आज वा बन में ।
बिना वा रूप के देखे, बिरह की दों लगी तन में ।।
न कल परती है बेकल को, न जी लगता है बिन जानी ।
भई फिरती हूँ जोगन सी, सरे बाजार गलियन में ।।
करूं कुरबान जी उस पर, जनम भर गुन न भूलूँगी ।
मेरा महबूब जो लाके, बिठावे मेरे आँगन में ।।
नहीं कछु गरज दुनिया से, न मतलब लाज सों मेरा ।
जो चाहो सो कहो कोई, बसा अब तौ वही मन में ।।
तेरी यह बात साँची है, नहीं शक इसमें नारायण ।
जो सूरत का है मस्ताना, वह परचे कैसे बातन में ।।८।।

गजल—

किया बिसमिल मुझे उसकी, अदा के हाथ क्या आया ।
तड़फता छोड़कर तेगे, कजा के हाथ क्या आया ॥
दिखाकर टुक जमाल अपना, मुझे तो कर दिया शैदा ।
भला पूछे कोई उससे, महिल के हाथ क्या आया ॥
मेरे इस गुँचये दिल को, कभी उसने न आ खोला ।
गई बालाईवाला उस, सबा के हाथ क्या आया ॥
लगाना खूब दिल चाहा, था मैंने उसके पाऊ से ।
बले इस पेशकदमी से, हिना के हाथ क्या आया ॥
फिरा शहरों बियाबाँ, तालिबे दीदार नारायण ।
बिठाया उसको परदे में, हया के हाथ क्या आया ॥९॥

राग सारङ्ग—

फूलन के बँगले में राजैं पिया प्यारी हो ।
फूलन के भूषण बिचित्र सोहैं अंग अंग,
फूलन के वसन वदन छबि न्यारी हो ॥
फूल से मुखारविन्द वचन फूलन सम,
फूलि सखी तन मन शोभा लखि भारी हो ॥
तैसोही समाज साज आज नारायण,
मानों कुँजभवन में फूली फुलवारी हो ॥१०॥

राग शहानो—

करत आरती नवव्रजनारी ।
अगर कपूर सुगन्धित बूका, विविध भाँति की सौंज सँवारी ॥
घण्टा झालर शख नृसिहा, बिजँघण्ट धुनि परम सुखारी ।
बंशी बीन मृदंग तँबूरा, सहनाई बाजत है न्यारी ॥
हर्षत सखी करत नौछावन, नारायण होवै बलिहारी ॥११॥

इति श्रीवृन्दावननिवासी श्रीनारायण स्वामीजीकृत
श्रीव्रजविहार सम्पूर्ण ॥३३॥

परिशिष्ट :—

लँगड़ी लावनी—

रूपरसिक, मोहन, मनोज-मन-हरन, सकल-गुन-गरबीले ।
छैल-छबीले, चपल लोचन, चकोर चित चटकीले ।।टेक।।
रतनजटित सिर मुकुट लटक रहि, सिमट स्यामलट घुंघरारी।
बाल बिहारी कन्हैयालाल, चतुर, तेरी बलिहारी ।।
लोलक मोती कान कपोलन, झलक बनी निरमल प्यारी ।
ज्योति उज्यारी, हमैं हर बार दरस दै गिरिधारी ।।
बिज्जुछटा-सी दंतछटा मुख देखि सरद-ससि सरमीले ।
छैल-छबीले, चपल लोचन, चकोर चित चटकीले ।।
मन्द हँसन, मृदु बचन तोतलै बय किसोर भोली-भाली ।
करत चोचले, अमोलक अधर पीक रच रही लाली ।।
फूल गुलाब चिबुक सुन्दरता, रुचिर कण्ठ छबि बनमाली ।
कर सरोज से, बुन्द मेहँदी अति अमन्द है प्रतिपाली ।।
फूलछरी-सी नरम कमर करधनी-सब्द हैं सुरसीले ।
छैल छबीले, चपल लोचन चकोर चित चटकीले ।।
झँगुली झीन जरीपट कछनी, स्यामल गात सुहात भले ।
चाल निराली, चरन कोमल पंकज के पात भले ।।
पग नूपुर झनकार परम उत्तम जसुमति के तात भले ।
संग सखन के, जमुन तट गौ-बछरान चरात भले ।।
ब्रज-जुवतिन कौ प्रेम निरखकर घर-घर माखन गटकीले ।
छैल छबीले, चपल लोचन, चकोर चित चटकीले ।।

गावैं बाग-बिलास चरित हरि सरद-रैन रस-रास करैं ।
मुनिजन मनमोहैं, कृष्ण कंसादिक खल-दल नास करैं ।।
गिरिधारी महाराज सदा श्रीव्रज वृन्दावन वास करैं ।
हरि चरित्र कौं स्रवनन सुन-सुन करि अति अभिलाष करैं ।।
हाथ जोरि करि करै बीनती "नारायण" दिल दरदीले ।
छैल छबीले, चपल लोचन, चकोर चित चटकीले ।।



